मर्हूम शाह शकरलाल शिवनाथजी
पोरवालना स्मरणार्थ भेट
सवत १९९६ सन १९४०

श्री जिनेन्द्र भक्तिप्रकाश भाग बीजो



प्रकाशक,
पोरवाल ॲन्ड कपनीना
प्रोप्रायटर, (मालक)
शाह रतनचद शिवनाथजी
पोरवाल.
३५६ वेताळ पेठ, मु० पुना सिटी

भेट या किंमतथी मगावनारे टायटल पेज २ उपरनी
तथा पुठाना छेला पेज उपरनी सूचना वांचीने

❀ पुस्तक मंगावनारने सूचना. ❀

१ आ पुस्तकनी बे हजार प्रत संवत १९९२ नी सालमां छपावी. तेमांथी एक हजार पुस्तकोनुं पाका-काचा पुठानुं बायडींग कराव्युं बाकीनी एक हजार पुस्तकोना छुटा फरमा राखेला हथा.

२ बायडींग करावेली एक हजार पुस्तको नियमानुंसार भेट तथा वेचाणथी आपता खलास थवा आव्यां. तेथी एक हजार पुस्तकनां छुटा राखेला फरमामां ११ स्तवनो नवा दाखल करीने आ अरधो फरमो (पेज १६) वधारीने पाका काचा पुठानुं बायडींग करावेल छे.

३ पाका पुठानी ५०० नकलो आ पुस्तकना प्रका-शक पोरवाल एन्ड कंपनीना स्थापक मुहुम शाह शंकर-लाल शिवनाथजी पोरवालना स्मरणार्थे भेट आपवानी छे. ते बाबत पाका पुठाना पाछला पेज उपर छापेलो " विज्ञप्ति " लेख वांचीने मंगाववी.

४ पाका तथा काचा पुठानी प्रतो खास वेचाण माटे पण राखेली छे. तैना माटे काचा पुठानी दरेक नकलनी किमत चार आना अने पोष्ट

पेकिंग खर्च अटी आना मलीने साडा छ आनानी पोष्ट टीकीट मोकलनारने मोकलवामा आवशे पाका पुठानी नकल दरेकना किमत छ आना अने पोस्ट पेकिंग खर्च अडी आना मळी साडा आठ आनानी पोस्ट टीकीटो मोकलवी व्ही पी थी मगावशी नही

५ सामटी २५ अथवा तेथी वधारे नकलो लेनारने दर नकले अरधो आनो ओछो लेवामा आवशे पोष्ट पेकिंग रेल्वे पार्सल खर्च मगावनारने आपवु पडशे

६ कोइ सद्‌गृहस्थने आ पुस्तकनी वधारे नकलो भेट या प्रभावना आपवाना इरादाथी मगवावी हशे तो तेओए रुबरु मळीने या पत्र लखी खुलासो मेळववो जुवाब माटे रिप्लाय कार्ड या पोष्ट टीकीट मोकलवी

७ आ शिवाय विशेष हकीकत आ पुस्तकना मुख्य टायटल पानना पृष्ट ३ थी ६ सुधीमा छापेली सूचना वाचवाथी मालुम पडशे

संवत १९९६ श्रावण शुदी १ रविवार तारीख ४-८-४० } संग्राहक शाह शिवनाथ लुंबाजी पोरवाल, ३५६ वेताळ पेठ पुना

पुस्तक रखडतुमुकी आशातना करवी नहीं
सदुपयोग करवो अने करावबो

आ पुस्तकनी एक हजार प्रतोना छुटा राखेला फरमानुं बाईंडिंग करावती वखते परिशिष्ट तरीके अर्थो फरमो (१६ पेज) वधार्यो तेमां आवेला नवा स्तवनो ११ नी

अनुक्रमणिका

नंबर	नाम	पृष्ठ
१	श्री आदिनाथ स्तवन (आदिनाथ जिणंद भव)	५
२	श्री शांतिनाथ ,, (शांति जिनंद सुखकारा)	६
३	श्री पार्श्वनाथ ,, (प्रेम धर्मनो जगाव)	७
४	,, ,, ,, (पार्श्वप्रभुजी रे विनती)	९
५	श्री शंखेश्वर ,, (श्री शंखेश्वरस्वामी)	१०
६	श्री महावीर स्वामीनुं (महावीरजीरे सुणजो	११
७	,, ,, (अहा! केवुं भाग्य जाग्यु वीर०)	१२
८	,, ,, (आवो आवो हो वीर स्वामी)	१३
९	,, ,, (माता त्रिशलाना नंद, वीर०)	१३
१०	श्री सिद्धाचलजीनुं ,, (तमे वहेला सिद्धा०)	१४
११	श्री दीवाळी पर्वनुं ,, (जयोजगस्वामी वीर०	१५

आ प्रमाणे ११ स्तवनो आवेला छे.

(परिशिष्ट) स्तवनोनो वधारो

॥ श्री आदिनाथ जिन स्तवन ॥

(मेरे मौला बुलालो मदीने मुझे –ए चाल)

॥ आदिनाथ जिणंद भवपार करो, मारा जन्म मरणना दुःख हरो ॥ आदि० (अचली) तु प्रभु शिवधर पाम्यो न, हुं आशिव घरमा रमु ॥ तु अनंत सुखमा रम छे, हुं भव दुःखमा भमु ॥ मारा दुःखी दशानो विचार करो ॥ आदि० ॥ १ ॥ आदि राजा आदि साधु, आदि तु भिक्षाचरु ॥ आदि तीर्थनाथ तुही, तुही भव रक्षा करु ॥ मारा मन मंदिरमा नित्य फरो ॥ आदि० ॥ २ ॥ मातने केवल समर्पी, भक्ति लाहो तु वर्यो ॥ मात पण सुत वधू जोता, मुक्ति निलय दिल धर्यो ॥ प्रभु ए तो अपूर्व सनय खरो ॥ आदि० ॥ ३ ॥

उना नगगरमां आज पामी, दर्श मारुं दिल ठर्युं ॥ मूर्ति प्रभुनी शांत निरखी, शमरसे जीगर भर्युं ॥ मारी आत्म दशानो विकाश करो ॥ आदि० ॥ ४ ॥ आत्मकमले जेहना, श्री जिनवरो वसता रहे ॥ लब्धिना भंडार ते नर, शिवपूर जल्दी लहे ॥ मारा नाथ लब्धिनो भंडार भरो ॥ आदि० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री शांतिनाथ जिन स्तवन ॥

(राग सोहनी–ताल कवाली – राजा मेरा किथेनी गया (अथवा) ढुंढ फिरा जगसारा — ए चाल)

॥ शांति जिणंद सुखकारा सुखकारा, सूरि जन[1] कीजे सेवना (अंचली) [2]चक्री सुख वामी गुण धामी, संजमपामी [3]छद्म विरामी ॥ जिनवर पद धरनारा धरनारा ॥ सूरि० शांति०

---

१ पंडित जन, २ चक्रवर्ती, ३ घातिकर्म,

॥ १ ॥ करुणा धारी पर उपकारी, धर्म प्रचारी बहुजन तारी ॥ भवसागर तरनारा तरनारा ॥ सूरि० शांति० ॥ २ ॥ अचळ अयोगी कर्म नियोगी, अमळ अरोगी निजगुण भोगी ॥ अक्षय शिव वरनारा वरनारा ॥ सूरि० शांति० ॥३॥ सिद्धि निवासी अज अविनाशी, चिद्‌घन राशि स्वरुप विलासी ॥ अजर अमर अविकारा अविकारा ॥ सूरि० शांति० ॥ ४ ॥ मेवो भाई त्रिभुवन [1]ताई, शिवसुख दाई शांति सदाई ॥ सूरि माणक हितकारा हितकारा ॥ सूरि० ॥ शांति० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(नागर वेलीयो रोपाय-ए चाल)

॥ प्रेम धर्मनो जगाव, तारा शुद्ध चित्तमा ॥

---

[1] रक्षक

प्रभु पार्श्वजी वसाव, तारा शुद्ध चित्तोमां ॥ (अंचली) थंभण पार्श्व जिनजी प्यारा, छे राग द्वेषथी न्यारा ॥ तारा कर्मने हटाव, जाइ शिव महेलोमां ॥ प्रम० ॥ १ ॥ हुं चार गतिमां रुल्यो, जो धर्म भावना भूल्यो ॥ सुंदर भावना जगाव, तारा शुद्ध चित्तोमां ॥प्रम०॥२॥ जीव पुण्य उदय अही आव्यो, वळी मिथ्या भाव वमाव्यो, जिन-राज धर्म सुहायो, तारा शुद्ध चित्तोमां ॥ प्रम० ॥ ३ ॥ रहो नित्य नाम जिन रटता, हटशे हृदयनी जडता ॥ सुख जागशे अनुपम. तारा शुद्ध चित्तोमां ॥ प्रम० ॥ ४ ॥ निज चित्त ठाम जो आवे, लब्धि आत्म कमलमां जागे ॥ गुण गणो अति उभराशे, तारा शुद्ध चित्तोमां॥ ॥ प्रम० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(छोटी मोरी सैयारे, जाली को मेरे गुथना-एचाल)

॥ पार्श्व प्रभुजी रे, विनती मोरी मानना (अचली) अति दुःख पाया मैंने, मोह के राज में हां मोह के राजमें ॥ लाख चोराशी रे, योनि में जहां घूमना ॥ पार्श्व० ॥ १ ॥ फस रहा मैं तो, कर्मो के घेरमें हां कर्मो० ॥ चार गतिके रे, दुःखोको बडे झीलना ॥ पार्श्व०॥२॥ भटक रहा हु प्रभु, अंधेरी रेनमें हां अंधेरी०॥ ज्योति जगादो रे, टळे ज्यु मेरा रुलना ॥ ॥ पार्श्व० ॥ ३ ॥ सम्यग दर्शन, ज्ञान के राज में हां ज्ञान० चरण मीलादो रे, स्वामीजी नही भूलना ॥ पार्श्व० ॥ ४ ॥ आतम कमलमें, जिन रहो दिल में हां जिन०॥ लब्धिसूरिका रे, हटा दो जग झुलना ॥ पार्श्व० ॥५॥ (इति)

॥ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन ॥

(काली कमली वाले तुमको लाखो सलाम ए चाल,)

॥ श्री शंखेश्वर स्वामी, मुजरा लेना जी धार (अंचली) श्री शंखेश्वर पारस स्वामी, सेवक अर्ज करे शिरनामी, लीजे अर्ज सीकार ॥ ॥ मुजरा० ॥ १ ॥ यादवपति की अरति टारी, जरासंघ की जरा निवारी, कीनो पर उपकार ॥ ॥ मुजरा० ॥ २ ॥ शंखेश्वर यादवपति ध्यावे, शंखेश्वर पारस जग गावे, वार वार बलिहार ॥ मुजरा० ॥ ३ ॥ दास आस धर पासे आवे, भक्ति भावे सीस नमावे, कर्म पास दो टार ॥ ॥ मुजरा० ॥ ४ ॥ संवत ओगणीसो चोराणु, आतम लक्ष्मी देवे आणु, वल्लभ हर्ष अपार ॥ मुजरा० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

(महेनाजी रे शु मही मूल वताशु – ए चाल)

॥ महावीरजी रे, सुणजो जग विशरामी, एक अरज करु शिरनामी ॥ (अचली) तुमे अलख असंग अकामी रे, अलवेश्वर अतरजामी रे ॥ भव तारण रे, आव्या छो शिवगामी ॥ ॥ एक० ॥ १ ॥ त्रिशला माताना जाया रे, सिद्धारथ [1]नृप कुळ आया रे ॥ मन मोहन रे, त्रण भुवनना स्वामी ॥ एक० ॥ २ ॥ तुमे दुःख दोहगने चूरो रे, मन वाछित सहुना पुरो रे ॥ इम जाणी रे, आव्यो हु अवसर पामी ॥ एक० ॥ ३ ॥ चटकोशियो नाग उगार्यो रे, तुमे [2]शूलपाणी ने तार्यो रे ॥ निम तारो रे, मुनि माणक गुण धामी ॥ एक० ॥ ४ ॥ (इति),

[1] राजा, [2] ए नामनो यक्ष

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

(राग — सर फिरोशीकी तमन्ना)

॥ अहा ! केवुं भाग्य जाग्युं, वीरनां चरणो मल्या ॥ रोग शोक दारिद्र सघळां, जेहथी दुर टल्या ॥ अहा० ॥ १ ॥ फेरो फर्यो छे दुर्गतिनो, शुभ गति तरफेणमां ॥ अल्प काळे मोक्ष पामी, विचरशुं आनंदमां ॥ अहा० ॥२॥ जेमनां तपनो न महिमा, करी शके शक्रेशभी ॥ तेमने हुं स्तवुं शुं बालक, शक्तिनो ज्यां लेश नहीं ॥ अहा० ॥ ३ ॥ कामधेनु काम कुंभ, चिंतामणि तुं मल्यो ॥ आज मारे आंगणे, श्री वीर कल्पतरु फल्यो ॥ अहा० ॥ ४ ॥ लब्धिना भंडार व्हाला, वीर वीर जपतां थया ॥ गौतम श्री मोक्ष पामी, ए प्रभुनी खरी दया ॥ अहा० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर जिन स्तवन ॥

(जावो जावो मेरे साधु, रहो गुरुके संग-एचाल)

॥ आवो आवो हो वीर स्वामी, मारा अंतरमां ॥ (अचली) मान मोह माया मम-तानीं, अम अंतरमा वास ॥ जन तुम आवो त्रीशला नंदन, प्रगटे ज्ञान प्रकाश॥ आवो०॥१॥ आतम कमळ कर्म तपनु, नाथ अतिशय जोर ॥ दुर करवाने ते दुष्टोने, आप पधारो मोर ॥ ॥ आवो० ॥ २ ॥ माया आ संसार तणी बहु, घरतांरे छे केर ॥ श्याम जीवनमा आप पधारो, थाये लीला ल्हेर ॥ आवो० ॥ ३ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

(राग पार्श्व-सागर गेल्या शेषाप-एचाल)

॥ माता त्रिशलाना नंद, वीर तुम्हे पार-णीये ॥ फ्रास मिथ्यात्व कुल मद ॥ वीर

झुले० ॥ १ ॥ इंद्र इंद्राणी आवे, प्रभुने मोतीडे वधावे ॥ आनंद मंगळ गावे ॥ वीर० ॥ २ ॥ सुंदर वेनी आवे, रुडां आभूषण कंइ लावे ॥ प्रेम करी पहेरावे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ जैन राष्ट्रीय मंडळी आवे, प्रभुने पारणीये झुलावे ॥ शिव सुत सुरज गावे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

(तमे जो जो ने वायदा वीतावजो–ए चाल)

॥ तमे वहेला सिध्धाचल आवजो रे, भवि-कर्म पुराणा खपावजो ॥ तमे० ॥१॥ (अंचली) आदि जिनेश्वर जग परमेश्वर, पूजीने जीवन दीपावजो रे ॥ तमे० १ ॥ कांकरे कांकरे सिध्ध अनंता, ए स्थानमां दिलने रमावजो रे ॥ तमे० ॥ २ ॥ रायण रुडी शोभे निलुडी, प्रथम जिणंद पद ध्यावजो रे ॥ तमे० ॥ ३ ॥ दान शियळ

तप रुडा आराधी, भावना सुदर भावजो रे ॥ तमे० ॥ ४ ॥ आत्म कमलमा गिरि गुण गाता, लब्धि सूरि दिल लावजो रे ॥ तमे० ॥ ५ ॥ (इति)

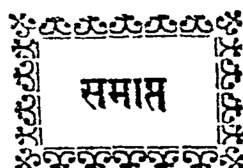
॥ श्री दीवाळी पर्वनुं स्तवन ॥

(राग भैरवी-अवतो प्रभुजीका लेलो शरण-ए चाल)

जयो जगस्वामी वीर जिनद (अचली) नगर आपापा में प्रभु आये, भविजन को उपकार करद ॥ जयो० ॥ १ ॥ निज निरवाण समय को जानी, सोला पहर प्रभुधर्म कहद ॥ जयो० ॥ २ ॥ कार्तिक वदि पदरस की राते, प्रात.काल प्रभु मुक्ति ल्हद ॥ जयो० ॥ ३ ॥ परमातम पद छिनकमें लीनो, आठ कर्म को दूर हरद ॥ जयो० ॥ ४ ॥ कल्याणक निर्वाण महोत्सव, कारण मिलकर आये

सुरींद ॥ जयो० ॥ ५ ॥ पापा नगरी नाम कहायो, अस्त भयो जिहां ज्ञान दिनंद ॥ जयो० ॥ ६ ॥ नव मल्ली नव लेच्छी राजा, शोक अतिशय दिलमें धरंद ॥ जयो० ॥ ७ ॥ भाव उद्योत गया अब जग से, द्रव्य उद्योत को दीप करंद ॥ जयो० ॥ ८ ॥ तिस कारण दीवाली होई, ध्यान धरो प्रभु वीर जिनंद ॥ जयो० ॥ ९ ॥ कार्तिक सुदि एकम दिन थावे, गौतम केवलज्ञान गहंद ॥ जयो० ॥१०॥ आतमराम परम पद पावे, वल्लभ चित्त में हर्ष अमंद ॥ जयो० ॥ ११ ॥ (इति)

शांति ! शांति !! शांति !!!



सद्गुणानुरागी मुनिराज श्री कर्पूरविजयजी महाराज

दिक्षा. संवत १९४७ वैशाख शुद्ध ६ मु० भावनगर.



स्वर्गवास. संवत १९९३ आसो वदी ८ मु० पालीताणा (सिद्धक्षेत्र).

जन्म. संवत १९२५ पौष शुद्ध ३ मु० वळा.

(पोरवाल ॲन्ड कंपनीना स्थापक)

शाह शंकरलाल शिवनाथजी पोरवाल

[illegible] सन १८४४

[illegible] १९[illegible] गुजराती [illegible] सोमवार
तारीख [illegible] जुलाई सन १९[illegible]

॥ ॐ ह्रीँ वंदे श्रीवीरमानंदम् ॥

श्रीजिनेन्द्रभक्तिप्रकाश.

भाग बीजो

चतुर्विध श्री संघने जिनमंदिरादिकमां
हर हमेश उपयोगमां लेवा निमित्ते
अनेक पुस्तको अने लखेला
पाना उपरथी विषयो चुंटी
काढी संग्रह करनार

शाह. शिवनाथ लुंबाजी पोरवाल.
वेताळ पेठ, नंबर ३५५, मु० पुना सिटी

प्रथम आवृत्ति] [illegible] [प्रत २०००
वीर संवत् २४४२ विक्रम संवत् १९७२
सन १९१६ शके १८३८
(किंमत) पाका पुठानी पांच आना (तथा)
काचा पुठानी तीन आना
(पोस्ट खर्च [illegible])

छपावी प्रसिद्ध कर्त्ता

पोरवाल एन्ड कंपनीना मालेक

शाह. शंकरलाल शिवनाथजी पोरवाल.

३५६ वेताळ पेठ, पुना सिटी नं. २



आ पुस्तकनी बे हजार प्रतोमांथी हाल पाका पुठानी ५०० अने काचा पुठानी ५०० बाइंडीग करावी बाकीनी १००० ना फरमां छुटा राखेला छे. वास्ते कोइ सद्ग्रहस्थने भेट आपवा विगेरे निमीत्ते ए वधी नकलो अथवा ओछामां ओछी २५० नकलो लेवी हशे तो तेमना नाम सहीत टायटल छपावी तेमनी इच्छा प्रमाणें बाइंडीग करावी आपवामां आवशे. ए बाबद रुबरु मळीने अथवा पत्र व्यवहारथी पुछपाछ करी खुलासो मेळववो. (प्रकाशक)



मुद्रक:—लक्ष्मण भाऊराव कोकाटे,

हनुमान प्रेस, २०० सदाशिव पेठ, पुणं नं. २.

❀ पुस्तक मगावनारने सूचना ❀

१ कोई साधु साध्वी ने तथा सार्वजनिक लायब्रेरी या पुस्तकालयमा अने जिनमदीरमा राखवा माटे आ पुस्तकनी जरूर होय तो तेना व्यवस्थापकोए पोष्ट पेकींग खर्च वास्ते त्रण आनानी पोष्ट टीकीटो मोकलवाथी एक नकल भेट तरीके मोकलवामा आवशे

२ अन्य जनोए एक नकलनी किमत काचा पुठानी त्रण आना अने पाका पुठानी पाच आना अने पोष्ट पेकींग खर्च वास्ते त्रण आना मळी काचा पुठानी छ आना अने पाका पुठानी आठ आनानी पोष्ट टीकीटो मोकली पुस्तक मगाववु पोष्टना दर वधवाथी एक नकल वी पी थी मगाववामा रजिष्टर त्रण आना अने मनिआर्डर फी बे आना मळी पाच आना खर्च वधे छे तेथी पोष्ट टीकीटो मोकली मगाववु

३ पचीस अथवा तेथी वधारे नकलो मगाववारने दरेक नकले किमतमा अरधो आनो ओछो

लेवामां आवशे. पोष्ट पेकींग विगेरे खर्च मंगवनारने जुदू आपवुं पडशे.

४ कोई पण बावतनो जुवाव मंगावनारे रीप्लाय कार्ड या पोष्ट कवरमां टीकीटो मोकली पोतानुं चोकस सरनासुं लखी मोकलवाथी जुवाव आपवामां आवशे. ते शिवाय जुवाव मळशे नही.

५ अमारो बुकसेलरनो अथवा पुस्तको प्रसिद्ध करी वेचवानो धंधो नथी अने तेमां अमारो संसारी स्वार्थ पण नथी. परमार्थ हेतुथी खास ज्ञानखातानां रकममांथी अथवा सद्‌गृहस्थोना मददथी आवां पुस्तको छपाववामा अमो जाते मेहनत करीये छीये अने तेनो लाभ खपी जीवोने मळे छे.

६ जे जे पुस्तकोनी किमत राखीये छीये ते किमतना आवेल रकममाथी बीजा पुस्तको छपावीये छीये. अथवा बीजाना छपावेला पुस्तकोनी वधु नकलो वेचाती लेई खपी जीवोने तेनो लाभ आपीये छीये.

७ कोई पण सदग्रहस्थने आ पुस्तकनी गुजराती टाइपमां आवृत्ति छपाववी होय तो खुपीथी छपाववी.

छपावत्रा पहेला अमने पुठपाछ करवी जेथी आ पुस्तकमा काइ खामी रहेली जणाशे तो लखी मोक लीशु ते प्रमाणे सुधारीने पुस्तक छपावशु

८ आ पुस्तकनो पहेलो भाग गुजराती मारवाडी वर्गने उपयोगी थयेलो जोइ बीजो भाग प्रसिद्ध करवानी केटलाकनी इच्छा थवाथी ते प्रसिद्ध कर्यो छे ते पण उपयोगी थइ पडशे तो त्रीजा भाग वास्ते पण संग्रह करी प्रारम्भ करवामा आवशे

९ आ पुस्तक शिवाय अमारी मारफते वळी बीजा केटलाक पुस्तको छापेला छे तेमाथी जे नमुना शिलक रहेला छ तेना नाम किंमत विगेरे नीचे मुजब

नंबर	नाम	किंमत रु आ	पोष्ट पे आ पा
१	चैत्यवंदन स्तुति स्तवनादी संग्रह	०–१०	२–६
२	चिदानदजीकृत पदसंग्रह भाग पहेलो	०—३	१–६
३	सुत्त मुत्तावली पाका पुठानी	१—०	४–०
४	श्री शत्रुंजय महातीर्थादि यात्रा विचार पाका पुठानी	०—६	२–६

५ अष्टप्रकारी तथा स्नात्र पूजा	०—२	१–०
६ जिनेन्द्रभक्तिप्रकाश भाग पहेलो	०—७	३–०
७ ,, ,, भाग बीजो	०—५	३–०
८ पौषधादि और उपधान विधि	भेट	२–०
९ सद्वोध संग्रह भाग पहलो	०—४	२–०

आ प्रमाणें नंबर १ थी ८ सुधी हालमां शिल्लक छे. अने नंबर ९ नुं छपावानुं काम चाले छे ते लगभग १ महिनामा तयार थशे. पुस्तको मंगावनारे किंमत अने पोष्ट पेकिंग खर्च प्रथमथीज पोष्ट टीकीट अथवा मनीआर्डरथी मोकलवा. व्ही. पी. थी मंगाववामा खर्च वधारे थाय छे.

संवत् १९९२ आसो सुदि १० रविवार तारीख २५ आक्टोबर १९३६.

१ शाह. शिवनाथ लुंबाजी—पोरवाल
२ पोरवाल एन्ड कंपनी
३५६ वेताळ पेठ, पुना—सिटी.

:: प्रस्तावना रुपे निवेदन ::

चैत्यवन्दन थोयो स्तवनादिकोना वाबतमा आज सुधी अनेक सस्थाओ तथा मडळो विगेरे तरफथी अनेक प्रकारना पुस्तको प्रसिद्ध थइ गया छे अने ते घणा भागे गुजराती टाईपोमा प्रसिद्ध थया छे शास्त्री (वाळबोध) टाईपोमा थोडाज प्रसिद्ध थया छे तेमा आ पुस्तकनो पण उमेरो थाय छे

सगीत आधि व्याधि भूलावी स्वपरने आनद आपनार तथा आरोग्यने सारी असर करनार वस्तु छे गायक सुदर रीते सहृदयथा गातो होय त्यारे आसपासनु वातावरण आनदमय करी मूके छे न्हानाथी ते म्होटा सुधी दरेकने सगीत गावु अगर साभळवु वहु प्रिय लागे छे प्राय स्थळे स्थळे माण सोनी एवी टोळीओ होय छे के ज पूजा भणावती वखते तथा भावना भावता वखते अग्रभाग ल्ये छे ते वखते तओ सगीतना पदो वोले छ जैनशाळा-ओमा छोकरा छोकरीओ पण आवा पदो शिखी प्रभु स्तुति करे छे तथा मेळावडाओ वखते अने देहे-

रासरोमा ए पदो बोले छे. आथी सुंदर राग रागिणी सारी पद रचना अने सारा भावार्थवाळां संगीतोनो एक संग्रह तेओने पूरो पाडवामां आवे तो उपयोगी थइ पडे. एम जणायाथी आ बुकनी योजना करी छे.

जुना वखतमां अनेक मुनिओ तथा कविओए ते ते वखते प्रचलित देशी (चाल–राग) मां अनेक प्रकारना स्तवनादिकोनी रचना करी छे. हालना वखतमां नाटकनी चालो तथा कव्वालीओ गजलो आदी रागो गावानो शोख वधवाथी हालना मुनिराजो तथा कविओए तेवी चालो उपर स्तवनो पदो आदिकनी रचना करी छे. अने करे छे.

आ सर्व स्तवन पदादिको अनेक संस्था तथा अनेक मंडळ तरफथी जुदा जुदा नामोथी पुस्तको छपाइ प्रसिद्ध थया छे. तेमांथी केटलाक पुस्तकोमांथी तेमज लखेला पाना उपरथी चुंटी काहाडी संग्रह करी एवुं पुस्तक शास्त्री (बाळबोध) टाइपमां छपाववा विचार थवाथी अमोए संवत १९८९ नी सालमां " श्री जिनेन्द्रभक्तिप्रकाश भाग पहेलो" आ

नामनु पुस्तक प्रसिद्ध कर्यु ते पुस्तकमा जुनी देशी अने नाटकनी चाल कवालीओ विगेरे राग रागणीमा अनेक स्तवन चुटी काढी एकदर १३६ स्तवनो अने चैत्यवदनादिक अनेक विषयोनो सग्रह प्रसिद्ध कर्यो हतो ते पुस्तकनी बे हजार नकलमा थी १००० नकल बाइडींग कराव्या विना राखी हती तेनु बाइडींग सवत १९९१ मालमा करावानी वखते तेमा परिशिष्ट तरीके ४८ पृष्ट वधारी तेमा महावीरस्वामीना पचकल्याणकना १२ अने ३ ढाळना एम बे मोटा स्तवनो तेमज बीजा छुटा स्तवनो चैत्यवन्दनो स्तुति आदिनो वधारो करी बाइडींग कराव्यु छे ते पुस्तकमा नही आवेलो सग्रह आ पुस्तकमा छपावी प्रसिद्ध कर्यो छे

स्तवनोना बाबतमा कविओए जे जे देशमा प्रचलित देशीओ हती ते ते देशना कविओए तेवा देशीओमा स्तवनादिकोनी रचना करी छे तेथी मारा जोवामा आवेला पुस्तकमाथी जे जे स्तवनो ठीक लाग्या तेवा स्तवनोनी चुटणी करी छे

आ पुस्तकमा बीज पाचम आठम आदी तिथीओ अने रोहिणी आदी पर्वोना स्तवनादिको नाखेला नथी

कारणके ए स्तवनादिको देहरासरमां तीर्थंकरोनां आगळ कहेवा ठीक लागता नथी. एथी आ पुस्तकमा दाखल कर्या नथी.

आ पुस्तकमां आवेली बावतो जे जे पुस्तकमांथी लीधी ते ते बावतोना कर्त्तानो अने प्रसिद्ध कर्त्ता संस्था या मंडळनो आभार मानवामां आवे छे.

आ पुस्तकमां जे जे विषयोनो संग्रह करवामां आवेलो छे ते अनुक्रमणिका जोवाथी मालम पडशे.

पुस्तक छपाती वखते प्रेस दोषथी कोई अक्षर कानो मात्रो विराम अनुस्वार विगेरे बराबर न उठ्या होय तथा प्रुफ तपासनारना नजर चुकथी कांइ भुल रही होय तें सज्जनोए सुधारी वांचवु अने ते भुलो तथा वळी बीजी कांइ खामी जणाय तो अमने लखी जणाववा कृपा करवी जेथी तेमनो उपकार मानी बीजी आवृत्तिना प्रसंगे तेनो सुधारो करवामां आवशे.

सं० १९९२ वीर सं० २४६२
आसो सुधी १० रविवार
ता. २५ आक्टोबर १९३६

संग्रह कर्ता.
शाह शिवनाथ लुंबाजी
पोरवाल, वेताळ पठ न. ३५६
मु० पुना सिटी.

विषयानुक्रमणिका.

चैत्यवंदनो ११ नी अनुक्रमणिका

नंबर	नाम	पृष्ट
१	ऋषभदेवनुं-अरिहंत नमो भगवंत नमो	२
२	शांतिनाथनुं-जय जय शांति जिणंद देव	४
३	नेमनाथनुं-राजकुमर श्री नेमीनाथ	४
४	पार्श्वनाथनुं-ॐ नमः पार्श्वनाथाय	६
५	महावीर स्वामीनुं-वर्द्धमान जिनवर धणी	७
६	सीमंधरजिननुं-वंदु जिनवर विहरमान	७
७	श्री सिद्धाचलनुं-श्री आदिनाथ जगनाथ	८
८	,, ,,-विमल केवल ज्ञान कमला, कलित०	९
९	,, ,, धुर समरुं श्री आदि देव, विमलाचल०	१०
१०	चोवीश गणधरनुं-प्रथम गणधर आदि०	१२
११	सांथे पंचाचय-सर नवपद देवगोवे याय	१४

स्तुति (थोय) जोडा ९ नी अनुक्रम०

नंबर.	नाम.	पृष्ठ.
१	श्री कल्लाणकंदं पाद पूर्तिनी-भावा नयाणेग	१६९
२	सीमंधर स्वामीनी-श्री सीमंधर मुजनेवाला	१६९
३	सिद्धचळजीनी-श्री शत्रुंजय मंडण, ऋषभ०	१७१
४	सिद्धचक्रजीनी-जिन शासन वंछित, पुरण०	१७२
५	ऋषभदेवनी-प्रह उठी वंदु ऋषभदेव, गुण०	१७३
६	शांतिनाथनी-श्री शांति जिणेसर समरीये	१७४
७	नेमनाथनी-गिरनीर विभुषण, निर्दूषण०	१७५
८	पार्श्वनाथनी-प्रणमुं नित्य पास चिंतामणी	१७६
९	महावीर स्वामीनी-गंधारे महावीर जिणंद	१७७

छंद, लावणी, शलोका काव्यो आदि पद्यबंद विषयो ८ नी अनुक्रमणिका.

१	शांतिनाथनो छंद-शारदमाय नमुं शिर०	१६५
२	पार्श्वनाथनी लावणी-तुं अकलंकी रूप०	१७८
३	नेमनाथजीनो शलोको सरसती मातां हुं तुम पाय लागी, देव गुरुतणी आज्ञा मागी	१२५

नंबर	नाम	पृष्ठ
४	मंगळाचरण कान्यो–देवोनेक भवाजित०	१
५	प्रभु प्रार्थना—सह भय जीतो सदाकाळ०	२
६	प्रभु दर्शन वखते बोलवानु काव्य	१६१
७	रत्नाकर पचीसीना गुजराती अनुवादना काव्यो–मंदिर छो मुक्तितणा मांगल्य०	१८०
८	,, ,, हिंदी अनुवादना काव्यो शुभ केलिके	१८६

स्तवनो (९३) नी अनुक्रमणिका

श्री ऋषभदेव जिन स्तवन १३

१ ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरोरे, ओर न० १७
२ ऋषभ जिणंदशु प्रीतडी, किम कीजे० १८
३ बाल्पणे आपण सस्नेही, रमता नव० १९
४ आदिकरण अरीहंतजी ओलगडी० २१
५ ओलगडी आदिनाथनी जो, काई कीजीये० २२
६ ऋषभ जिनंदा ऋषभ जिनंदा, तु साहिब० ३३
७ आदि जिणंदनुं मुख जोइ, दुःख खोयु रे० ३३
८ ज्ञानरयण रयणायर रे, स्वामी ऋषभ० ८६
९ आदिनाथ अनादि कालेरे, मिल गया० ८७

नंबर.	नाम.	पृष्ठ.
१०	परम पुरूप पुण्य जोगसे रे लोल	१४५
११	वालुडो निस्नेही थइ गयोरे, छोडयु०	१४७
१२	देख्या श्री नाभीके नंदा, वदन जेसा०	१४८
१३	बोल बोल आदिश्वर वाला, कांइ थारी०	१४९

श्री अजितनाथ जिन स्तवन २

१	जय जय आजित जिणंद मोहे, भवजल०	८०
२	जिणंदा तोरे चरण कमल पररे, में जाऊं०	८८

श्री चंद्रप्रभ जिन स्तवन २

१	चंद्रप्रभु मुज विनती चित्त धारो	८९
२	जगपति चंद्रप्रभु जिन देव, चंद्रावती०	९१

श्री सुवाधिनाथ जिन स्तवन १

१	में कीनो नहीं तो विन ओरशुं राग	६०

श्री वासुपूज्य जिन स्तवन १

१	वासुपूज्य प्रभु ओ हमारी, आ अरज०	१५८

श्री अनंतनाथ जिन स्तवन १

१	धार तरवारनी, सोहली दोहली, चउद०	२३

नम्बर	नाम	पृष्ठ

श्री शांतिनाथ जिन स्तवन ५

१ भवि भावे देरासर आवो जिणवर, जय० ३७
२ जय जय शांति जिणंद, जगमा जय० ६४
३ वलिहारी वलिहारी वलिहारी, जगनाथ० ६५
४ तु मेरे मनमें तु मेरे दिलमें, नाम जपु० ९२
५ जोरे माहरे शांति जिनेश्वर देव १०१

श्री कुंथुनाथ जिन स्तवन १

१ कुंथुजिन मनडु किमही न बाजे २७

श्री मल्लिनाथ जिन स्तवन १

१ मल्लिनाथ प्रभुके गुण गाउंगा ६६

श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन १

१ प्रभु मुनिसुव्रत स्वामी विनवु ६७

श्री नेमनाथ जिन स्तवन ६

१ तोरण आवी रथ पाछो फेम फेरो रे वालाजी २६
२ रेवत गिरिना वासी जिनने मोरो प्रणाम ७३

नंबर.	नाम.	पृष्ठ.
३	अंगीया नवरंगी रे पचरंगी	७६
४	आइ श्रावण मास सखीरी, पवन वाजतो०	९३
५	संजम लेवाने नेम संचर्या रे लोल	९४
६	धीमा चालो मोरा नेम गिरनार	१५९

श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन १४

१	पास संखेश्वरा सार कर सेवका. देवकां०	२६
२	प्यारो लागे मुने सारो लागे, दरिसनमां०	३७
३	पार्श्व शंखेश्वर स्वामी जिणंद्वर	३८
४	शिवसूख दाता, भवजल त्राता, पारस०	३९
५	पार्श्वनाथ सुखकारा, सुखकारा, जिनपति०	४०
६	नमन करुं पार्थनाथ भगवान, भवोदधि०	६८
७	जय जिनेश्वरा, प्रभुपार्श्व जय करा	६९
८	हा त्रिभुवन नयनानंद प्रभुवर, वामानंदन०	७०
९	वारी जाऊं रे सांवरीया तोपे वारणा रे	९५
१०	अव मोहे तारो पारसनाथ	९६
११	गोठीडा तुं बार उघाड, पण छे पूजानुं	१५२

नंबर नाम पृष्ठ
१२ केवो शोभे छे अजब आगीनो रंग १६०
१३ पार्श्व प्रभुजी, अरज करुजी,हरनिश सेवा१६१
१४ कोयल टहुक रही मधुवनमें ९६-१६१

श्री महावीर स्वामीना स्तवन १८

१ वीर विना वाणी कोण सुनावे २८
२ वीर हमणे आवे छे मारे मंदिरीये २९
३ महावीर जिनवर देव हो राज ४१
४ ॐ अर्हं महावीर जिनेश्वर, जाप जपु० ४३
५ धन्य महावीर उपकारी, त्रिशला नंदन० ४४
६ जगतमा सर्व योद्धामा, प्रभु महावीर तु० ४५
७ वीर तारुं नाम वाहालु लागे हो स्वाम ४७
८ पावापुरीमा पधारी हे नाथ, निर्वाण पाम्या ४८
९ वीर जिनेश्वर वदना, होजो वारवार ६१
१० व्हाला त्रिशलानंदन वीर जिनेश्वर तार० ६३
११ महावीर ! तमारी मनहर मुर्ति, देखी मन०७०
१२ वीरा महावीरने फुलडे वधावु आवोरे भवि०७८

नंबर.	नाम.	पृष्ठ.
१३	महावीर तोरे चरणे आके खडा हुं आवार.	९७
१४	वीर जिनेश्वर सरणुं छे हवे ताहरुं	९८
१५	नारे प्रभु नहीं मानुं, नहीं मानुं रे अवर०	१५३
१६	मारा प्रभुजी मुजने तारो रे वीर जिणंदा	१५५
१७	मुक्तिको गये श्री महावीर, सत्यका मार्ग०	१५६
१८	राय रे सिद्धारथ घेर पटराणी, नामे त्रि०	१५७

श्री सामान्य जिन स्तवन ७

१	होई आनंद बाहार रे, प्रभु बैठे मगनमें	३२
२	निरंजन सांइआंरे, साइ मेरा टुकसा मुजरा	५८
३	देखो रे जिणंदा प्यारा, मुणींदा प्यारा	५९
४	अब मोहे तारो तारो तारो, जिनवर तारणारे	७५
५	माया तोसे लागी रे जिणंदजी	८१
६	श्री जिनेश्वर देव सुणो मुज विनती	८२
७	करी खलक दीवानी खारी, प्रभु पास्या०	१६२

श्री मंधरस्वामीना स्तवन १

१	सुणो सुणो श्री मंधर स्वामी के शासन०	३०

नंबर नाम पृष्ट

श्री सिद्धाचळजीना स्तवन ७

१ सिद्धगिरीपर आदि प्रभुको, प्रात प्रणाम ५१
२ मणा आजे आनदमा नहीं रे रहो ७२
३ मन तरीया भव्य केई ते बहु गिरिवर ७१
४ चालो जल्दी बहेनी यात्रामें जासु पहेली० ८२
५ शोभा सोरठ देशनी शी रे कहुं १४०
६ जिनजी आदिश्वर अरिहंत के पालि० १४२
७ सिद्धाचलना वासी जिनने क्रोडो प्रणाम १४३

श्री समेत शिखरजीना स्तवन २

१ कंचनगढ पुजन जाना ३१
२ मधुवनमें धुम मची रग होरी, मधुवनमें ७२

श्री केशरीयाजीना स्तवन ४

१ केसरिया भगवान, बुलेया वणी ७०
२ केसरीयाने दुवत जहाज निरायो ७३
३ म्हाने केसरीयाजीरी जातरा कराय दीजोरे ७४
४ हा केशरीयो कामणगारो, मनडो मोह्यो० ८०

नंबर.	नाम.	पृष्ठ.
	॥ श्री तीर्थपती जिन स्तवन ३ ॥	
१	आयो शरणे प्रभुजी मने तारो जरी	५६
२	जिनराज तमारी मुर्ति तो अम हृदय कम०	५७
३	भर लावो कटोरा केसरका, मैं तो पुजू०	७९
	॥ श्री सिद्धचक्रजीना स्तवन १ ॥	
१	सिद्धचक्रने भजीये रे, के भवियण भाव०	१६४
	॥ म्होटा ढाळबंध स्तवन २ ॥	
१	श्री महावीर स्वामीना पांच कल्याणकनुं चार ढाळनुं—प्रेमे प्रणमुं सरसती, मागु आवि०	१०१
२	,, ,, सत्तावीश भवनुं पांच ढाळनुं— श्री शुभविजय सुगुरू नमी	११५
	॥ उपदेशक गद्य विषय लेखो ॥	
१	जिनेंद्र संबंधी साधारण ज्ञान–टायटल पेज	२१
२	जिनेंद्रभक्ति करनारने उपयोगी सूचना ,,	२४

एकंदर विषयो १२३ नी संख्या

चैत्यवंदन. ११ थोयजोडा ९ पद्यबंध विषय ८
स्तवन ९३ गद्य विषय. २ मळीन एकंदर १२३

श्री जिनेन्द्र संबंधी साधारण ज्ञान

(लेखक – प, चदुलाल)

हे जीवात्माओ ! आ जगतमा अनत जीवो छे, ते सर्वे ज्ञान, दर्शन अने चरित्र गुणवडे एक सरखा होय छे, माटे श्री जिनेन्द्र भगवान अने आपणे पण ज्ञान दर्शनादिक गुणवडे एक सरखाज छीए. तो श्री जिनेन्द्र भगवान पूज्य अने आपणे पूजक, –श्री जिनेन्द्र भगवान त्रण जगतना स्वामी अने आपणे सेवक–श्री जिनेन्द्र भगवान परमात्मा अने आपणे बाह्यात्मा –श्री जिनेन्द्र भगवान अनन्तज्ञानी अने आपणे अज्ञानी–श्री जिनेन्द्र भगवान ध्येय अने आपणे ध्याता इत्यादि घणो मोटो तफावत होवानु कारण शु हशे ? ते सबंधि विचार करता अने गुरुगमथी अनुभव मेळवता मालम पडशे के

आ आत्मा अनंत शक्तिवाळो छे, परन्तु अनादि-
काळथी कर्मना प्रभावे आ सिंह सरखो आत्मा
पण एक बकरा तुल्य निर्बळ बनी गयो छे, श्री
जिनेन्द्र भगवान पण प्रथम आपणा सरखा
सकर्मज हता परन्तु तेओए पोताना आत्मानुं
स्वरुप ओळखी सिंहनी पेठे शक्तिनो विकाश
करी अनादि काळथी लागेलां कर्मने एक क्षण
मात्रमां त्रोडी नाखी संपूर्ण आत्मस्वरुपनो वि-
काश करी परमात्मा रुप थया. अने आपणे हजी
आत्मानी शक्तिनो विकाश करी शक्या नथी,
अने आत्मशक्तिने विकाश करवानो जोइए तेवो
अथाग परिश्रम करता पण यथी, तेथी हजी
सुधी आपणे तेवाज निर्बळ कायम रह्या छीए.

शंका—जड एवां कर्मोए सिंह सरखा सचे-
तन आत्माना स्वरुपने नष्टप्राय (नहिं सरखुं)
करी दीधुं छे. तो आत्मा करतां पण कर्मज

बळवान होवुं जोइए, अने जो तेमज छे तो बळवान एवा कर्मने हठाववामां आत्मानी शक्ति शुं करी शके ? अथवा अमने कहो के आत्मा बळवान छे के कर्म बळवान छे ?

उत्तर—हे जिज्ञासु बंधुओ ! आपनो ए तर्क सत्य छे, परन्तु ज्यां सुधी आत्मा रुपी सिंहे पोतानुं पराक्रम प्रगट कर्युं नथी त्यां सुधीज कर्मनुं बळवत्तरपणुं छे. श्री सर्वज्ञो कहे छे के–"कथ्थ य जीवो बलिओ, कथ्थय कम्माति हुंति बलियाइ" (–कोइक वखत जीव बळवान छे, अने कोइक वखत कर्म बळवान छे.) माटे आत्मा बलिष्ट थतां जरुर कर्मोनो विनाश थाय छे. माटेज जिनेन्द्र भगवाने पोतानी आत्मशक्तिनो विकाश करी कर्मोनो नाश करवाथी श्री जिनेन्द्र भगवान पूज्य अने आपणे पूजक, श्री जिनेन्द्र भगवान परमात्मा अने आपणे बाह्यात्मा इत्यादि

मोटा तफावतवाळा छीए. माटे एवा जिनेन्द्र परमात्माना अवलंबनथी आपणे पण कोइने कोइ वखते आत्मशक्तिनो विकाश करी श्री जिनेन्द्र तुल्य थइ शकीए ए हेतुथी श्री जिनेन्द्र भगवाननी पूजा भक्ति करवी योग्यज छे.



श्री जिनेंद्रभक्ति करनार भाइ व्हेनोने ध्यानमां राखवा लायक सूचना.

लेखक–सद्गुणानुरागी मुनिराज श्री
कर्पूरविजयजी माहाराज साहेब

(१) अरिहंत प्रभुनो अनंत उपकार विचारीने तेमनी द्रव्य भावथी पूजा–भक्ति स्वशक्ति अनुसारे करवी, करावची अने तेने अनुमोदवी.

(२) पंच प्रकारी, अष्टप्रकारी, सत्तर प्रकारी, एकवीश प्रकारी, अष्ट शत प्रकारी

(अष्टोतरी) प्रभुस द्रव्यपूजा पैकी पोतानाथी बनी शके ते प्रभु पूजा आदरथी करवी स्व न्याया द्रव्यनी सफळता करवी ए निहित मार्ग छे.

(३) पवित्र (तीर्थ) जळ, शीतल चदन अने साचा ताजा सुगंधी पुष्पोवडे प्रभुनी अंगपूजा तथा खुशबोदार धूप, दीपक, अक्षत, नैवद्य अने सरस फळवडे अग्रपूजा करवाथी ते अष्ट प्रकारी पूजा कहेवाय छे अने ए भाव सहित करनार सुगुण भाइओ अने व्हेनो एथी अनुपम लाभ मेळवी शके छे.

(४) अरिहत प्रभुना उत्तम आलंबन योगे उक्त अष्ट प्रकारी पूजावडे अनुक्रमे स्वदोप शुद्धि, कषाय शान्ति, चित्त प्रसन्नता, सुवासना, सम्यग्ज्ञान-प्रकाश, निर्मळ श्रद्धा, मन इन्द्रियजय अने अक्षयपद-मोक्षनी प्राप्ति थइ शके छे. आवा पवित्र हेतुथीज प्रभु पूजा

करवानी छे.

(५) द्रव्यपूजा थइ रह्या बाद, एक प्रभु सन्मुखज द्रष्टि राखीने, गंभीर अने मधुर शब्द ध्वनि युक्त उदार अर्थवाळां चैत्यवंदन, स्तुति स्तवनादिक करवारुप भावपूजा करी छेवटे 'जयवीयराय' ना पाठरुपे प्रभु प्रार्थना करवी. आ बधी करणी मनवचन कायानी एकाग्रता राखीनेज करवानी छे. एम करवाथी लोकोत्तर-प्रधानपद प्राप्त थइ शके छे.

(६) प्रभुना गुणमां लीनता थवा माटे प्रमाद रहित, यथोचित योगमुद्रादिकमां आदर राखी, आपणाथी गुणाधिक (गुरु प्रमुख) ने आगळ करी, विनय बहुमान साचवी, शान्त-चित्तथी, चैत्यवंदनादि करवुं. मनमां कोइ पण प्रकारे व्यग्रता थवा देवी नहि.

(७) उपर कहेलो आशय समज्या वगर,

जेम आवे तेम, विवेक रहित, गुरु प्रमुख वडीलनी आगळ बेसी, मोटा घाटा पाडी, बीजाना ध्यानमा अतराय पडे एम, बेताल अने अशुद्ध बोलवानी टेव पडी होय ते तजवी जोइए. धीमा रागे शुद्ध बोलता शीखवु जोइए.

(८) द्रव्य–भावपुजा करीने पण पोताना आत्मानेज जगाडवानो छे. मद्य विषय, कषाय, निद्रा (आळस) अने विकथादि प्रमाद दोषथी पोतानेज मुक्त करवानो छे. तेम करवाना पवित्र लक्षथीज कल्याण थइ शके छे अन्यथा कल्याण थवु मुस्केल छे.

(९) स्व परने मात्र उल्लास प्रगटे तेटलो पूरतो समय द्रव्य पूजामा लक्ष सहितज वीतावनो योग्य छे. लक्ष वगर व्यतीत करेलो वखत नकामो जाय छे अविधि दोष तो जेम बने तेम तजवा अने विधिनो आदर करवा जरुर

रुपी थवुं सुज्ञ जनोंने उचित छे.

(१०) अंग रचना (आंगी) करतां, फुलनी काची कळी, वासी, वगडेलां, नीचे पडी गयेलां मलीन वस्त्रादिक वडे आणेलां अने जीवातथीं भरेलां फूल के तेवां फूलनी माळा प्रभु भक्तिमां नहि वापरता, उत्तम प्रकारनां शुद्ध फूल तेमज तेवांज फूलनी माळा वपराय; ते पण सोयवती घोंच्या वगरज काचा सूत्रवती ढीली गांठ दइनेज तैयार करेली होय तेवी जयणाथी गुंथेली फुलनी माळा प्रभुना कंठे स्थापी शकाय. सोयवती घोंचेलां फूलना हार प्रभु उपर चढाववानो रीवाज आजकाल अणसमजथी वधी गयेलो दीसे छे ते बीलकुल पसंद करवा जेवो नथी. आपणा करतां वधारे सुकुमाल एवा पुष्पना जीवोने एथी केटली बधी कीलामना थती हशे ? तेनो

ख्याल करवामा आवशे तो ए रोगाज सहेजे दूर थइ शकशे. पोताना प्राणनी जेवा अन्यना प्राण समजनारने वधारे कहेवु पडे नहि.

(११) फूलनी पाखडीओ पण छुटी करी नाखनी नहि, तेनेज पगतळे कचरवी नहि तो पछी सोयनी तीक्ष्ण अणीनती तेनुं छेदन भेदन तो केमज कराय? छेदन भेदन करेला फुलहार चढावना ते करता शुद्ध अने सरस फूलो छुटा छुटा जेम शोभनिक लागे तेम प्रभुना अग उपर गोठवी देवा वधारे उत्तम, लाभकारक अने आनद दायक होवाथी हितकारी समजाय छे ते सहृए विचारीने लक्षमा राखवु विधि सहित करेली भक्तिज लेख थाय छे.

(१२) बीजा दीनमे निर्माल्यरुप थयेला ते फूल के फूलमाळ जेम तेम ज्या त्या फेंकी

देवां न जोइए. ते वधांय जाळवीने मोर पींछी-
वती उतारी लइ एवा स्थळे राखवां के ज्यां
ते कचराय नहि तेमज तेमां चोटी रहेला कोइ-
पण त्रसजीवने ताप--तडकादिकथी व्यथा थाय
नहि. न्हवणनी कुंडीमां तो ते नांखवा नज
जोइए. जूदांज 'राखवां जोइए.' स्नात्र पूजा
प्रसंगे पण ए वात लक्षगत राखवानी छे.

(१३) जेम जेम जयणा अधिक पळे तेम
तेम ते पाळवा दरेक भक्ति प्रसंगे खूब लक्ष
राखवुं, अने भक्ति रसिक भाइ व्हेनोनुं दील
दुखाय एवुं कंइपण नहि करतां मन प्रसन्न
थाय एवुंज पवित्र आचरण करवुं. वंदन के
पूजा करतां एक बीजा उपर धक्का धक्की करवी
नहि पण अनुकूळ समय (तक) मळतां सुधी
कोइ एक एकान्त स्थळमां ध्यान धरवुं.

(१४) भक्तिमांथी निवृत्त थतांज संसा-

रिक काममा रगाइ जतु नहि. जो भक्तिनो रस--आस्वाद (अनुभव) बराबर कर्योज होय तो तेनी खुमारी एकाएक उतरी जती नथी. ते पछी पण केटलोक वखत सुधी टकी रहे छे. ते (अनुभव) नु सुख तो खरेखर अनुभवीज जाणी शके छे. शुद्ध--सरल हृदयवाळा श्रद्धा-वत प्रेमाळनेज प्रमाद रहित भक्ति मार्गमा प्रवर्तता एवो अनुभव (रस आस्वाद) प्राप्त थइ शके छे. हृदय शुद्धि करवानी तो खास जरूर रहे छे.

(१५) जेम मोर मेघने देखी, चकोर चद्रने देखी, अने सती निज पतिने देखी राजी --आनदित थाय छे तेम भक्ति रसिक अने शुद्ध श्रध्धावत सच्यजनो पण शुध्धदेव, गुरु अने सघ साधर्मिक जनोने निरखी आनदित थाय छे अने निजनेत्र युगल्ने सफळ--सार्थक करे छे

खास अगत्यनीं सूचना.

घहु कोइ भव्य आत्माओने पवित्र ज्ञानामृतनो अने भक्ति रसनो अपूर्व लाभ अनुकुलताथी मळे एवा शुभ उद्देशथीं अल्प मूल्यथी अने भेट दाखल आपवामा आवता कोई पण पुस्तक उपर ममता बुद्धि राखी कोई रीते पुस्तकनो दुरुपयोग करवोनहीं, पण प्रमाद रहित पुरती काळजी राखी तेनो जाते लाभ लेई बीजा गमे ते जिज्ञासु भाई व्हेनोने ते मळेला पुस्तकनो छूटथी लाभ लेवा देवो अने एवी .रीते बमणो फायदो उपजावी पुस्तकने पवित्र उद्देश सफळ करवो. ए रीते दरेक भाइ व्हेनोने नम्रतापूर्वक खास भलामण करीये छीये जे उच्च उद्देशथी पुस्तको आपवामा आवे-छे ते उद्देश सफळ थाय अने तेनी कोइ रीते आशातना थती अटके एटलु सूचवी विरमिये छीये. तारीख. २५।१०।३६ संग्राहक,

शाह शिवनाथ लुंबाजी-पोरवाल.

~ वन्दे श्री वीरमानन्दम् ~

श्री जिनेन्द्रभक्तिप्रकाश भाग बीजो.

मंगलाचरण.

(शार्दूलविक्रीडित छन्द)

॥ देवोऽनेककर्मनार्जितोर्जितमहा पापप्रदीपानलो, देवः सिद्धिवधूविशालहृदयालङ्कारहारोपमः ॥ देवोऽष्टादशदोषसिन्धुरघटानिर्भेदपञ्चाननो, भव्याना विदधातु वाञ्छितफलं श्री वीतरागो जिनः ॥ १ ॥ ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपदः सम्मेतशैलाभिधः, श्रीमान् रैवतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुंजयो मण्डप ॥ वैभारः कनकाचलोऽर्बुदगिरि. श्रीचित्रकूटादय, स्तत्र श्री ऋषभादयो जिनवराः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ २ ॥

प्रभुनी प्रार्थना.

(भुजंग प्रयात छंद)

॥ सहु भव्य जीवो सदाकाळ सेवो, त्रिलोकना नाथ देवाधि देवो ॥ पूजो प्रेमथी मेळवो मोक्ष मेवो, भव चक्रना भयनो अंत लेवो ॥१॥ तेह तणी जे करे भक्ति भावे, टळे जन्म मरणने मुक्ति पावे ॥ भक्ति भावथी सेवक आज गावे, प्रभु पार्श्वना नामथी दुःख जावे ॥ २ ॥

॥ श्री ऋषभदेव जिन चैत्यवंदन ॥

॥ अरिहंत नमो भगवंत नमो, परमेश्वर जिनराज नमो ॥ प्रथम जिनेश्वर प्रेमे पेखत, सिद्धां सघलां काज नमो ॥ अरि० ॥ १ ॥ प्रभु पारंगत परम महोदय, अविनाशी अकलंक नमो ॥ अजर अमर अद्‌भूत अतिशय निधि, प्रवचन जलधि मयंक नमो ॥ अरि० ॥ २ ॥ तिहुयण

भवियण जणमण वंछिय, पूरण देव रसाळ नमो ॥ ललि ललि पाय नमुं हुं भाले, कर-जोडीनें त्रिकाळ नमो ॥ अरि० ॥ ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तुं जग जन सज्जन, नयना नंदन देव नमो ॥ सकल सुरासुर नरवर नायक, सारे अहो निश सेव नमो ॥ अरि० ॥ ४ ॥ तुं तीर्थंकर सुखकर साहिब, तु नि कारण बंधु नमो ॥ शर-णागत भविनें हितवत्सल, तुंही कृपारस सिंधु नमो ॥ अरि० ॥ ५ ॥ केवलज्ञाना दर्शे दाशित, लोकालोक स्वभाव नमो ॥ नाशित सकल कलंक कलुष गण, दुरित उपद्रव भाव नमो ॥ अरि० ॥ ६ ॥ जग चिंतामणि जगगुरु जग-हित, कारक जगजन नाथ नमो ॥ घोर अपार भवोदधि तारण, तु शिवपुरनो साथ नमो ॥ अरि० ॥ ७ ॥ अशरण शरण नीराग निरं-जन, निरुपाधिक जगदीश नमो ॥ बोधि दीओ

अनुपम दानेसर, ज्ञानविमल सूरीश नमो ॥ अरिहंत नमो० ॥८॥ (इति)

॥ श्री शांतिनाथ जिन चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय शांति जिणंद देव, हथ्थिणापुर स्वामी, विश्वसेन कुलचंद सम, प्रभु अंतरजामी ॥ १ ॥ अचिरा उर सर हंस जिस, जिनवर जयकारी ॥ मारी रोग निवारके, कीर्ति विस्तारी ॥ २ ॥ शोलमा जिनवर प्रणमीयें ए, नित उठी नामी सीस ॥ सुरनर भूप प्रसन्न मन, नमतां बोध जगदीश ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री नेमनाथजीनुं चैत्यवंदन[1] ॥

॥ राजकुमर श्री नेमीनाथ, शिवादेवी नंदन ॥

---

[1] आ चैत्यवंदननी छापेली अथवा लखेली नोंद अमने मली नथी. मुखपाठ करेला पासे सांभलीने छपाव्युं छे. परंतु तेमां कोइ कडीयो ओछी जणाय छे, तेमज छेवट कर्तानुं नाम पण जणातुं नथी

रुपे नळवंत पेसीने, राये शंख पुराव्यो ॥ १ ॥
भाइ सुजानळ जोडने, हरि हींडोळे हाथ ॥
शिर मोगरी एम कंपने, ए लेशे मुज राज ॥ २ ॥
उपन्न कोडी जादव मळी, विवाह मनावे ॥
चोद सहस्स गोपागना, दीयर बोलावे ॥ ३ ॥
निसठ नेम निर्वाह करो ए, अन वारो एक वात ॥
नधन सामु जोडने, निज वरीए एक नार ॥४॥
नही राग नही द्वेष, वर तोरणे आव्यो ॥ दया-
वत श्री नेमीनाथ, रथ पाछो वाळयो ॥ ५ ॥
राजीमती एम टळवळे ए, जेम जळ छोडे मच्छ ॥
धीग जोयु धीग जीवव्यु, जग समार असार ॥ ६ ॥
तोडे नवसर हार तिहा, शिर कंकण मोडे ॥७॥
शिर फोडे तिहा अति घणु, वलुडे निज अग ॥

तेथीं कोइ पासे शुद्ध लखेली या छापेली नकल होय
अथवा मुखपाट होय तो लखी मोकलवा कृपा करवी
एटले पुनरावृत्ति वखते सुधारी लेवाशे (प्रकाशक)

परभव पाप संभारती, चढती गिरिवर संग ॥८॥ अष्ट भवांतर आपनी, नवमे कां मुकी ॥ दयावंत श्री नेमीनाथ, तेणे दीक्षा दीधी ॥ ९ ॥ खेद म करीश राजीमती ए, अबलापणुं म धरीश ॥ पहेला शिवपुर मोकलीश, पछे हुं आवीश ॥ १० ॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन चैत्यवंदन ॥

॥ ॐ नमः पार्श्वनाथाय । विश्व चिंतामणी यते ॥ ह्रीँ धरणेंद्र वैरोटया । पद्मादेवी युतायते ॥ १ ॥ शांति तुष्टि महा पुष्टि । धृतिकीर्ति विधायिने ॥ ॐ ह्रीं द्विद् व्याल वैताल । सर्व्वाधिव्याधिनाशने ॥ २ ॥ जया जिताख्या विजया । ख्यापरा जितयान्वितः ॥ दिशापाल ग्रहैर्यक्षै । विंद्यादेवी मिरन्वितः ॥ ३ ॥ ॐ असिआउसाय- नमः । स्तत्रत्रैलोक्य नाथतां ॥ चतुः षष्ठि सुरें

द्रास्ते । भापंते छत्र चामरै ॥ ४ ॥ श्री संखेश्वर मंडन पार्श्व जिन । प्रणत कल्पतरु कल्प ॥ चूरय दुष्ट व्रात ॥ पुरयमे वाछित नाथ ॥ ४ ॥ (इति)

॥श्री महावीर स्वामीनु चैत्यवंदन॥

॥ वर्द्धमान जिनवर धणी, प्रणमुं नित्य मेव॥ सिद्धारथ कुल चंद्लो, सुर निर्मित सेव ॥ १ ॥ त्रिसला उयर सर हंस सम, प्रगटयो सुखकंद॥ केसरी लछन विमल तनु, कंचनमय वृंद ॥२॥ महावीर जगमा वडोए,पावापुरी निर्वाण ॥ सुर-नर भूप नमे सदा, पामे अविचल ठाण ॥ ३ ॥

॥ श्री सीमंधर जिन चैत्यवंदन ॥

॥ वदु जिनवर विहरमान, सीमधर स्वामी॥ केवल कमला कात दात ॥ करुणारस धामी ॥ १ ॥ कंचनगिरि सम देह कात, वृष लाछन पाय ॥ चोराशी लख पूर्व आय, सेवित सुर

राय ॥ २ ॥ छठ भत्त संयम लीयो ए, पुंड-
रिगिणी भाण ॥ प्रभु द्यो दरिसण संपदा, कारण
परम कल्याण ॥ ३ ॥ (इति)

॥ श्री सिद्धाचळजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥श्री आदिनाथ जगन्नाथ, विमलाचल
मंडन ॥ जयनाभि कुलाकाश, प्रकाशन दिवा-
कर ॥ १ ॥ तवदेव पदांभोज, सेवापि दुर्लभा
भवेत् ॥ पुण्य संभार हीनानां ॥ कल्पवल्ली व
देहिनाम् ॥ २ ॥ ते धन्या मानवा देवा, योग-
मन्तव शासनं ॥ वंदनीया विभातोये, वंदंते
भवतःपदौ ॥ ३ ॥ प्रचंड मम रागादि, रिपुसं-
तति घातकं ॥ श्री युगादि जिनाधीशं, देवं वंदे
मुदाः सदाः ॥ ४ ॥ श्री शत्रुंजय कोटीर, कृतं
राज्यश्रिया विभो ॥ सर्वाघनाशनं मस्तु, शासनं
ते भवे भवे ॥ ५ ॥ पाताले यानि बिंबानि, यानि

विमानी भूतले ॥ स्वर्गेपियानि विमानि, तानि-
वदे निरंतरम् ॥ ६ ॥ (इति)

॥ श्री सिद्धाचलजीनु चैत्यवंदन. ॥

॥ विमल[1] केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभु-
वन हितकर ॥ सुरराज संस्तुत चरण पंकज,
नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर
शृंग मंडण, प्रवर गुण गण भूधर ॥ सुर असुर
किन्नर कोटी सेवित, नमो आदि जिनेश्वर ॥ २ ॥
करती नाटक किन्नरीगण, गाय जिन गुण
मनहर, निर्जरावली नमे अहनिश, नमो आदि
जिनेश्वर ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि
साधी, कोडि पण[2] मुनि मनहर ॥ श्री विमल गिरि-
वर शृंग[3] सिध्धा, नमो आदि जिनेश्वर ॥ ४ ॥
निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडिनंत[4] ए

---

[1] निर्मल २ पांच, ३ शिखर, ४ अनंत क्रोडो,

गिरिवरं ॥ मुक्ति रमणी[५] वर्यां रंगे, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोक मांहि, विमल गिरिवर तो परं[६] ॥ नहीं अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ ६ ॥ इम विमल गिरिवर शिखर मंडण, दुःख विहंडण ध्याईए ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थ, परम ज्योति निपाईए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परम पदस्थिति जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥ ८ ॥ (इति)

श्री सिद्धाचळ (ऋषभदेव) चैत्यवंदन

॥ धुर समरूं श्री आदि देव, विमलाचल सोहीए ॥ सुरति मूर्ति अती सकळ, भवियणनां मन मोहीए ॥ १ ॥ सुंदर रुप सोहा-

---

५ स्त्री, ६ गिरिराजथी अधिक.

मणो, जोता तृप्ति न होय ॥ गुण अनंत जिनवर तणा, कही नव शके कोय ॥ २ ॥ वीतराग दर्शन विना, भव सागरमा रुलीओ ॥ कुगुरु कुदेवे भोळव्यो, गाढो जल भरीओ ॥ ३ ॥ पूर्व पुण्य पसाउले, वीतराग में आज ॥ दर्शन दीठो ताहरो, तरण तारण जहाज ॥ ४ ॥ सुरघट न सुर वेलडी, आगणे मुज आइ ॥ कल्पवृक्ष फळीओ वळी, नवनिधि में पाइ ॥ ५ ॥ तुज नामे संकट टळे, नामे विपय विकार ॥ तुज नामे सुख मपडा, तुज नामे जयकार ॥ ६ ॥ आज सफळ दिन माहरो ए, सफळ थइ मुज जात्र ॥ प्रथम तीर्थंकर भेटीआ, निर्मळ कीधा गात्र ॥ ७ ॥ सुरनर किन्नर किन्नरी, विद्याधरनी कोड ॥ मुक्ति पहोच्या केवली, वदु ने कर जोड ॥ ८ ॥ शत्रुंजय गिरि मंडणो ए, मरुदेवा मान मल्हार ॥ सिद्धिविजय सेवक कहे,

तुम तरीआ मुज तार ॥ ९ ॥ (इति)

॥श्री चोवीस तीर्थंकरनुं चैत्यवंदन॥

॥ प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ, सेवे शुभकारी ॥ बीजा श्री अजित जिणंद, भव पाप निवारी ॥ १ ॥ त्रीजा संभव सुख करूं, वांछित फल दातार ॥ अभिनंदन चोथा नमुं, जेम पामुं भव पार ॥ २ ॥ सुमतिनाथ सो समय नमुं, जिन पंचम कहीए ॥ पद्मप्रभु छठा जिणंद, जस ध्याने रहीए ॥ ३ ॥ श्री सुपार्श्व स्वामी सातमा, सेवे संपत्ति कोड ॥ चंद्रप्रभु जिन आठमां, नमतां नावे खोड ॥ ४ ॥ सुविधि-नाथ शिव तणो साथ, नवमा भगवंत ॥ दशमा शीतलनाथसुं, सेवे सुख अनंत ॥ ५ ॥ श्रेयांस जिन अगीयारमां, जग जंतु जयकारी ॥ बारमा श्री वासुपूज्य, भव पाप निवारी ॥ ६ ॥

तेरमा श्री विमलनाथ, मन आनंद भागो ॥
चौदमा श्री अनंतनाथ, दुर्गती दूर निकट्ठो ॥ ७ ॥
पंधरमा प्रभु धर्म देव, प्रणमु प्रेम आणंद ॥
सोळमा श्री शांतिनाथ, समरु नित आनंद
॥ ८ ॥ सत्तरमा भावे भजु, प्रभु कुंथु
कृपाल ॥ अरनाथ श्री अढारमा, अरिहंत दिन
दयाल ॥ ९ ॥ ओगणीसमा प्रभु मल्लीनाथ,
शिवरमणी भरथार ॥ मुनिसुव्रत जिन वीसमा,
मने निश्चतणो आधार ॥ १० ॥ एकवीसमा
प्रभु नमिनाथ, निरखता नित रहीए ॥ बावी-
समा प्रभु नेमनाथ, जम ध्याने रहीए ॥ ११ ॥
पार्श्वनाथ जिन तेवीसमा, जस नामे दुःख
जावे ॥ वर्द्धमान जिन चोवीसमा, मन समरता
सुख थावे ॥ १२ ॥ अतीत अनागत ने वर्त-
मान, जीहां जिनवर कहीए ॥ स्वर्ग मृत्यु
पातालमा, प्रतिमा जिहां रहीए ॥ १३ ॥

भविक वंदु भावथी, आणी मन उल्लास ॥
पंडित विनितविजय कहे, तस घर लील
विलास ॥ १४ ॥ (इति)

॥ श्री तीर्थवंदनाख्यं चैत्यवंदनं ॥

॥ सद् भक्त्या देवलोके रविशशिभवने व्यंतराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुश्रृंगे रुचकनगवरे कुंडले हस्तिदंते, वक्षारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥ चित्रशैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीमत्तीर्थं० ॥ २ ॥ श्रीशैले विंध्यश्रृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, संमेते तारके वा कुरुगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ चोज्ज-

यन्ते विपुलगिरिवरे गुर्जरे गेहणाद्रौ ॥ श्रीमत्तीर्थ० ॥ ३ ॥ आघाटे मेडपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटे विटपि घनतटे देवकूटे विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चित्रकूटे च भोटे ॥ श्रीमत्तीर्थ० ॥४॥ श्रीमाले मालवे वा मलय निखिले मेखले पीच्छले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले मेकले वा ॥ डाहाले कोशले वा विगलितसलिले जंगले वा तमाले ॥ श्रीमत्तीर्थ० ॥५॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलिंगे, गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उड्रियाणे च पुंड्रे ॥ आद्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविडकुवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे ॥ श्रीमत्तीर्थ० ॥ ६ ॥ चंपाया चंद्रमुख्या गजपुर मथुरापत्तने चोज्जयिन्या, कौशाम्ब्या कोशलाया कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्यां ॥ नासिक्ये राजगेहे दशपुरनगरे भद्दिले ताम्रलिप्त्यां ॥ श्रीमत्तीर्थं०

॥ ७ ॥स्वर्गे मर्त्यंन्तरिक्षे गिरिशिखर हृदे स्वर्नदी-नीरतीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये वने वा जलस्थल-विपमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्ये ॥ श्रीमत्तीर्थं० ॥ ८ ॥ श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे, वृक्षाग्रे चैत्यवृक्षे रतिकररुचके कुंडले मानुषांगे ॥ इक्षूकारे जिनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यंतरे स्वर्गलोके ॥ श्रीमत्तीर्थ० ॥ ९ ॥ इत्थं श्री जैनचैत्यस्तवमिममनिशं भक्तिभाजस्त्रि-संध्यं, प्रोद्यत् कल्याणहेतुं कलिमलहरणं ये पठंति विशिष्टाः॥ तेपां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्ये सिद्धिस्तथोच्चैः प्रभ-वति सततं चित्तमानंदकारि. ॥ १० ॥ (इति)



स्तवनो नो संग्रह

॥ श्री ऋषभदेव जिन स्तवन ॥

(मारु मन मोह्यु रे श्री सिद्धाचले रे-एदेशी)

॥ ऋषभ जिनेश्वर प्रितम माहरो रे, ओर न चाहु रे कन ॥ रीझ्यो साहिब संग न परिहरे रे, भागे सादि अनंत ॥ ऋषभ० ॥ १ ॥ प्रीत सगाइ रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत सगाइ रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ऋषभ० ॥ २ ॥ कोइ कंत कारण काष्ट भक्षण करे रे, मिलशुं कंतने धाय ॥ ए मेळो नवि कहीये संभवे रे, मेळो ठाम न ठाय ॥ ऋषभ० ॥३॥ कोइ पतिरंजन अति घणो तप करे रे, पतिरंजन तनताप ॥ ए

पतिरंजन में नवि चित्त धर्युं रे, रंजन धातु मेळाप ॥ ऋषभ० ॥ ४ ॥ कोइ कहे लीला रे अलख ललख तणी रे, लख पूरे मन आश ॥ दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥ ऋषभ० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्ने रे पूजन फळ कह्युं रे, पूजा अखंडित एह ॥ कपट रहित थइ आतम अरपणा रे, आनंदघन पद रेह ॥ ऋषभ० ॥ ६ ॥ (इति)

॥ श्री ऋषभदेव जिन स्तवन ॥

(अजित जिणंदस्युं प्रीतडी –ए देशी•)

॥ ऋषभ जिणंदशुं प्रीतडी, किम कीजे हो कहो चतुर विचार ॥ प्रभुजी जई अलगा वस्या, तिहां किण नवि हो को वचन उचार ॥ ऋषभ० ॥ १ ॥ कागळ पण पहोंचे नहि, नवि पहोंचे हो तिहां को परधान ॥ जे पहोंचे ते तुम

समो, नवि भासे हो कोइनु व्यवधान ॥ ऋषभ० ॥ २ ॥ प्रीत करे ते रागिया, जिनवरजी हो तुमे तो वीतराग ॥ प्रीतडी जेह अरागीथी, भेळवनी हो लोकोत्तर माग ॥ ऋषभ० ॥ ३ ॥ प्रीति अनादिनी विष भरी, ते रीते हो करवा मुज भाव ॥ करवी निरविष प्रीतडी, किण भते हो, कहो बने बनाव ॥ ऋषभ० ॥४॥ प्रीति अनंती परथकी, जे तोडे हो ते जोडे एह ॥ परम पुरुषथी रागता, एकत्वता हो दाखी गुण गेह ॥ ऋषभ० ॥ ॥ ५ ॥ प्रभुजीने अवलंबता, निज प्रभुता हो प्रगटे गुणराश ॥ देवचन्द्रनी सेवना, आपे मुज हो अविचल सुखवास ॥ ऋषभ० ॥ ६ ॥ (इति)

॥ श्री ऋषभदेव जिन स्तवन ॥

(बीजे भव वरस्थानक तप करी–ए देशी)

॥ बाल्पणे आपण ससनेही, रमता नव नव

वेषे ॥ आज तुमो पाम्या प्रभुताइ, अमे तो संसारनीं वेषे हो. ॥ प्रभुजी ओलभडे[1] मत खीजो. ॥ १ ॥ जो तुम ध्यातां शिवसुख लहीयें, तो तुमने केइ ध्यायें ॥ पण भवस्थिति परिपाक थया विण, कोइ न मुगती जाये हो ॥ प्रभुजी० ॥२॥ सिद्ध निवास लहे भवि सिद्धि, तेहमां स्यो पाड[2] तुमारो ॥ तो उपगार तुमारो वहिए, अभव्य सिद्ध न तारो हो ॥ प्रभुजी० ॥३॥ नांणरयण[3] पामी एकंते, थइ बेठा मेवासी ॥ ते मांहेलो एक अंश जो आपो, ते वाते स्यावासी हो ॥ प्रभुजी० ॥ ४ ॥ अक्षयपद देतां भविजनने, संकीर्णता नवी थाय ॥ शिवपद देवो जो समरथ छो, तो जश लेतां स्युं जाय हो ॥ प्रभुजी० ॥५॥ सेवा गुण रंज्यो भविजनने, जो तुमे करो वडभागी ॥ तो

---

१. ठपकाथी २. आभार ३. ज्ञानरत्न

तुमे स्वामी केम कहावो, निरमम ने निरागी हो प्रभुजी० ॥ ६ ॥ नाभिनन्दन जगवंदन प्यारो, जगगुरु जग जयकारी ॥ रुपविबुधनो मोहन पभणे, वृषभ लंछन बलीहारी हो ॥ प्रभुजी० ॥ ७ ॥(इति)

॥ श्रीऋषभदेव जिन स्तवन ॥

(ललनानी-देश मनोहर माल्वो-ए देशी)

॥ आदिकरण अरिहतजी, ओलगडी अवधार ललना ॥ प्रथम जिनेश्वर प्रणमिये, वंछित फळ दातार. ललना० आदि० ॥१॥ उपगारि अवनीतळें, गुण अनंत भगवान ल० अविनाशी अक्षयकळा, वरते अतिशय निधान ल० आदि० ॥२॥ गृहवासे पण जेहने, अमृतफळ आहार ललना ॥ ते अमृतफळने लहे, ए युगतु निरधार ल० आदि० ॥ ३ ॥ वंश इक्षाग छे जेहनो, चढतो रंग सुविशेष, ल० भरतादिक थया केवली,

अनुभव रस फळ देख ल० आदि० ॥ ४ ॥ नाभिराया कुळमंडणो, मरुदेवी सर हंस ल० ऋषभदेव नितु वंदीयें, ज्ञानविमल अवतंस ललना आदिकरण० ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्रीऋषभदेव जिन स्तवन ॥

(योग माया गरवे रमे जो–ए देशी)

ओलगडी आदिनाथनी जो, कांइ कीजीयें मनने कोड जो ॥ होड करे कुण नाथनी जो, जहना पाय नमे सुर कोड जो. ओल० ॥ १ ॥ वहा-लो मरुदेवीनो लाडलो जो, राणी सुंनदा ह-इडानो हार जो ॥ त्रण भुवननो नाहलो जो, माहरा प्राणतणो आधार जो. ओल० ॥२॥ वाहले वीस पुरव लख भोगव्युं जो, रुडुं कुमरपणुं रंग रोल जो ॥ मनडुं मोह्युंरे जिन रुपशुं जो, जाणे जगमां मोहनवेल जो. ओल० ॥३॥ पांचसे धनुषनी

देहडी जो, लाख पुरव त्रेसठ राज जो ॥ लाख पुरव समता वरया जो, थया शिवमुहगी वर राज जो. ओल० ॥ ४ ॥ एहना नामथी नवनिधि संपजे जो, वळी 'अलिय विघन सवि जाय जो ॥ श्री सुमतिविजय कविरायनो जो, एम रामविजय गुण गाय जो. ओल० ॥ ५ ॥(इति)

॥ श्री अनतनाथ स्वामीनुं स्तवन॥

(पास मयेश्वरा, साच कर सेवका—ए चाल)

॥ धार तरवारनी, सोहली दोहली, चउदमा जिनतणी चरण सेवा ॥ धार पर नाचता, देख बाजीगरा, सेवना धारपर रहे न देवा ॥ धार० ॥ १ ॥ (ए आकणी) एक कहे सेवीए, विविध किरिया करी, फळ अनेकात लोचन न देखे ॥ फळ अनेकात, किरिया करी बापडा, रडवडे चार गतिमाहे लेखे ॥ धार० ॥ २ ॥ गच्छना भेद बहु, नयण निहाळता, तत्त्वनी वात करता न

लाजे ॥ उदरभरणादि निज, काज करता थकां, मोह नडियां कलिकाल राजे ॥ धार० ॥ ३ ॥ वचन निरपेक्ष, व्यवहार जूठो कह्यो, वचन सापेक्ष व्यवहार साचो॥ वचन निरपेक्ष, व्यवहार संसार फल, सांभळी आदरी कांइ राचो ॥ धार० ॥ ४ ॥ देव गुरु धर्मनी, शुद्धि कहो किम रहे, किम रहे शुद्ध श्रद्धा न आणो ॥ शुद्ध श्रद्धान विणु, सर्व किरिया करी, छार पर लीपणुं तेह जाणो ॥ धार० ॥ ५ ॥ पाप नहीं कोइ, उत्सूत्र भाषण जिस्यो, धर्म नहीं कोइ जग सूत्र सरिखो ॥ सूत्र अनुसार जे, भविक किरिया करे, तेहनुं शुद्ध चारित्र परखो ॥ धार० ॥ ६ ॥ एह उपदेशनो, सार संक्षेपथी, जे नरा चित्तमें नित्य ध्यावे॥ ते नरा दिव्य बहु, काळ सुख अनुभवी, नियत आनंदघन राज पावे॥ धार०॥७ ॥ (इति)

॥ श्री कुंथुनाथ स्वामीनुं स्तवन. ॥

(राग गुर्जरी-अमर देहो मोरारी, हमारो-अथवा-ए व्रत जगमा दीवो मेरे प्यारे-ए देशी)

॥ कुंथुजिन मनडुं किमहीं न बाजे, हो कुंथु० ॥ जिम जिम जतन करीने राखुं, तिम तिम अलगु भाजे हो ॥ कुंथु० ॥ १ ॥ रजनी वासर वसती उजड, गयण पायाले जाय ॥ साप खायने मुखडुं थोथु[1], एह उखाणो न्याय हो ॥ कुंथु० ॥ २ ॥ मुक्ति तणा अभिलाषी तपीया, ज्ञानने ध्यान अभ्यासें ॥ वयरीडु काइ एहवु चिंते, नाखे अवले पासे हो ॥ कुंथु० ॥ ३ ॥ आगम आगमधरने हाथे, नावे किणविध आंकु ॥ किहां कणे जो हठ करी हटकु तो, व्याल तणी-परें वांकु हो ॥ कुंथु० ॥ ४ ॥ जो ठग कहु तो ठगतु न देखु, शाहुकार पण नाही ॥ सर्व मा-

[1] खाली

हेने सहुथी अलगुं, ए अचरिज मन मांही हो ॥ कुंथु० ॥ ५ ॥ जे ज कहुं ते कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंडितजन समजावे, समजे न माहरो सालो[१] हो ॥ कुंथु० ॥ ६ ॥ में जाण्युं ए लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वाते समरथ छे नर, एहने कोइ न जेले हो ॥ कुंथु० ॥७॥ मन साध्युं तेणे सघळुं साध्युं, एह वात नहि खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवि मानु, ए कही वात छे मोहोटी हो ॥ कुंथु० ॥ ८ ॥ मनडुं दुराराध्य ते वश आण्युं, ते आगमथी मति आणुं ॥ आनंदघन प्रभु माहरुं आणो, तो साचुं करी जाणुं हो ॥ कुंथु० ॥ ९ ॥ (इति)

॥ श्रीसंखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन ॥

(तार हो तार प्रभु मुज सेवक भणी० ए देशी)

॥ पास संखेश्वरा सार कर सेवका, देव कां

१ कुमति स्त्रीनो भाइ.

एवटी वार लागे ॥ कोडि कर जोडी दरबार आगे खडा, ठाकुरा चाकुरा मान मागे ॥ पाम० ॥ १ ॥ जगतमा देव जगदीश तुं जागतो, एम शुं आज जिनराज उंघे ॥ महोटा दानेश्वरी तेहने दाखीये, दान दिये जेह जग काळ मुंघे ॥ पाम० ॥ २ ॥ भीड पडी जादवा जोर लागी जरा, तिणे ससे त्रिकमे तुज मनायों ॥ प्रगटी पाताळथी पलकमा ते प्रभु, भक्तजन तेहनो भय निवार्यो ॥ पाम० ॥ ३ ॥ प्रगट था पासजी मेली पडदो परो, मोड अमुराणने आप छोटो ॥ मुज महीराण मजूसमा पेसीने, खलकना नाथजी ! बंध खोलो ॥ पाम० ॥ ४ ॥ आदि अनादि अरिहंत तुं एक छे, दीनदयाळ छे कोण दूजो ? ॥ उदयरतन कहे प्रगट प्रभु पासजी, पामी भयभंजनो एह पूजो ॥ पाम० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

(गीरिवर दर्शन विरला पावे-ए चाल)

॥ वीर विना वाणी कोण सुनावे, कोण सुनावे कोण बतावे ॥ वीर० ॥ (ए आंकणी) जब थें वीर गये शिवमंदिर, तब मेरो सांसो कोण मिटावे मिटावे ॥ वीर० ॥ १ ॥ तुम विना चहुविह संघ कमल दल, विकसित कोण करावे करावे ॥ वीर० ॥ २ ॥ कहे गौतम गणधर तुम विरहें, जिनवर दिनकर जावे जावे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मोकुं साथ लइ क्युं न चले, चित्त अपराध धरावे धरावे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ इम परभव विचारी अपनो, भावशुं भाव मिलावे मिलावे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ समवसरणमें बेठ तखतपर, हुकुम कोण फरमावे फरमावे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर वीर लवते वीर अक्षर, अंतर तिमिर

हरावे हरावे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ सकल सुरासुर हर्षित होवे, जुहार करणकुं आवे हो आवे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ इंद्रभूति अनुभवकी लीला, ज्ञानविमल गुण गावे हो गावे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

(रह्यो रह्यो रे यादवराय ने घडीया-ए चाल)

॥ वीर हमणे आवो छे मोर मंदिरीए, मं-दिरीए रे वीर मंदिरीए ॥ वीर० ॥ पाये पडीने मेतो मोर निचावुं, नित नित वीनतडी करीए॥ वीर० ॥ १ ॥ राजन कुड्डा पुत्र शकिने, हरखे इणि पेरे उच्चरिए॥ वीर० ॥ २ ॥ जब प्रभु आगणे वीर पधारे, ता नच्छ रानपुरा इग भरीए ॥ वीर० ॥ ३ ॥ गयणा सुणीने मनियण पटिलाभिने, तो भवसायर तरीए ॥ वीर० ॥४॥ अमतिनव पणे महावीरजी, घर घर भीक्षाने

फरीए ॥ वीर० ॥ ५ ॥ अभिनव शेठ तणे घेर पारणुं, किधुं फरतां गोचरीए ॥ वीर० ॥ ६ ॥ इम भावना करतां श्रवणे सुणी, देव दूंदूभीरे चित्त भरीए ॥ वीर० ॥ ७ ॥ बारमां कल्पे जिरण आयु बाध्युं, वीर जिनने उत्तम चित्त धरीए ॥ वीर० ॥ ८ ॥ तसपद्‌ पद्मनी सेवा करतां, सेहेजे शिव सुंदरी वरीए रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ (इति)

॥ श्री सीमंधरस्वामीनुं स्तवन ॥

(लावणीनी चाल)

॥ सुणो सुणो श्रीमंधर स्वामी के, शासन स्वामीके शासन स्वामी ॥ मोहे लगी मीलनकी आश के, अंतरजामी ॥ सुणो० ॥ १ ॥ में भरतक्षेत्रके माहे के लीनो वासो के लीनो० ॥ तुज लखो सखो नही आज के, निरगुण साचो ॥ सुणो० ॥ २ ॥ मारा वीतराग वीन नीर के,

नयणा वरसे के नय० ॥ मारो हइडो छे नहीं हाथ के, सदा दील तरसे ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ इम तरसे दीनने रातके, मनड महारु के मनड० ॥ कव देखु प्रभुजी द्वार के, दरीसण ताहरु ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ मारी नथी उघाडी आख के, निंद न आवे के निंद० ॥ भगवंत विना भवि जीव, घणा दुःख पावे ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ एम बोले छे जिनदास के, मधुरीवाणी के मधुरी० ॥ चरणोनी रज करी राख के, अपना जाणी ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ (इति)

॥ श्री समेतशिखरजीनुं स्तवन ॥

॥ कचनगढ पुजन जाना॥ शेत्रुजागढ० ॥ उज्वलगट० (अचली) चलत चलत मधुवनमे सिधाये, आनद हरस वधाना ॥ कचन० ॥ १ ॥ वीश टुके वीश जिनेश्वर, कर्म रहित निर्वाणा

॥ कंचन० ॥ २ ॥ प्रेमप्रकाश प्रभु मोक्ष सुधारे, आवागमन निवारा ॥ कंचन० ॥ ३ ॥ आनंदघन प्रभु चलत पंथमे, समर समर गुण गाना ॥ कंचन० ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री सामान्य जिननुं स्तवन. ॥

(चंद्राप्रभुजीसे ध्यान रे, मोरी लगी० ए चाल)

॥ होई आनंद बहार रे, प्रभु बैठ मगनमें ॥ होइ० ॥ (अंचली) अष्टादश दूषण नहीं जिनमें, प्रभुगुण धारे वार रे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ चौतिस अतिशय पंतिस वानी, जग जीवन हितकार रे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ शांतरूप मुद्रा प्रभु प्यारी, देखो सब नरनार रे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ आनंद थावो प्रभु गुण गावो, मुख बोलो जयकार रे ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ प्रभु भक्तिसे वल्लभ होवे, आनंद हप अपार रे ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री ऋषभदेव जिन स्तवन. ॥

(इस तन धनकी कोन वडाई–ए चाल)

ऋषभ जिनंद ऋषभ जिनंदा, तु साहिब हु
हु तुज बंदा, तुजश्युं प्रीती बनी मुज साची,
मुज मन तुज गुणश्युं रह्यु माची ॥ ऋष० ॥१॥
दीठा देव रुचे न अनेरा, तुज[1] पासलि चितडुं
दिये फेरा, स्वामीशु कामणडुं[2] कीधु, चित्तडु
अमारु चोरी लीधु ॥ ऋष० ॥२॥ प्रेम बधाणी
ते तो जाणो, निरवहस्यो तो होशे वखाणे;
वाचक जश विनवे जिनराज, बांह्य ग्रह्यानी
तुजने लाज ॥ ऋष० ॥ ३ ॥ (इति)

॥ श्री ऋषभदेव जिन स्तवन ॥

(चार चालने शुंचर तागी चाल गमे–ए चाल)

आदि जिणंदनुं मुख जोइ, दुःख खोयु रे,

---

[1] आजु बाजु [2] वशी करण
३–म

दुःख खोयुं रे ॥ मोहराजानुं कुटुंब सघळुं, आज रोयुं रे, आज रोयुं रे॥ आदि० ॥ १ ॥ लब्धि तारी जग जयंत, आज भाळीरे, आज भाळी रे॥ शांति छटा खूब निहाळी,थइ दिवाळी रे, थइ दिवाळी रे ॥ आदि० ॥ २ ॥.धर्म प्रवीण सुबोध सत्य, प्रमोद आपे रे, प्रमोद आपे रे॥ महिमा तारो अजब स्वामी, कर्म कापे रे,कर्म कापे रे ॥ आदि० ॥३॥ भास्कर तुं मोह तिमिर हारी, रसिक तारी रे, रसिक तारी रे ॥ मूर्ति प्यारी लागे सारी,भव(भय) वारी रे, भव (भय) वारी रे॥ आदि० ॥ ४ ॥ झघडीयामां तुं विराजे, जग जस व्याप्यो रे, जस व्याप्यो रे॥ कैलास जेवो उज्वल दीपे,चित्तमां स्थाप्यो रे,चित्तमां स्थाप्योरे॥आदि. ॥ ५ ॥ ललितांग तारा दीपे, अजित थयो रे, अजित थयो रे ॥ आत्मकमल लब्धि दायी, तुं जग जयो रे, तुं जग जयो रे॥ आदि०॥६॥(इति)

॥ श्री शांतिनाथ जिन स्तवन ॥

(झट जाओ चंदन हार लावो, घुंगटपट० –ए चाल)

भवि भावे देरासर आवो, जिणवर जय बोलो ॥ पछी पूजन करी शुभ भावे, हृदय पट खोलोने (अचली) (साखी) शिवपुर जिनथी मागजो, मागी भवनो अंत ॥ लाख चोराशी वारवा, क्यारे थइशु प्रभु संत ॥ भवि एम बोलोने ॥ भवि० ॥ १ ॥ (साखी) मोंघी मानव जिंदगी, मेळवो प्रभुनो जाप ॥ जपी चित्तथी दूर करो, तमे कोटी जनमना पाप ॥ हृदय पट खोलोने ॥ भवि० ॥ २ ॥ (साखी) तुं छे मारो साहिबो, ने हुं छु तारो दास ॥ दीनानाथ मुज पाळीने, प्रभु आपोने शिवपुर वास ॥ हृदय पट खोलोने ॥ भवि० ॥ ३ ॥ (साखी) ठाणी गामनो गर्जीयो, नामे शांति

जिणंद॥आत्मकमलमां ध्यावतां,शुद्ध मले लब्धि-
नो वृंद ॥ हृदय पट खोलोने॥ भवि०॥४॥ (इति)

॥ श्री नेमनाथ जिन स्तवन ॥

(तोरणथी रथ फेरी चाल्या कंथरे प्रीतमजी,
आठ भवोनी प्रीतडी तोडी०—ए-चाल)

॥ तोरण आवी रथ पाछो केम फेरो रे ॥
वालाजी ॥ संयम ल्यो तो साथे अमने तेडो ॥
मारा वालाजी ॥ उभां उभां अरज करे सहु लोक
रे ॥ वा० ॥ बोल कोल किम करीने थाशे
फोक॥ मारा० ॥ १ ॥ नेमजी तमें तो लीलाना
छो साथी रे ॥ वा० ॥ कीडीना रोक्या केम
रेहशो हाथी ॥ मारा० ॥ नेमजी तमें तो धरी
रह्या एक ध्यान रे॥ वा० ॥ आवडलुं ते किहाथी
आव्युं ध्यान ॥ मारा० ॥ २ ॥ नोधारां ते केने
ओथे रेहशुं रे ॥ वा० ॥ हियडलानां दुःखडां

केने केहेशुं ॥ मारा० ॥ उदयरतनना रसिया वाल्म नेम रे ॥ वा० ॥ राजिमतीना सीधा वछित प्रेम ॥ माहारा वालाजी ॥ ३ ॥ (इति)

श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन.

(मल्लिनाथजी विना चित्तडुं न रमे-ए चाल)

प्यारो लागे मने सारो लागे, दरीशनमा गभीरोजी प्यारो लागे, सोना केरी झारीया ने माही भर्या पाणी, न्हवण करावुं मेरा जिनजीके अंग॥ दरिशन० ॥ १ ॥ केशर चदन भर्या रे कचोळा, पूजा करु मेरा प्रभुजी के अंग ॥ दरिशन० ॥ धूप दान घटा अनुहद हे, ल्की ल्की दीप नमावत हे ॥ दरिशन० ॥ २ ॥ फुल गुल्लानकी आंगी वनी हे, हार पहेरावुं मेरा जिनजीके अंग ॥ दरिशन० ॥ आनंदघन प्रभु चरन पथमे, ज्योतिमें ज्योत मील्यावत हे॥ दरिशन०॥३॥(इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(राग भैरवी-शंखेशा शिवसुख दिलाना होगा—ए चाल)

पार्श्व शंखेश्वर स्वामी जिणंद्वर!, नही विसरुं विसरामी जिणंद्वर, नही विसरुं विसरामी जिणंद्वर ॥ पार्श्व शंखेश्वर० ॥ १ ॥ पार्श्वको जपते कर्म को खपते, बनते अमरपद धामी, जिणंद्वर ॥ पार्श्व० ॥ २ ॥ प्रभुके नामसे क्रोड मंगल है, पद पद ऋद्धि ठामी, जिणंद० ॥ पार्श्व० ॥ ३ ॥ प्रातः पावन नाम सिमरतां, पूरत है मनकामी, जिणंद्वर. ॥ पार्श्व० ॥ ४ ॥ जादव गणकी जरा हटाई, हरदो हमारी स्वामी, जिणं० ॥ पार्श्व० ॥ ५ ॥ पार्श्व सिमरते वो नही मरते, जिन गुण गणको पामी ॥ जिणं० ॥ पार्श्व० ॥ ६ ॥ आत्मकमल सुम लब्धि माला, खूब सुगंधी जामी ॥ जिणंद्वर॥पार्श्व शंखे०॥७॥(इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(वासुपूज्य विलासी, चपाना वासी – ए चाल)

शिवसुख दाता, भवजल त्राता, पारसनाथ जिनंद ॥ प्रभु जग जन भ्राता, केवल दाता, निज गुण राता–पारस० ॥ (अंचली) अश्वसेन कुल दीवडो रे, राणी वामानो जात ॥ नमीये एह जिनराजने रे, लंछन भोगी विख्यात रे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ नवकर उंची सोहती रे, नीलमणि सम काय ॥ एकमो चर्पनु जाउलुं रे, निरखत हर्ष न माय रे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ कमठे रची तुम उपर रे, घोरघटा जलधार ॥ क्षोभ नहीं तुम त्या थया रे, अहो तुम धैर्य अपार रे ॥ प्रभु ० ॥ ३ ॥ नाम तमारु मग रता रे, नहिं छिन में काज ॥ कलियुगमा तुम जागतो रे, अतिशय महिमा आज रे ॥ प्रभु०

॥ ४ ॥ भव्य छबी तुम जोइने रे, उलसे छे मुज मन्न ॥ विस्मयकारक अतिशय धारी, तुजने छे प्रभु धन्य रे ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ अजब दया छे ताहरी रे, जेनुं कथन न थाय ॥ जलतो अहि तुम महेरथी रे, धरणीधर पद पाय रे ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥मेहर करो इम दासपे रे, तारो दीन दयाल ॥ सकल सिद्धि मुज आपीने रे, करीये सोभाग निहाल रे ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(ढुंढ फिरा जग सारा, जग सारा – ए चाल)

पार्श्वनाथ सुखकारा, सुखकारा जिनपति पूजो भावसे(आंचली)ज्ञान अनंत के है प्रभु धारी, कर्म रोग सब दूर निवारी, सूरज पेरे तेजधारा तेजधारा ॥ जिनपति पूजो भावसें ॥ १ ॥ भव समुद्रमें पडते को राखे, शुद्ध मारग प्रभुजी नित दाखे,

करे जगत उपकारा उपकारा ॥ जिनपति पूजो भावमें ॥ २ ॥ कमठ हठीको दूर निवारा, तत्व वताके छिन में उगारा, अहो दयाके प्रभूधारा प्रभूधारा ॥ जिनपति पूजो भावसें ॥ ३ ॥ पार्श्व यक्षसे पूजित पाया, पद्मावती धरणेन्द्रको भाया, चदो ऐसे प्रभूप्यारा प्रभूप्यारा ॥ जिनपति पूजो भावसें ॥ ४ ॥ एक ही चित्ते नाथ पुजनसे, वार वार फिर ध्यान करनसे, होने करम छुटकारा छुटकारा ॥ जिनपति पूजो भावसें ॥ ५ ॥ महाप्रभावि है इन युग में, पूरे मनोरथ सारे छिन में, चंद सौभाग्य नेहधारा नेहधारा ॥ जिन पति पूजो भावसें ॥ ६ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर जिन स्तवन ॥

(शुं कहुं कथनी मारी हो राज, शु कहुं ० ए चाल)
महावीर जिनवर देव हो राज !, तारोरे

शरणे आव्यो ॥ तारो तारो प्रभु मुज तारो हो राज !, तुज श्रद्धा दिल लाव्यो ॥ (एआंकणी)
सात्विक परामक्ति प्रगटो, मुज मंदिरमां पधारो ॥
तुज विण बीजुं जगमां न इच्छुं, भावेने मुजने सुधारो हो राज ॥ ताह्यरे० महावीर० ॥ १ ॥
जेवो तेवो पण हुं छुं तारो, मुजने पार उतारो ॥
प्राणांते पण पकड्या न छोडुं, उधर्या विण नही आरो हो राज ॥ ता० महा० ॥ २ ॥
मागण पेठे हु नही मागुं, तुं छे प्राणथी प्यारो ॥
तुज स्वरूप थै रहेवुं ए निश्चय, विनतडी अवधारो हो राज ॥ ता० महा० ॥ ३ ॥ माहरुं ताहारुं रूप न जुदुं, हवे न जाउं हुं हार्यो ॥
आतम ते परमातम नक्की, निश्चय एवो धार्यो हो राज ॥ ता० महा० ॥ ४ ॥ आतममां आनंद प्रगटावो, जन्म मरण दुःख वारो ॥ बुद्धिसागर

आत्म महावीर, प्यारामा तु प्यारो हो राज ॥ ताघेर० महावीर० ॥५॥ (इति)

॥ श्री महावीर जिन स्तावन ॥

(ए गुण वीर तणो न विसार, सभारु दिन रात रे–ए चाल)

ॐ अर्हं महावीर जिनेश्वर, जाप जपु दिन रात रे ॥ प्रभु विण बीजु काइ न इच्छु, मात पिता तुं भ्रात रे ॥ ॐ अर्हं० ॥ १ ॥ परा पश्यति मध्यमा वैखरी, जापे टळे सहु पाप रे ॥ राग द्वेष न पासे आवे, जाप जपता अमाप रे ॥ ॐ अर्हं० ॥ २ ॥ ज्या त्या अतर बाहिर धारणा, त्राटक तुज उपयोग रे ॥ जीभ न हाले मानस जापे, प्रगटे आनद भोग रे ॥ ॐ अर्हं० ॥ ३ ॥ जड चेतन सहु विश्वमा प्रभुनी, सत्ता धारणा योग रे ॥ आत्म महावीर सत्ता

प्रगटे, थातो कर्म वियोग रे ॥ ॐ अर्ह० ॥ ४ ॥ प्रभु तुज जापना धूपथी नासे, दुर्बुद्धि दुर्गंध रे ॥ क्षण क्षण आतम शुद्धि वृद्धि, आतम थाय अबंध रे ॥ ॐ अर्ह० ॥ ५ ॥ प्रभु जापे प्रभु घटमां प्रकाश्या, प्रगटी सुखनी खुमारी रे ॥ "बुद्धिसागर" महावीर लगनी० प्रगटी न टले उतारी रे ॥ ॐ अर्ह० ॥ ६ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर जिन स्तवन ॥

([illegible] मन [illegible] – ए चाल)

वीर महावीर उपकारी, त्रिशला नंदन जयकारी ॥ सिद्धारथ कुल मनोहारी रे, ज्ञानी गुण गण धारी ॥ [illegible] [illegible] पूरण [illegible] रे, महावीर० ॥ तुज [illegible] [illegible] रे ॥ महावीर० ॥ १ ॥ [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] न [illegible] [illegible] रे ॥ महावीर०

॥ २ ॥ फळ पूजा करता भावे, उपयोगे शिव-फल थावे ॥ भक्ति नकामी नहीं जावे रे ॥ लगनी० ॥ ३ ॥ समकितनी सहु करणी, मोक्ष महेलनी निःसरणी ॥ पूजादिक निर्जर नरणी रे॥ लगनी० ॥ ४ ॥ तुझ श्रद्धा प्रीति साची, चडनी माया सहु काची ॥ माची रहयो तुजमा रानी रे ॥ लगनी० ॥ ५ ॥ निष्कामे सेवाभक्ति, करता प्रभु प्रगटे शक्ति ॥ "बुद्धिसागर" प्रभु व्यक्ति रे ॥ लगनी० ॥ ६ ॥ (इति)

॥श्री महावीर जिन प्रार्थना (स्तवन)॥

नजर टुक महेरकी करके, दिखा दोगे तो क्या होगा॥
करो करुणा किनारेपर०—ए चाल (कव्वाली)

जगतमा सौ यात्रामा, प्रभु महावीर ! तु मोटो, हठाव्यो मोहने जल्दी, म्हने हो वीरनु शरणुं. ॥ १ ॥ अति गभीरता तारी, गमन शाळा

विषे कीधुं; जणाव्युं नहि स्वयं ज्ञानी, म्हने हो वीरनुं शरणुं. ॥ २ ॥ जणावी मातृभक्ति बहु, अरे ! जननी उदर मांहि; प्रतिज्ञा-प्रेम जाळवा, मने हो वीरनुं शरणुं. ॥ ३ ॥ अरे ! ओ ! ज्येष्ठ बंधुनी, खरी दाक्षिण्यता राखी; गुणो गणतां लहुं नहि पार, मने हो वीरनुं शरणुं. ॥४॥ यशोदा साथ परणीने, रह्या निर्लेप अंतरथी; थशे क्यारे दशा एवी, मने हो वीरनुं शरणुं. ॥५॥ जगत उद्धार करवाने, यतिनो धर्म लीधो रहे; सह्या उपसर्ग समभावे, मने हो वीरनुं शरणुं. ॥६॥ अलौकिक ध्यान तो कीधुं, गया दोषो थया निर्मल; थया सर्वज्ञ उपकारी, मने हो वीरनुं शरणुं. ॥ ७ ॥ घणा उपदेश दीधा तें, चतुर्विध संघने स्थाप्यो; तने तें ओळखी लीधो, मने हो वीरनुं शरणुं. ॥८॥ अनंतानंद लीधो तें, जीवन

तारूं निचारु हुं; "उद्वयब्धि"बाळ हु तारो,शरण तारू–शरण तारूं. ॥९॥(इति)

॥ श्री महावीरस्वामीनुं स्तवन. ॥

(मधुरामा खेल खेली आव्या हो श्याम०–ए चाल)

वीर तारु नाम व्हालुं लागे हो स्वाम, शिव-सुख दाया (अचली) क्षत्रिय कुडमा जनम्या जिणद्जी, दिक कुमरी हुलराया, हो स्वाम ॥ शिव० ॥ १ ॥ माथाना मुगुट छो आखेना तारा, जन्मथी मेरु कपाया, हो स्वाम ॥ शिव० ॥ २ ॥ मित्रोनी साथे रमत रमता, देवे भुजग रुप ठाया, हो स्वाम ॥ शिव० ॥ ३ ॥ निर्भय नाथे भुजग फेंकी, आमन्क्रीडाने मोहाया, हो स्वाम ॥ शिव० ॥ ४ ॥ महावीर नाम देव-नाथे त्या दीधु, पडित विस्मय पाम्या, हो स्वाम ॥ शिव० ॥ ५ ॥ चारित्र लइ प्रभु कर्मो

हटाई, केवलज्ञान प्रगटाया, हो स्वाम ॥ शिव० ॥ ६ ॥ हिंसा मृषा चोरी मैथुन वारी, परिग्रह चूरा बताया, हो स्वाम ॥ शिव० ॥ ७ ॥ आत्म कमलमां शैलेशी साधी, शिवलब्धि उपाया, हो स्वाम ॥ शिव० ॥ ८ ॥ (इति)

(श्री महातीर्थ पावापुरी)

॥ श्री महावीर निर्वाण तथा श्री गौतम केवलज्ञाननुं स्तवन. (स्तुति) पद ॥

(मथुरामां खेल खेली आव्या हो श्याम०—ए चाल)

पावापुरीमां पधारी, हे ! नाथ निर्वाण पाम्या ॥ निर्वाण पाम्या अघाती खपाया, मुक्ति नीलय सिधाया ॥ हे ! नाथ निर्वाण० ॥ (अंचली) आनंदघन पद वरीया प्रभुजी, ज्योति स्वरुपमां रमीया ॥ हे ! नाथ० ॥ १ ॥ निर्वाण पाम्या वीर प्रभुजी, जाणीने देव विचरीया ॥ हे !

नाथ० ॥ २ ॥ जय जय नंदा जय जय भद्दा प्रभुजी, शिबीका लट उचरीया ॥ हे ! नाथ० ॥ ३ ॥ निरानद देवडेची प्रभुजी, ओच्छव रगने हरीया ॥ हे ! नाथ० ॥ ४ ॥ देवानंडा नाम रजनी प्रभुजी, शिन वधु मन गमीया ॥ हे ! नाथ० ॥ ५ ॥ दीपमालीका महोत्सव प्रभुजी, निर्वाण दिनथी धरीया ॥ हे ! नाथ० ॥ ६ ॥ गौतम गुरु गुणवता प्रभुजी, दुर करी शिन वरीया ॥ हे ! नाथ० ॥ ७ ॥ मुक्ति नीलयमा वसीया प्रभुजी, देव देवीने उचरीया ॥ हे ! नाथ० ॥ ८ ॥ शिनसुदरीने वरीया प्रभुजी, गौतम मुणी थरथरीया ॥ हे ! नाथ० ॥ ९ ॥ हा ! हा ! भद्दत ! गया क्या प्रभुजी, दुःख हृदय उभरीया ॥ हे ! नाथ० ॥ १० ॥ इद्रभूति गणधर गुरुनी, वीर ! वीर ! मन वरीया ॥ हे ! नाथ०

॥ ११ ॥ ज्ञांत थया वीतराग प्रभुजी, प्रशस्त रागने वरीया ॥ हे ! नाथ केवल पाम्या ॥ १२ ॥ केवल वरीया घातीने हरीया, ज्ञान भानु मन धरीया ॥ हे ! नाथ केवल० ॥ १३ ॥ प्रतिपदाना प्रभाते गुरुजी, आनंद जगने करीया ॥ हे ! नाथ केवल० ॥ १४ ॥ नूतन वर्षना दानी गुरुजी, महोत्सवथी सहु भरीया ॥ हे ! नाथ केवल० ॥ १५ ॥ शासन शोभा गौतम गुरुजी, ज्ञान दिवाकर दरिया ॥ हे ! नाथ केवल० ॥१६ ॥ मेघ ध्वनी रस वाणी गुरुजी, तारी अनेकने तरीया ॥ हे ! नाथ केवल० ॥ १७ ॥ आयु-पनो क्षय करी गुरुजी, अक्षय सुख उर धरीया ॥ हे ! नाथ निर्वाण पाम्या ॥ १८ ॥ निर्वाण पाम्या अघाती खपाया, मुक्ति नीलय सिधाया॥ हे ! नाथ निर्वाण० ॥ १९ ॥ आतम लक्ष्मी

वरीया गुरुजी, वल्लभ हर्ष उमरीया ॥ हे ! नाथ निर्वाण० ॥ २० ॥ किंकर मित्रने तारो गुरुजी, चरण कमल शीर धरीया ॥ हे ! नाथ निर्वाण पाम्या ॥ २१ ॥ (इति)

॥श्री सिद्धाचलजी का स्तवन॥

(काली कमली वाले तुमपे लाखो सलाम–ए चाल)

सिद्धगिरिपर आदि प्रभुको प्रातः प्रणाम ॥ (अंतरी) तु स्वामी मे दीन हु प्यारा, तेरे बीन मुझ नहि निस्तारा ॥ आना तुम दरबार, प्रभुको प्रातः प्रणाम ॥ सिद्ध० ॥ १ ॥ जहान भरमे तीरथ उदारा, भव्य हृदयका यही मतारा ॥ तीरथ तारणहार, प्रभुको प्रातःप्रणाम ॥ सिद्ध० ॥ २ ॥ दिलचस्प दिलबर दिलधारा, तनमें दिलका तुना सुधारा ॥ चरणी नारनार, प्रभुको प्रातः प्रणाम ॥ सिद्ध ० ॥ ३ ॥ ए

गिरि मेरे नैनका तारा, गुण मोतनका ए मुझ हारा ॥ केवल कमलांकार, प्रभुको प्रात:प्रणाम ॥ सिद्ध० ॥ ४ ॥ लाख चौराशी योनि वारे, कर्म सकल को ए गिरि जारे ॥ ए गिरि मुज दिलदार, प्रभुको प्रात:प्रणाम ॥ सिद्ध० ॥ ५ ॥ आत्मकलमें गिरि गुण गाना, लब्धि सूरि यात्रा फल पाना ॥ सर्व तीरथ सरदार, प्रभुको प्रात: प्रणाम ॥ सिद्ध० ॥ ६ ॥ (इति).

॥ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन. ॥

(सोभा सोरठ देशनी शोरे कहुं? ए चाल.)

मणा आले आनंदमां नही रे रही, दीठो सिद्धाचळनो दिदार ॥ जाउं वारी रे ॥ आदीश्वर भेट्यां दुःख वारणा. (अंचली.) हुं तो समकित सुवर्ण थालमां, मूकी शील कटोरी सुखकार ॥ जाउं वारी रे ॥ आदी० ॥ १ ॥ दान तप भाव शुभ द्रव्यथी, हुं तो आदीश्वर पूजुं

हितकार ॥ जाउं० आदी० ॥ २ ॥ हीरो चारित्र सुंदर दीपतो, ज्ञान तेजे करी मनोहार ॥ जाउ० आदी० ॥ ३ ॥ मूल्य अमूल्य मोक्ष मने आपजो, लाख चोराशी योनि दुःख वार ॥ जाउ० आदी० ॥ ४ ॥ मारा आत्मकमलमा नसानीयो, रूडो आदिजिणंद जयकार ॥ जाउं० आदी० ॥५॥ गुण सिद्धाचळना गावता, पाम्यो लब्धिसूरि सुख-कार ॥ जाउ० आदी० ॥ ६ ॥ (इति)

॥ गिरनार मंडन श्री नेमनाथ स्तवन ॥

(काली कमली वाले तुमपे लाखो सलाम-ए चाल)

रैवत गिरिना वासी जिनने क्रोडो प्रणाम (अंचली) नेमि जिनेश्वर आनंददायी, ध्याता भविजन कर्म खपाई ॥ पामे छे शिवधाम, जिनने क्रोडो प्रणाम ॥ रैवत० ॥ १ ॥ साचो ल्हाहो शिवनो लेवा, राजुलने मह्रेलो देवा ॥ तोरण

आव्या श्याम, जिनने० रैवत० ॥ २ ॥ वार्षिक दान जिणंदे दीधुं, सहसावनमां संयम लीधुं ॥ पाम्या केवलज्ञान, जिनने ० ॥ रैवत० ॥ ३ ॥ अध माचार अति प्रभु मारो, एक आशरो मारे तारो ॥ तुंही एक आधार ॥ जिनने० ॥ रैवत० ॥ ४ ॥ भवभ्रमणा दुःखथी प्रभु थाक्यो, कर्मपिंड हवे मारुं पाक्यो ॥ हवे नथी कांइ वार, जिनने० ॥ रैवत० ॥ ५ ॥ नेमि भेटन नेमि आवे, शीहोर शहेरथी संघ लावे ॥ दर्शन करवा काज, जिनने० ॥ रैवत० ॥ ६ ॥ संवत ओगणीस एकाणु वर्षे, पोश वदी तेरशना दिवसे ॥ भेटया नेमिकुमार, जिनने० ॥ रैवत० ॥ ७ ॥ आत्म कमलमां जिनवर सेवा, आपे मीठा मुक्ति मेवा ॥ लब्धि वरे शिवनार ॥ जिनने कोडो प्रणाम ॥ रैवत ० ॥ ८ ॥ (इति)

॥ श्री केशरीयानाथ स्तवन ॥

(रागधनाश्री -पारसनाथ आधार मेरे प्रभु एचाल)

केशरीया भगवान ॥ धुलेवा धणी ॥ गाउं हुं त्हारुं गान ॥ दोषी हु छु अज्ञान ॥ धुलेवा धणी ॥ केश० ॥ १ ॥ नालक जाणी बाल उगारो, भूलो करी में क्रोड ॥ धु० ॥ साच प्रभु तुझ शरण स्वीकार्युं, करे न तुज कोड होड ॥ धु० केश० ॥ २ ॥ आशा पूरक देव दयानिधि, तार तार मुज तार ॥ धु० ॥ अपराधो मह्रु मारु करो मुज, कर मारो उद्धार ॥ धु० केश० ॥ ३ ॥ शरणे आनेला मुजने तारो, साचा तारण हार ॥ धु० ॥ चमत्कारी जगमा पकायो, मने तारो आधार ॥ धु० केश० ॥ ४ ॥ दुर्गुण टाळो सद्गुण आपो, रहेशो हजरा हजूर ॥ धुले० ॥ बुद्धिसागर केशरीया प्रभु, वंदन आनंद पूर ॥ धुलेवा० केशरीया० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री तीर्थपति जिन स्तवन. ॥

(मेरे मौला बुलाले मदीने मुझे – ए चाल)

आयो शरणे प्रभुजी मने तारो जरी, शरणागत वत्सल मने राखो धनी ॥ आयो शरणे० ॥ (शेर) दुःखमय संसारमां, भमीयो अनादी काल हुं ॥ पुण्यना प्रभावथी, आयो चरणमां नाथ हुं ॥ (चाल) दीनानाथ दया करी तारो धनी ॥ आयो० ॥ १ ॥ (शेर) विश्वना वल्लभ प्रभु हे !, तरण तारण जहाज तुं ॥ ॥ अरजी दयाळु दासनी, उरमां धरी उध्धार तुं ॥ (चाल) आधि व्याधिथी मुक्त करोने जरी ॥ आयो० ॥ २ ॥ (शेर) क्रोध माया जाळनी, जंजाळमां अथडावुं हुं ॥ विषयो तणा विषपानथी, ससारमां पछडावुं हुं ॥ (चाल) तारो तारो दयानिधि महेर करी ॥ आयो०

॥ ३ ॥ (शेर) अकलंक अविकारी विभु, दीन दासपर दया लाव तु ॥ भव पासना ए त्रासथी, भज पार कर हे ! नाथ तु ॥ (चाल) आत्म लक्ष्मी वल्लभ मने आपो धनी ॥ आयो० ॥ ४ ॥ (शेर) विश्व व्यापी हे ! विभो, दानेश्वरी दातार तु ॥ समारना भय कुपथी, कर शान्ती कर मुज पार तु ॥ (चाल) दास मित्रना भवदुःख कापो हरी॥आयो०॥ ५ ॥(इति)

॥ श्री तीर्थपति जिन स्तवन ॥

(जिनधर्मका डंका आलममें, बजवा दीया महावीर स्वामीने – ए चाल)

जिनराज तमारी मुरति तो, अम हृदय कमलमा शोभी रही (अचली) तुम ध्यानथी ध्याता ध्येय बनी, गुण गाइ शिव पटरानी वरी ॥ मुक्तिमा जइ निसगमी बनी, वेगे शिवमगु लट-

कारी वरी ॥ जिन० ॥ १ ॥ जिनराज प्रताप तमारो धनी, धनवान बनी धनी दास करी ॥ अनहारी पद जे आप वरी, ते आपो दासने प्रेम धरी ॥ जिन० ॥ २ ॥ करूणासागर छो आप धनी, करुणा करी दासने पार करी ॥ अवदात गुणोना दानी बनी, दानेश्वरी दानने आपो जरी ॥ जिन० ॥ ३ ॥ खजाने खोट नथी हे! धनी, धन माल तजी मुक्तिमां वरी ॥ ए शुद्ध गुणोना स्वामी बनी, अंतरयामी द्यो दान जरी ॥ जिन० ॥ ४ ॥ भव पार अमारो थाय धनी, तुम सेवाथी अघ जाय हरी ॥ मित्र मांगे तुम चरण परी, आपो शिव लक्ष्मी मुजने धनी ॥ जिनराज० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री सामान्य जिन स्तवन ॥

निरंजन सांइआं रे, साइ मेरा इकसा मुजरा

लेत ॥ (अचली) तुम हो तीरथका देवता रे, हम गिरिवरका मोर ॥ रुम झुम रुम झुम मेहुला वरसे, काइ ठम ठम नाचे मोर ॥ निरजन० ॥ १ ॥ हम गुण काली कोयली रे, प्रभु गुण आना मोहोर ॥ माजरोंके जोरसे काइ, करने लाग्या सोर ॥ निरजन० ॥ २ ॥ तुम हो अमर देवता रे, हम केवरका छोड ॥ कनक कचोली हाथमा काट, पृजा करु रग रोल ॥ निरजन० ॥ ३ ॥ तुम हो मोतनकी लरी रे, हम गुण उडा भोर ॥ रुपचदकी एही अरज हे, दिलभर दरिसन दोर ॥ निरजन० ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री सामान्य जिन स्तवन ॥

(खेलीये होरी चाले खेलीये होरी-ए चाल)

देखोरे जिणदा प्यारा, मुणिद प्यारा, प्यारा जिणंदा भगवान ॥ देखो० (ए आकणी) सुदर

रुप स्वरुप विराजे, स्वरु० जगनायक भगवान ॥ देखो० ॥ १ ॥ दरस सरस निरख्यो जिनजीको, निर० दायक चतुर सुजान ॥ देखो० ॥ २ ॥ शोक संताप मिट्यो अब मेरो, मिट्यो० पायो अविचल भाण ॥ देखो ०॥३॥ सफल भइ मेरी आजकी घडीयां, आज० सफल भये नैनुं प्राण ॥ देखो० ॥ ४ ॥ दरिसन देख मिट्यो दुःख मेरो, मिट्यो० आनंदघन उपकार ॥ देखो०॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री सुविधीनाथ जिन स्तवन. ॥

(बतादे सखी कोन गली गयो श्याम-ए चाल)

में कीनो नही तो विन ओरशुं राग ॥ दिन दिन वान चढे गुन तेरो, जिउं कंचन परभाग ॥ ओरनमें हे कषायकी कालिका, सो क्युं सेवा लाग रे ॥ में कीनो० ॥ १ ॥ राजहंस तु मान सरोवर, ओर अशुचि रुचि काग ॥ विषय

भुजगम गरुड तुंहि हे, ओर विषय विषनाग रे॥ मं० ॥ २ ॥ ओर देव जल छिल्लर सरिसे, तु तो समुद्र अथाग ॥ तु सुरतरु जग वंछित पूरण, ओर तो सूके साग रे ॥ मं० ॥३॥ तु पुरुषोत्तम तुही निरंजन, तु शंकर वडभाग ॥ तु ब्रह्मा तु बुद्धि महाबल, तुही देव वीतराग रे॥ मं० ॥४॥ सुविधिनाथ तेरे गुन फूलनको, मेरो दिल हे बाग ॥ जस कहे भमर रसिक होई तामें, लीजें भक्ति पराग रे ॥ मं० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनु स्तवन ॥

(देखो यनमा धन्वले–अथवा–व्याने गडे छे तु सुन्दरी–ए चाल)

वीर जिनेश्वर वन्दना, होजो वारवार ॥ लखी लखी विनडं प्रमथी, मारा प्राणा धार ॥ वीर० ॥१॥ भटको भवमा भूलथी, वेठ्या दुःख अपार॥ जन्म जरा मरणादिके, स्थिरता नहि लगार ॥

वीर० ॥ २ ॥ पुण्ये मनुभव पामीयो, मल्या त्रिभुवन नाथ ॥ शरण शरण साचुं ग्रह्युं, झालो सेवक हाथ. ॥ वी० ॥ ३ ॥ साची सेवा स्वामिनी, बीजुं आलपंपाल ॥ तुज दर्शन राची रहुं, मेघ चातक बाळ. ॥ वीर० ॥ ४ ॥ बालकना बहु दोषने, टाळे तात कृपाळ ॥ त्राता मारा छो सदा, दोषो टाळो दयाळ. ॥ वीर० ॥ ५ ॥ बाळकमानी आगळे, बोले मननी वात ॥ तुम आगल मुज विनति, मानो ए अवदात. ॥ वीर० ॥ ६ ॥ तारो वाचजी बाळकने, सरशे सघळां काज ॥ सेवकने नहि तारनां, जाशे आपनी लाज. ॥ वीर० ॥ ७ ॥ चंदनबाळा बाकुले, लीधु शिवपुर राज ॥ अपराधी केइ तारीया, करजो सेवक साज. ॥ वीर० ॥ ८ ॥ शरणागत मुज साहिबा, साचो तुज विश्वास ॥ चरणकमळनी सेवना, पुरे सघळी आश. ॥ वीर०

॥९॥ वीर नीर हृदये वसो, शरण साचु एक॥ बुद्धिसागर वाळने, वीर भक्तिनी टेक वीर० ॥ १० ॥ (इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनु स्तवन ॥

(वारी जाउ रे सावरीया तुमपर वारणारे–ए चाल)

व्हाला त्रिशलानदन वीर जिनेश्वर तारजो रे, जाणी पुत्र तुमारो बीननडी अवधारजो रे, ॥ व्हाला०(आकणी)मत गमतमा जीवन गाळु,काम क्रोधथी तनडु बाळु, प्यारा करुणामृत सिंचनथी ताप निवारजो रे ॥ व्हाला० ॥ १ ॥ ज्ञानविना हृदये अधारु, करशे तुम विण को मुज सारु, दुःखकर कामक्रोध विषयादिक शत्रु सहारजो रे. व्हाला०॥ २ ॥ भक्ति करु आगिर माटे, चलवा मोक्ष नगरनी वाटे,बालक करीने अके जिन चेमारजो रे ॥ व्हाला० ॥ ३ ॥ प्रेमविना लुखी

छे भक्ति, गुणापर्याय विना जेम व्यक्ति, दीन दयालु अशुभ वृत्ति ठारजो रे.॥व्हाला० ॥ ४ ॥ शरण एक तारुं छे साचुं, निशदिन तुज भक्तिथी राचुं, बुद्धिसागर बालकने उगारजो रे. ॥ व्हाला० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री शांतिनाथजीनुं स्तवन. ॥

(पारसनाथ आधार मेरो प्रभु पारस० ए चाल)

जय जय शांति जिणंद, जगमां जय जय शांति जिणंद ॥ आप तर्याने परने तारो, सेवे चोसठ इंद्र. ॥ जगमां० ॥ १ ॥ पूरण शांति प्रभे लीधी, दोष करी सहू दूर ॥ जगमां० ॥ जन्म जरा मरणादिक वारी, सुख पाम्या भरपूर. ॥ जगमां० ॥ २ ॥ समवसरणमां देशना देइ, तार्या प्राणी अनेक ॥ जगमां० ॥ सेवक तारो कृपा करीने, आपो सत्य विवेक. ॥ जगमां० ॥ ३ ॥

पाप वर्यां मे भवमा भरे, गणता नावे पार. ॥ जगमा० ॥ शरण वर्यु में तारु स्वामी, हाथ ग्रहीने तार. ॥ जगमा० ॥ ४ ॥ नाम स्थापना द्रव्य भावथी, ध्याता शिवसुख थाय ॥ जगमा० ॥ बुद्धिसागर ने कर जोडी, वंदे त्रिभुवन राय ॥ जगमा० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री शांतिनाथ जिन स्तवन ॥

(रसीयाजी गिरधारी० ए-चाल)

॥ बलिहारी बलिहारी बलिहारी, जगनाथ हो जाउं तोरी, शांतिजिन शांति सेवक दीजियेजी (ए आकणी) काल अनादि केरा, फिरता हु जगमें फेरा ॥ अंत न आयो जिन उपकारी॥ जगनाथ० ॥ १ ॥ पुण्य उदय पायो, चरण शरण दायो ॥ और न तुम सम जग दातारी ॥ जगनाथ० ॥ २ ॥ चिद्घन नामी स्वामी,

शिवपद् गामी पामी ॥ खोट न मानु अब हित-कारी ॥ जगनाथ० ॥ ३ ॥ दीन अनाथ नाथ, ग्रहियो में हाथ साथ ॥ दोष न रंचक गुण भंडारी ॥ जगनाथ० ॥ ४ ॥ आतम सुख आपो, वल्लभ दुःख कापो, ॥ फेर न लेउं भव अवतारी ॥ जगनाथ० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री मल्लिनाथजीनुं स्तवन ॥

(भक्तिसे मुक्ति पावोंगे –ए चाल)

॥ मल्लिनाथ प्रभुके गुण गाउंगा, गुण गाउंगा गुण गाउंगा ॥ गानेसे मुक्ति पाउंगा ॥ मल्लि० ॥ (अंचली) मैं अनाथ तुम त्रिभुवन नाथा, एक दिन तुम सम थाउंगा ॥ मल्लि० ॥ १ ॥ कारण निमित्त प्रभु तुम साचे, मैं उपादान कहाउंगा। मल्लि० ॥ २ ॥ आरत रौद्र दूर निवारी, धरम शुक्ल चित्त लाउंगा ॥ मल्लि० ॥ ३ ॥ काम क्रोध

मद मोह उपाधि, सबको जड़से जलाउगा ॥ मल्लि०॥ ४ ॥ कुन्दन सम निज रूपको धारी, खोट रहित हो जाउगा ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥ अजर अमर अक्षय अविनाशी, आत्म लक्ष्मी प्रगटाउगा ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥ परमानद हर्ष चित्तधारी, वल्लभ ज्योति मिलाउगा ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥ (इति)

॥ श्री मुनिसुव्रतस्वामीनु स्तवन ॥

(सन्मी काटो लाग्यों रे मारे काळजे-ए चाल)

॥ प्रभु मुनिसुव्रत स्वामी विनवु, भव अटवीमा जीवडलो गभराय रे ॥ मुनि० ॥ १ ॥ प्रभु नारकीना दुःख बहु भार्खे, त्या तो मने परमाधामी उग्री दुःख थाय रे ॥ मुनि० ॥ २ ॥ माग्ये ह, त्याथी बहार आवीजो, होय दुःख पशु गतिमा मनुष्यमा पण थाय रे ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ प्रभु देवगतिमा दुःख दाखव्या, मत्-

भाग्ये मनुष्य थइने पाम्यो प्रभु पाय रे ॥ मुनि० ॥ ४ ॥ दर्शन तारुं मल्युं छे भाग्यथी, पाटण शहेरमां आत्म-कमले लब्धि गुणगाय रे ॥ मुनिसुव्रत० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवनं ॥

(मजा देते है क्या यार, तेरे बाल घुंगर वाले–ए चाल)

॥ नमन करुं पार्श्वनाथ भगवान, भवोदधि पार लगाने वाले॥ (ए आंकणी) पुरुषा दानी प्रभु पास, नहीं आस पास तुम वास ॥ आसा किनो जग दास, पास भविजनके हटाने वाले॥ नमन० ॥ १ ॥ लघुता प्रभुता करे नाथ, प्रभुता प्रभु नावे हाथ ॥ कीनो मैं लघुता साथ, नाथ भव पाथ तरानें वाले ॥ नमन० ॥ २ ॥ प्रभु वीतराग गुणवान, खरें भक्तोंके भगवान॥ करे सेवा फल निरवान, निजातम रूप धरानें वाले

|| नमन० || ३ || दीनोद्धारक जिनदेव, सुर नर नारी करे सेव || करे सिमरण भवि नित्य-मेव, परमपद मुक्ति पाने वाले|| नमन० || ४ || आतम लक्ष्मी प्रभु नाथ, करो नाथ अनाथ सनाथ || धरी हर्ष जोडी दोय हाथ, प्रभु वल्लभ गुण गाने वाले || नमन० || ५ || (इति)

|| श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ||

(राग कल्याण-जयजय नवपदा-ए चाल)

||जयजिनवर, प्रभुपार्श्व जयकर, नमन करू ध्यान धरू नाथ सुंदर || (अचली) नगर वनारस जन्म लियो प्रभु, अश्वसेन घर ठाम || वामानंदन नंद नरीनो, पूर्ण करो मुज काम जय० || १ || नाग बचाया जलता प्रभुजी, दिया स्वर्गमें वास|| धरणेन्द्र की पत्नी दीनी, किया बहुत उपकार || जय० || २ || हाथ जोडकर गही

विनती, उतारो भवपार ॥ शहेर पुनामें आप विराजो, श्रीशंखेश्वर पार्श्व ॥ जय० ॥ ३ ॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(आनंदाचा कंद हरी हा, देवकी नंदन० -ए चाल)

॥ हा त्रिभुवन नयनानंद प्रभुवर, वामानंदन पाहिला ॥ कमठासुर उपसर्गी ज्यानें, शांति दया गुण दाविला ॥ हा त्रिभुवन० ॥ १ ॥ दुस्तर भवनिधि तारक त्या विण, अन्नर जगी ना देखिला ॥ हा त्रिभुवन० ॥ २ ॥ षडरिपु सारे गांजिति वारे, सत्वर वारी या खला ॥ हा त्रिभुवन० ॥ ३ ॥ दासा आशा पुरवी प्रेमें, अक्षय पद देवा मला ॥ हा त्रिभुवन० ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनु स्तवन ॥

(खुने जीगरको पीते हय, बस गम्मे तेरे यार (अथवा) नहा छेडो गाली दुंगी रे, भरनेदे मोहे नीर-ए चाल)

॥ महावीर ! तमारी मनहर मुरती, देखी मन

हरखाय (ए आकणी) प्रभु त्रिशला माताना जाया, सिद्धारथ नृप कुल आया ॥ इद्राणी मळी हुल्राया, तोरी कचन वरणी काय ॥ महा० ॥ १ ॥ जळ कळस भरी न्हवरावु, पूजन करी अति हरखाउं ॥ भवभवना दुःख गमावु, मुज जन्म कृतारथ थाय ॥ महा० ॥ २ ॥ वळी सुंदर पुष्प मगावु, तेनी गुंथी माळ बनावु ॥ लई प्रभु कठे पहेरावु ॥ तारा सुरनर सेवे पाय ॥ महा० ॥ ३ ॥ भक्ति भरी भावना भावुं, गुण गानथी पावन थाउं ॥ निशिदिन तुम ध्यान धराउं, जेथी दुर्लभ समकित थाय ॥ महा० ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

(फरी फरीनी लग्न माझे-ए चाल)

॥ भव तर्या भव्य केई ते नद् गिरिवर ॥ पुंडरिक आदि गणधरा, केइ मुनिवरा, होय

शिववरा, कर्म संहारं ॥ ते वंदू गिरिवरं ॥ भव० ॥ १ ॥ सहु राज्य भोगने त्यजी, संयमी सजी, वन्या भूपजी, सिद्धि वधु नारं ॥ ते वंदू० भव० ॥ २ ॥ भगिनिशुं भोग आदरं, चंद्रशेखरं, लह्या गिरिवरं, भवाब्धी पारं ॥ ते वंदू० भव० ॥ ३ ॥ जे भवी भक्तियें भरी, चढे ए गिरि, तृतीय भव करी, तरे संसारं ॥ ते वंदू० भव० ॥ ४ ॥ शुकराज परें कर ग्रहो, आदिजिन अहो, स्तब्ध ना रहो, दास कर पारं ॥ ते वंदू गिरिवरं ॥ भव० ॥ ५ ॥ (इति)

॥श्री समेत शिखरजीनी होरी(स्तवन)

(चालो सोरट देश देखावो रसीया चालो–ए चाल)

॥ मधुवनमें धुम मची रंग होरी ॥ मधुवनमें० ॥ (अंचली) देश देशके यात्रा आवे, पूजा रचे प्रभु कर जोडी रे॥ मधु० ॥ १ ॥ गावत

राग धमाळ सुनावत, थैं थैं नाचत मालि गोरी रे ॥ मधु० ॥ २ ॥ ताल कसाल मृदंग बजावे, रण झण घुघुरी रमझोरी रे ॥ मधु० ॥ ३ ॥ केशर चंदन घसी घन गोरी, भरीय कटोरी रंग छोरी रे ॥ मधु० ॥ ४ ॥ पिचकारी भरे नन नरनारी, अबिर गुलाल बस भरी जोरी रे मधु० ॥ ५ ॥ जिनगुण गावत हरखे वधावत, मेरो प्रभुसुं लगी दोरी रे मधु० ॥ ६ ॥ समेत-शिखर तीरथ होरी खेलत, पायो दर्शन अनुभोरी रे ॥ मधुवनमें० ॥ ७ ॥ (इति)

॥ श्री केशरीयाजीनुं स्तवन ॥

(नाथ कैसे गज को बंध छोडायो– ए चाल)

॥ केशरीयाने डूबत जहाज तिरायो ॥ म्हाने थांकी रे जचनो आयो ॥ केश० (अंचली) भर समुद्रमें जहाज डूबत है, कोइ न आडो आयो ॥ शिवम नाम जपायो सो मार्थी, जहाज तीर

तीर लायो ॥ केश० ॥ १ ॥ राजा रे रावण भक्ति करनकुं, गिरि अष्टापद आयो ॥ नवा नवा नृत्य निरंतर करतां, गोत्र तिर्थंकर पायो ॥ केश० ॥ २ ॥ आदी रे नाम जप्यो अंजनाने, कैलास पर्वत पायो ॥ दीक्षा रे लेतां केवळ उपन्यो, शिवरमणी फळ पायो ॥ केश० ॥ ३ ॥ ऋषभ-देवकी महिमा रे भारी, कहेता नावे पारा ॥ इंद्र निरंजन चरणोकी सेवा, रामसरण गुण गाया ॥ केश० ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री केशरीयाजी नुं स्तवन ॥

(मारा पास जिणंदसुं प्रीतडली तनमनसे लागी रे -ए चाल.)

॥ म्हाने केसरीयाजीरी जातरा कराय लीजो रे ॥ म्हाने धुलेवाजीरो सरणो भेटाय लीजो रे ॥ (अंचली) आडा रे डुंगर रलियामणाने, परबत जंगी झाडी रे ॥ मुलक मेवाडमाही सोभे, नगर धुलेवा

भागी रे ॥ भेटाय०॥१॥च्यार देशका आवे रे जात-
रा, पूजा सुन रचावे रे ॥ सत्ता लाखकी अगीया
शोभे, पूजा करे नरनारी रे ॥ भेटा० ॥ २ ॥
कलुकालमें परमो भारी, जन सीमरे नरनारी रे ॥
कला सला करे जीवाने, राजा देवे अत भारी
रे ॥ भेटा० ॥ ३ ॥ तीन रुपका दर्शन भारी,
जन सीमरे नरनारी रे ॥ श्याम फजरकु और
रुप है, दुपारा मन न्यारी रे ॥ भेटा० ॥ ४ ॥
केसरीयाजीका दरीसन चाहु, मेरा पाप निवारु रे
॥ हरख हरख प्रभुका गुण गाउ, निजरा दरीसन
चाहु रे ॥ भेटाय लीजो रे० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ सामान्य जिन स्तवन ॥

॥ अब मोहे तारो तारो तारो, जिनवर तारणा रे ॥
मोहे तारो तारो तारो रे, मगार ल्गो मोहे खारो
रे, संसार ल्गो मोहे प्यारो रे, मोरी आवागमन

निवारो रे, मने मोक्ष मारगडो दीखावो रे ॥ अब मोहे० ॥ (अंचली) वारी जाउं मस्तक मुकुट हीरे जड्यो रे, वारी जाउं काने कुंडल सार ॥ अब० ॥ १ ॥ वारी० वाहे वाजुवंध वहे-रखां रे,वारी० हिये रे नवसरको हार ॥ वा० गले मोतनको हार ॥ अब० ॥ २ ॥ वारी० कडीये कंदोरा हेमना रे, वा० घुंगरीये घमकार, वा० झांझरीये झमकार ॥ अब० ॥ ३ ॥ वारी० हाथ करोले हीरा जड्यो रे, वारी० पणसीये रतन जडाव ॥ अब० ॥ ४ ॥ वारी ० सहेर पुनाके माहीने रे ॥ वारी० दीठो जिनंद दीदार ॥ अब ० ॥ ५ ॥ वारी० सेवक प्रभूजीने विनवे रे, वारी०जाउं भव भव पार उतार॥अब०॥६॥(इति)

॥ श्री नेमनाथ जिन स्तवन ॥

(नीबु नवरंगो रे पचरंगो–ए चाल)

॥अंगीया नवरंगी रे पचरंगी, ए सोभे प्रभुजी

को आप ॥ अगी० (अंचली) मस्तक मुकुट हीरा जड्यो रे ननरगी, काइ कुडल शोभा अपार ॥ अगीया० ॥ १ ॥ नाहे बाजुबंद बेहरखा रे ननरगी, काइ हीयडे ननसर्यो हार ॥ अगीया० ॥ २ ॥ कडिया कंदोरो हीमको रे ननरगी, काइ सोभे प्रभुजीको सार ॥ अगीया० ॥ ३ ॥ समुद्रविजयजी को लाडलो रे नारगी, काइ शिवादेवी हे मात ॥ अगीया० ॥ ४ ॥ जान मजाइ जुगतीसु रे ननरगी, ए जादवकुल गाय ॥ अगीया० ॥ ५ ॥ जुनागढ प्रभु आवीया रे ननरगी, उग्रसेन दरबार ॥ अगीया० ॥ ६ ॥ तोरणको प्रभु आवीया रे ननरगी, काइ पशुअन करी रे पुकार ॥ अगीया० ॥ ७ ॥ तोरणमु रथ फेरीयो रे नारगी, काइ जाय चड्या गिरनार ॥ अगीया० ॥ ८ ॥ राहमानवनके मायने रे नारगी, सजम लीधो तेणीवार

॥ अंगीया० ॥ ९ ॥ नेम राजुल दोनु मुगते गया रे नवरंगी, कांइ मुक्ति गया गिरनार ॥ अंगीया० ॥ १० ॥ सेवककी यह विनती रे नवरंगी, कांइ भव भव पार उतार ॥ अंगीया ० ॥ ११ ॥ (इति)

॥ श्री महावीरस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ वीरा महावीरने फुलडे वधावु, आवो रे भवि भेटवा ॥ प्रभु भेटयाथी भव दुःख जाय ॥ आवो रे० ॥ (अंचली) माता त्रिशला कुंखे आवतरया, वीर महावीरनो अवतार ॥ आवो० ॥ १ ॥ इंद्राणी आगळ नाच करे, रुमझुमनो झणकार ॥ आवो० ॥ २ ॥ तन मन रंजित पारणो, मांहे हीरानो चमकार ॥ आवो० ॥ ३ ॥ मोतीना तोरण पालणे, दीसे छे झाक झमाल ॥ आवो रे० ॥ ४ ॥ जैन सुबोधक गायन मंडली,

गुणगाने सखे मळी आज ॥ आनो रे भवि भेटवा ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री तीर्थपर्तीनो स्तवन ॥

(मत जावो रे पिया तुज घारंगी- ए चाल)

॥ भर लाो कटोरा केसरका, में तो पुजु नन अग जिनेश्वरका ॥ भर० ॥ (अचली) धुळेवा नगरमे ऋषभ जिनेश्वर, नाम लिया पाप जाने तनका ॥ भर० ॥ १ ॥ समेतशिखर पर वीस तीर्थंकर, अजन सोभा मधुननका ॥ भर० ॥ २ ॥ चपापुरी में वासुपूज्य स्वामी, पूजा करु में नन अग की ॥ भर० ॥ ३ ॥ पावापुरीमें वीर जिनेश्वर, सिद्धारथ राजा पिता जिनका ॥ भर० ॥ ४ ॥ त्रिशला देवी मात जो कहिये, क्षत्रिय कुंड जनम तिनका ॥ भर० ॥ ५ ॥ गुण गाम में गौतम स्वामी, अगुंठ

अमृत वसे जिनका ॥ भर० ॥ ६ ॥ रतन-लाल चरणोका, चाकर, गुण गाउं जिनेश्वरका ॥ भर० ॥ ७ ॥ (इति)

॥ श्री अजितनाथ जिन स्तवन ॥

(आनंदाचा कंद हरी हा, देवकी नंदन० –ए चाल)

॥ जय जय अजित जिणंद सोहे, भवजल निधि कर पार तुं ॥ (अंचली) विजया जाया, शासन राया, माया मोह निवार तुं ॥ जय० ॥ १ ॥ विश्व विमोही, छो निर्मोही, विश्व तणो आधार तुं ॥ जय० ॥ २ ॥ त्रिभुवन त्राता, इच्छित दाता, सुंदर शिव वर नार तुं ॥ जय० ॥ ३ ॥ कर्म ज्वर हर, धर घर मुज कर, किंकर भव भय वार तुं ॥ जय० ॥ ४ ॥ अष्ट कर्मना कष्ट निवारो, धारो कर निज दास तुं ॥ जय जय अजित० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री सामान्य जिन स्तवन ॥

॥ माया तोमे लागी रे जिणदजी, पल नवी छोटी जाय रे ॥ माया०॥ (अचली) बालपणे साथे खेलता जिणदजी ॥ पण आज कैमे मानी मोटाई रे ॥ माया० ॥ १ ॥ अनादि काल की प्रीतडी जि० ॥ एकाकी क्यां टूटी जाय रे ॥ माया० ॥ २ ॥ साथे भम्या साथे रम्या जि० ॥ मोटा भये शी मोटाई रे ॥ माया० ॥ ४ ॥ आप तजी अल्गा वस्या जि०॥ हमो न आपको भुलाई रे ॥ माया० ॥ ५ ॥ मोटा मोटासु मन मेलने जि० ॥ छोटानी शी गति थाई रे ॥ माया० ॥ ६ ॥ ओमिया वीर जिन मंडली जि० ॥ आप चरण सेवा चाही रे ॥ माया० ॥ ७ ॥ (इति)

॥ श्री सामान्य जिन स्तवन ॥

(विहरमान भगवान सुणो मुज विनती– ए देशी)

॥ श्री जिनेश्वर देव सुणो मुज विनति ॥ आव्यो छुं हुं आज आशा मोटी धरी ॥ १ ॥ लाख चोराशी जीवायोनी द्वारा भम्यो ॥ ते मांही मनुष्य जन्म अति दोहीलो ॥ २ ॥ ते पण पुर्व पुण्य पसाये अनुभव्यो ॥ तो पण देव गुरु धर्म न ओळख्यो ॥ ३ ॥ शुं थाशे प्रभु मुज तुज कृपा विना ॥ रझळयो रांकनी पेरे पाम्यो विटंबना ॥ ४ ॥ न दीधुं शुद्ध दान सूपात्रे भावथी ॥ न पाळ्युं वलि शीयल विडंब्यो कामथी ॥ ५ ॥ तप तप्यो नहीं काई आतमने कारणे । शुं झाझुं कहुं नाथ जावुं नरक बारणे ॥ ६ ॥ कीधां में जे कर्म जो ते विवरी कहुं । तो लागे बहुवार भजन क्यारे करुं ॥ ७ ॥

पूर्व निराधक भावथी भावना उल्लसे ॥ चारित्र होन्यु नाथ कर्म मोहनी नशे ॥ ८ ॥ क्षण-क्षणमा बहुवार परिणामनी भिन्नता ॥ ते जाणो छो महाराज मारी निकलता ॥ ९ ॥ नहीं गुणनो लवलेश जगत गुणी कहे ॥ ते सुणी मारु मन हर्षे अति गहगहे ॥ १० ॥ पण थयुं मुज आज दर्शन देव अतिभलुं ॥ पूर्व पुण्य प्रयोगे कल्पवृक्ष फल्युं ॥ ११ ॥ मागु दीन-दयाल चरणनी सेवना ॥ होजो वृद्धि धर्मनी भवोभव भावना ॥ १२ ॥ (इति)

॥ श्री सिद्धाचळजीनु स्तवन ॥

[मारी व्हेनी स्वराज्य लेवु म्हेल छे-ए चाल]

॥ चालो जल्दी व्हेनी, यात्रा में जाशु पहेली, म्हारी व्हेनी सोरठ देशमें जावसुं ॥ चालो० ॥ (अचली) दूर दीठो शेत्रुंजानु, मोटु शिखर

भारी ॥ आवीने तलेटी भेटी, मोतीडे वधाऊं ॥ म्हारी बहेनी, शत्रुंजय गिरि भेटसूं ॥ १ ॥ चालता उपर देखु छुं, शा पासे छे जात्री ॥ अधविच आव्युं हिंगलाजनुं, तिहां थाकेलुं भाग्यु ॥ म्हारी बहेनी, मंदिर मों पहली जावसुं ॥ चालो० ॥ २ ॥ न्हवण करीनें पावन थइने, केसर लइसुं प्याली ॥ फुलरा गुंथी हुं लेवुं, पूजा करीसुं पहली ॥ म्हारी बहेनी, प्रभू आदिश्वरने पुजसुं ॥ ३ ॥ सूरज कुंड अने भीम कुंडनुं, पाणी छे बहु सारुं ॥ शत्रुंजय नदी निरखीने, न्हावुं छे म्हने पहली, म्हारी बहेनी, निरखीने आनंद थाऊं छु ॥ चालो०॥ ॥ ४ ॥ सिंध देशमें हाला नगरी, बहु दीपे छे भारी ॥ दास ' सूधार ' नी आशा पुरो, दीजो शिवसूख पहली ॥ म्हारी बहेनी, जिनंदा गुण गाऊं छुं ॥ चालो० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री केसरीयाजीनुं स्तवन ॥

॥ हा केशरीयो कामणगारो, मनडो मोह्यो नाथ हमारो ॥ पुरण लागी प्रीतडी, धुलेवा-वालो रे ॥ केशरीयो० ॥ (अंचली) जगम झाटी पर्वत गेहरा, जिस बीच जाप कीया है डेरा ॥ तीन लोकमें वाज रह्या प्रभू, डका तेरा रे ॥ ॥ १ ॥ देश देशके यात्रु आवे, दर्शन करके आनद पावे ॥ देखी मुद्रा नायकी, मनडो ललचावे रे ॥ केश० ॥ २ ॥ केशर कीच मचे अति भारी, जागी रचावे समकित धारी ॥ जग तारण जिनराजने, पूजे नरनारी रे ॥ केश० ॥ ३ ॥ मौर मग्न ज्यु घनको रमीयो, पुष्प अलिके ज्यु चित्त धसीयो ॥ कामणगारो मोहनो, मुज मनमें वसीयो रे ॥ केश० ॥ ४ ॥ और कामण तो गिपसे भगियो, तु मुन कामण

कबुअन करीयो ॥ हमके करीयो नाथजी, भव दरीयो तरीयो रे ॥ केश० ॥ ५ ॥ कामणको फल पुरा पायो, सेजे नाथ हाथमें आयो ॥ अब नहि छोडुं बापजी, ज्युं रंग लगायो रे ॥ केश० ॥ ६ ॥ फागुण सूद एकम रंग वरसे, धुलेवाकी यात्रा करने ॥ ज्ञानसुंदर सूख सहजमें, शिवनारी वरसे रे ॥ केशरीयो० ॥ ७ ॥ (इति)

॥ श्री ऋषभदेव जिन स्तवन ॥

(कपूर होये अति उजालेरे— ए देशी)

॥ ज्ञानरयण रयणायरु रे, स्वामी ऋषभ जिणंद ॥ उपकारी अरिहा प्रभु रे, लोक लोकोत्तरा नंद रे ॥ भविया भावे भजो भगवंत ॥ महिमां अतुल अनंत रे ॥ भविया भावे० ॥ १ ॥ (आंकणी) तिग तिग आकर सागरु रे, कोडाकोडी अढार ॥ जुगला

धर्म निनारीयो रे, धर्म प्रवर्त्तन हार रे ॥ मनिया ॥ भावे० ॥ २ ॥ ज्ञानातिशये भव्यना रे, संशय छेदनहार ॥ देव नरा तिरि समझीया रे, वचनातिशय विचार रे ॥ भनिया ॥ भावे० ॥ ॥ ३ ॥ चार घने मघवा स्तवे रे, पूजातिशय महत ॥ पच घने योजन टले रे, कष्ट ए तूर्य प्रमत रे ॥ भनिया ॥ भा० ॥ ४ ॥ योग क्षेमकर जिनवर रे, उपशम गंगा नीर ॥ प्रीति भक्तिपणे करी रे, नीत्य नमे शुभवीर रे ॥ मनिया ॥ भाव० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री ऋषभदेव जिन स्तवन. ॥

(ना छेड़ो गालि दुंगीरे, भरनेंद जल्नीर–ए चाल)

॥ आदिनाथ अनादि काल रे, मिल गया मुझे मंदिर (आकणी) में ढुंढ फिरा जग सारा, तू ना मिल्या प्रभु प्यारा ॥ तन कतार

गाम दिलधारा रे ॥ मिल० ॥ १ ॥ तु कांहांसे चलकर आया, इतने दिन क्युं न दिखाया ॥ तुजकुं किसने भरमाया रे ॥ मिल० ॥ २ ॥ मैं नरक निगोदसें आया, वहां काल अनंत गमाया ॥ कर्मोने मुज भरमाया रे ॥ मिल० ॥ ३ ॥ कर्मोकुं क्युं न हटाया, तप जप संयम सुखदाया ॥ उसका है एह उपाया रे ॥ मिल० ॥ ४ ॥ में क्या करू सुण स्वामी, तुं तो है अंतरजामी ॥ मोहने न रखी कुछ खामी रे ॥ मिल ०॥ ५ ॥ सुण हंस हम पाडोशी, मिल पडा तुजे में जोशी, तेरीभी मुक्ति होशी रे ॥ मिल० ॥ ६ ॥ (इति)

॥ श्री अजितनाथ जिन स्तवन ॥

[महावीर तोरे समवसरणकी रे-एचाल]

॥ जिणंदा तोरे चरण कमल पर रे, मै जाऊं बलिहारी वारी, में वारी जाऊं वार हजारी ॥

॥ जिणदा० ॥ (अचली) अजित जिणंदा रे, जितशत्रु नदा रे ॥ प्रभू सेवे सुरनर वृदा, सेना से होत आनदा ॥ जिण० ॥ १ ॥ चौतिस अतिशय रे, पेंतीस वाणी रे ॥ प्रभू वाणी सुखकी खानी, जिनवाणी शिवसुख दानी ॥ जिणदा० ॥ २ ॥ ओसिया मडली रे, जिनगुण गावे रे ॥ गावे और आनद पावे, चरणोंमें शीस नमावे ॥ जिणदा० ॥ ३ ॥ (इति)

॥ श्री चद्रप्रभु जिन स्तवन ॥

(तीरथनी आशातना नवि करीये– ए देशी)

॥ चद्रप्रभु मुज विनती चित्त धारो, हारे चित्त धारो रे चित्त धारो ॥ हारे दु:ख दारिद्र दूर निवारो, हारे दुःखीयारो दीन ॥ चद्रप्रभु० ॥ १ ॥ (ए आकणी) सपडाइ ममारमा गून सुत्यो, हारे जन्म जरा मरणे जुत्यो ॥

हांरे गति चार गोटाळे गुल्यो, हांरे तेमां थइ तल्लीन ॥ चंद्र० ॥ २ ॥ फरीयो चोराशी फेरमां क्रूर फंदे, हांरे विषय कपायना वृंदे ॥ हांरे कुड कुकर्मोना कुछंदे, हांरे राग द्वेष लीन ॥ चंद्र० ॥ ३ ॥ अनंतकाळथी आथडयो भवमारे, हांरे आप विना कोण उगारे ॥ हांरे ए नहि आप जाणनी वारे, हांरे पूरा छो प्रवीण ॥ चंद्र० ॥ ४ ॥ अवधारी आ विनती व्हारे आवो, हांरे दया दुःखीनी दील लावो ॥ हांरे दुःख दावानळथी वचावो, हांरे छु आप आधीन ॥ चंद्र० ॥ ५ ॥ आधीन हुं आप आशरे कांइ आपो, हांरे भव भयनी भीडने कापो ॥ हांरे स्थिर ठाम ललितने स्थापो, हांरे एम करो अदीन ॥ चंद्रप्रभु० ॥ ६ ॥ (इति)

॥ श्री चंद्रप्रभु जिन स्तवन ॥

(जगपति नायक नेमि जिणंद, द्वारिका नगरी समोसर्या-ए देशी)

॥ जगपति चंद्रप्रभ जिन देव, चंद्रावती नगरी धणी ॥ जगपति ताहरे भक्त अनेक, माहरे मन तु चिंतामणी ॥ १ ॥ जगपति अनुत्तरथी अवतार, लक्ष्मणा कुखे शुभ थयो ॥ जगपति महासेन कुमार, जिन चंद्र प्रगट थयो ॥ २ ॥ जगपति तारक बिरुद धराय, सेवकने तारो नहीं ॥ जगपति जगतमा अपयश थाय, बिरुद प्रमाणे चाले नहीं ॥ ३ ॥ जगपति सेव्य सेवकनो भाव, टाल्यो हवे टले नहीं ॥ जगपति आपजो शिव-पुर वास, स्वामित्व भाव भुलु नहीं ॥ ४ ॥ जगपति हुं छुं ताहरो दास, दास उपर दया करो ॥ जगपति महर करो महेरबान, गरीब सेवकने

उद्धरो ॥ ५ ॥ जगपति धुलीया नगर मांहि, कर्यु चोमासुं दस मुनि ॥ जगपति जैन जैनेतर वर्ग, सुणे देशना धर्मनी ॥ ६ ॥ जगपति वृद्धिचंद्र गुरु राय, चरण सेवक शुभ मने ॥ जगपति धर्म नमे कर जोड, वीर निर्वाण तणे दिने ॥ ७ ॥ (इति)

॥ श्री शांतिनाथ जिन स्तवन ॥

(इस तन धनकी कौन वढाई, देखत नयणोमें मट्टी मिलाई– ए चाल)

॥ तुं मेरे मनमें तु मेरे दिलमें, नाम जपु पल पलमें हो प्रभुजी ॥ तुं मेरे० ॥ शांति जिनेश्वर साहेब साचो, शांतिकरण एक पलमें हो प्रभुजी ॥ तुं मेरे० ॥ १ ॥ निर्मल ज्योति वदनपर सोहे, निकस्यो ज्युं चंद वादलमें हो प्रभुजी ॥ तुं मेरे० ॥ मेरो मन प्रभु तुमसें

लीनो, मीन रमत ज्युं जलमें हो प्रभुजी ॥ तुं मेरे० ॥ २ ॥ भव भव भमता में दरिसण पायो, आशा पूरो एक पलमें हो प्रभुजी ॥ तु मेरे० ॥ जिनरंग कहे प्रभु शांति जिणेसर, देख्यो ज्यु देव सकलमें हो प्रभुजी ॥ तु मेरे० ॥ ३ ॥ (इति)

॥ श्री नेमनाथ जिन स्तवन ॥

(रागि चरी चालाक अन्धकर, गुरु नचावी थननन- ए चाल)

॥ आई श्रावण मास मनोरी, पवन बाजना सननननन ॥ बिजु तरफमें घटा जो उमटी, इन्द्र गाजना गननननन ॥ १ ॥ घटा बुंद बरषाकी बरसे, बिजरी कडके झननननन ॥ पीयु पीयु कर पपैया बोले, झरना झर अब झननननन ॥ २ ॥ नेम पीया गिरनार सीधाए, मन नही अब तननननन ॥ तजु

हार सणगार सखी में, लेवूं संजम पननननन ॥ ३ ॥ पीयुं पेहली जा मोक्ष मंदीरमें, संपती पाइ वननननन ॥ जैन प्रकाशक गायन मंडली, गुण गावे अब्र गननननन ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री नेमनाथ जिन स्तवन ॥

(मने संसार शेरी विसरे रे लोल— ए चाल)

॥ संजम लेवाने नेम संचर्या रे लोल, ऊभी जुवे राजुल नार रे ॥ संजम० ॥ (अंचली) छप्पन्न कोटि यादव जानमें रे लोल, कृष्ण बलभद्र संगाथ रे ॥ संजम० ॥ १ ॥ पशु पुकार सुनी कानमें रे लोल, रथ वाली गया गिरनार रे ॥ संजम० ॥ २ ॥ वरसी दान दई दिक्षा लिये रे लोल, दीन दारिद्र किया दूर रे ॥ संजम० ॥ ३ ॥ राजुल दीक्षा लिये प्रभु कने रे लोल, आगे जोवा गया शिव रूप रे ॥ संजम० ॥ ४ ॥ वीर

जिन मंडल सेवना रे लोल, भवो भव दीजो भरपूर रे ॥ सजम० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(व्हाला वीर जिनेश्वर जन्म जरा निवारजो रे— ए चाल)

॥ वारी जाऊ रे सावरिया तो पे वारणा रे ॥ वारी० ॥ (अंचली) अश्वसेन वामाजी के नदन, जन्म वणारसी सोभा सुउर ॥ वामा राणी के घर झूले पालणा रे ॥ वारी० ॥ १ ॥ पोष वादि दसमी जिन जाये, दिमि कुमरी मिल मगल गाये ॥ इद्राणी मिल हर्ष वधाये, गाये गीत सुहावणा रे ॥ वारी० ॥ २॥ दीक्षा ले प्रभु केवल पाये, दुष्ट कर्मको दूर हटाये ॥ सम्मेदशिखर पर मोक्ष सिधाये, आवागमन निवारणा रे ॥ वारी० ॥ ३ ॥ श्री जिनचन्द्र सूरि सुपसाये, श्री जिनहर्ष हिये

हुलसाये ॥ सेवक प्रभुजी के शरणे आयो, भव सागरसें तारणा रे ॥ वारी० ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(बतादे सखी कोन गली गयो श्याम – ए चाल)

॥ अब मोहे तारो पारसनाथ ॥ अब० ॥ (अचल) अश्वसेन वामाजीके नंदा, तीन भुवनके नाथ ॥ अब० ॥ १ ॥ पोष वादि दसमी दिन जाया, दिशि कुमरी संग साथ ॥ अब० ॥ २ ॥ सेवक की अरजी पर मरजी, लज्जा तुम्हारे हाथ ॥ अब० ॥ ३ ॥ (इति)

॥ श्रीपार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(इस तन धनकी कौन वढाई– ए चाल)

॥ कोयल टहुंक रही मधुवन में, पार्श्व प्रभुजी वसो मेरे दिलमें ॥ (अंचली) वाल-पणे प्रभु अद्भुत ज्ञानी, सुरपति नाग कियो

एक छिनमें ॥ कोयल० ॥ १ ॥ दीक्षा लेइ प्रभु विचरण लागे, भींज गये संजमके रंगमें ॥ कोयल० ॥ २ ॥ समेतशिखर प्रभु मुक्ति पधारे, प्रभुकी महिमा तीन भुवनमें ॥ कोयल० ॥३॥ सेवककी प्रभु यही अरज है, दिल अटक्यो तेरे चरण कमलमें ॥ कोयल० ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

[कुमार मारी थार्नी—ए चाल]

॥ महावीर तेरे चरणे आके खडा हु आ- धार ॥ (आकणी) तुमेरे दरसनमें, चेन पडत है ॥ तुम प्रभु तारण हार ॥ महा० ॥ १ ॥ सिद्धारथ राजानें, त्रिशलाजी माता ॥ घन है महावीरका अवतार ॥ महा० ॥ २ ॥ सिंहका लंछन, प्रभुजीकु सीराजे ॥ अमपर हाए तुम आधार ॥ महा० ॥ ३ ॥ श्री महावीर

मंडळी हए, सरणे तुमारी ॥ आप हो जैनी सरदार ॥ महा० ॥ ४ ॥ (इति)

श्री महावीरस्वामीने वीनती स्तवन

(प्रीतडली वंधाणी रे, अजित जिणंदसुं–ए ऐशी)

॥ वीर जिनेश्वर सरणुं छे हवे ताहरूं, आप विना नंही दूजो छे आधार जो ॥ करी करुणा निज सेवक सनमुख भालजो, कर गृही कहुं कर जोडी दीन दयाल जो ॥ वीर० ॥ १ ॥ आ भवमां में पाप करम कीधा घणा, ते तुम सनमुख केतां आवे लाज जो ॥ जाणो छो सवलुं ज्ञाने जिनराजजी, पण में संक्षेपे कहुं छुं आज जो ॥ वीर० ॥ २ ॥ जीव तणां वध चित्ते चिंतविया घणा, पंचेन्द्री आदीना ते नही पार जो ॥ तीर्थोनी कीधी में अति आसातना, ज्ञान गुरु देवोनी वारंवार जो ॥ वीर० ॥ ३ ॥ देव

गुरुनु गुरु नहु मे चितन्यु, जे कहेता मुखडु मारू सरमाय जो ॥ सतियोंना शियल व्रत मनथी में भागिया, पर रमणीमा मनडु मुल्काय जो ॥ वीर० ॥ ४ ॥ निज नारीमा संतोष में नवि राखीयो, पाल्यु नही शीयल व्रत निर अतिचार जो ॥ ग्रीतें व्रत पचखाण नही में पालिया, वीसारया भाग्या ते वारवार जो ॥ वीर० ॥ ५ ॥ मोद्या बहु मिथ्यात्वें मारा नाथजी, अज्ञानें थइ अंध अरे अरिहंत जो ॥ तुं निर्दोषी देव नहीं मुजने गम्यो, नोधी दायक भव भंजन भगवंत जो ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वचने केइ एक झूट वचन वादिया घणा, पर निंदा कीधी प्रेमे बहु वार जो ॥ क्रोध मान माया लोभें बम हु पटी, पगलें पगलें कर्या कुकर्म अपार जो ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इर्षाये में परने आल चडावीया, व्यसनोने वश

पडिओ हुं जगतात जो ॥ निशदिन मदमां अकड थईने हुं फिरूं, विषयोमां आसक्त रहुं दिन रात जो ॥ वीर० ॥ ८ ॥ ए विन करम अशुभ कीधा बीजा घणा, कहता न आवे पार हो मोरा नाथ जो ॥ अल्प नही गुण मुजमां अवगुण अति भर्यां, शी रीतें भवजलनो पामीस अंत जो ॥ वीर० ॥ ९ ॥ पापी मांहे प्रभूजी हुं शिरोमणी, पण स्वामीजी नाम धराऊं दास जो ॥ करुणावंत करी करुणा मुज अवधार जो, माफ करी अवगुण सहु पुरजो आस जो ॥ वीर० ॥ १० ॥ निर्मल में निरख्या गुण बारे शोभता, अष्टादश दोषे खाली जिनराज जो ॥ सेवकने सरणु छे स्वामी आपनुं, भव भव करजो सहाय प्रभु सूख दाय जो ॥ वीर० ॥ ११ ॥ (इति)

॥ श्रीमहावीरस्वामीनां पांच कल्याणिकनु चार ढाळनुं स्तवन॥

(दोहा) प्रेमे प्रणमु सरसती, मागु अविचल वाणी ॥ वीर तणा गुण गायशु, पच कल्याणक जाणी ॥ १ ॥ गुण गाता जिनजी तणा, लहीये भवनो पार ॥ सुख समाधि होए जीवने, सुणजो सहु नरनार ॥ २ ॥

ढाळ पहेली

(चालो गरबो रमीए रूडा रामशु जो (अथवा) ओल्गडी आदिनाथनी जो–ए देशी)

॥ जबुद्वीपना भरतमा जो, रूडू माहण कुड छे गाम जो ॥ ऋषभदत्त माहण तिहा वसे जो, तस नारी देवानदा नाम जो ॥ १ ॥ चरित्र सुणो जिनजी तणा जो (ए आकणी) जेम समकित निर्मल थाय जो ॥ अष्ट महा-

सिद्धि संपजे जो, वली पातक दूर पलाय जो ॥ चरित्र० ॥ २ ॥ उजली छठ आषाढनी जो, योगें उत्तरा फाल्गुनी सार जो ॥ पुष्पोत्तर सुविमानथी जो, चवी कुखें लीयो अवतार जो ॥ चरित्र० ॥ ३ ॥ देवानंदा तणी रयणीए जो, सूतां सुपन लह्यां दश चार जो ॥ फल पूछे निज कंतने जो, कहे ऋषभदत्त मन धार जो ॥ चरित्र० ॥ ४ ॥ भोग अरथ सुख पामशुं जो, तमे लेहशो पुत्र रतन्न जो ॥ देवानंदा ते सांभली जो, कीधु मनमां तहत्ति वचन्न जो ॥ चरित्र० ॥ ५ ॥ सांसारिक सुख भोगवे जो, सुणो अचरिज हुओ तिणे वार जो ॥ सुधर्म इंद्र तिहां कणे जो, जोई अवधि तणे अनुसार जो ॥ चरित्र० ॥ ६ ॥ चरम जिणेसर ऊपना जो, देखी हरख्यो इंद्र हमाराज जो ॥ सात आठ पग साहामो जइ जो,

एम वदन करे शुभ साज जो ॥ चरित्र० ॥ ॥ ७ ॥ शक्रस्तव विधिशु करी जो, फरी बेठो सिंहासन ठाम जो ॥ मन विमासणमा पडयु जो, चित्त चिंतवे सुरपति ताम जो ॥ चरित्र० ॥ ८ ॥ जिन चक्री हरि रामजी जो, अतपत माहण कुले जोय जो ॥ आव्या नही नही आवशे जो, एतो उग्रभोग राजकुले होय जो ॥ चरित्र० ॥ ९ ॥ अंतिम जिणेसर आवीया जो, एतो माहण कुलमा जेण जो ॥ एतो अछेरा भूत छे जो, थयु हुडा अवसर्पिणी तेण जो ॥ चरित्र० ॥ १० ॥ काल अनत जाते थके जो, एहवा दश अछेरा थाय जो ॥ इण अवसर्पिणीमा थया जो, ते कहीये जे चित्त लाय जो ॥ चरित्र० ॥ ११ ॥ गर्भ हरण उपसर्गनो जो, मूल रूपे आव्या रवि चद्र जो ॥ निष्फल देशना जे थई जो, गयो सौधर्म

चमरेंद्र जो ॥ चरित्र० १२ ॥ ए श्री वीरनी वारमां जो, कृष्ण अमर कंका गया जाण जो ॥ नेमनाथने वारे सही जो, स्त्री तीर्थ मल्ली गुण खाण जो ॥ चरित्र० ॥ १३ ॥ एकशो आठ सिद्धा ऋषभने जो, वारे सुविधिनें असंयति जो ॥ शीतलनाथ वारें थयुं जो, कुल हरिवंशनी उतपत्ति जो ॥ चरित्र० ॥ १४ ॥ एम विचार करे इंद्रलो जो, प्रभु नीच कुल अवतार जो ॥ तेहनुं कारण शुं अछे जो, एम चिंतवे हृदय मझार जो ॥ चरित्र० ॥ १५ ॥

ढाळ बीजी

(आशो मासें शरद पूनमनी रात जो–ए देशी)

॥ भव मोहोटा कहीएं प्रभुना सत्तावीश जो, त्रिदंडी ते मांहे त्रीजे भवें रे जो ॥ तिहां भरत चक्रीसर वांदे आवी जोय जो, कुलनो

मद करी नीच गोत्र नाध्यु तेहवे रे जो ॥ १ ॥
एतो माहण कुलमा आव्या जिनवर देव जो,
अति अणजुगतु एह थयु थाशे नहीं रे जो ॥
जे जिनवर चक्री नीच कुलमांहे जो, छे मा-
हारो आचार वरु उत्तम कुले सहीं रे जो ॥ २ ॥
एम चिंतवी तेव्यो हरिण गमेषी देव जो,
कहे माहण कुंडे जइने ए कारज करो रे जो ॥
छे देवानंदानी कूखें चरम जिणंद जो, हर्ष
धरीने प्रभुने तिहांथी सहरो रे जो ॥ ३ ॥
नयर क्षत्रीकुंड राय सिद्धारथ गेह जो, त्रिशला
राणी तेहनी छे रूपें भली रे जो ॥ तस कुखें जइ
संक्रमावो प्रभुने आज जो, त्रिशलानो जे गर्भ
अछे ते माहण कुले रे जो ॥ ४ ॥ जेम इंद्रें
कह्यु तेम कीधु ततक्षण तेण जो, ब्याशी रातने
अंतरे प्रभुने सहर्या रे जो ॥ माहणी सुपना
जाणे त्रिशला हरीने लीध जो, त्रिशला देखी

चौद सुपन मनमां धरयां रे जो ॥ ५ ॥ गज वृषभ अने सिंह लक्ष्मी फूलनी माल जो, चंदा सूरज ध्वज कुंभ पद्म सरोवरु रे जो ॥ साग- रने देवविमानज रत्ननी राशि जो, चौदमें सुपने देखी अग्नि मनोहरु रे जो ॥ ६ ॥ शुभ सुहणा देखी हरखी त्रिशला नार जो, पर- भातें उठीने पीयु आगळ कहे रे जो ॥ ते सांभली दिलमां राय सिद्धारथ नेह जो, सुपन पाठक तेडीने पुछे फल लहे रे जो ॥ ७॥ तुम होशे राज अरथने सुत सुख भोग जो, सुणी त्रिशला देवी सुखे गर्भ पोषण करे रे जो ॥ तव माता हेतें प्रभुजी रह्या संलीन जो, ते जाणीने त्रिशला दुःख दिलमां धरे रे जो ॥ ८ ॥ में कीधा पाप अघोर भवो भव जेह जो, दैव अटारो दोषी देखी नवि शके रे जो ॥ मुझ गर्भ हरयो जे किम पामुं हवे तेह जो, रांक

तणे घर रत्न चिंतामणी किम टके रे जो ॥ ९ ॥ प्रभुजीए जाणी तत्तखिण दुःखनी वात जो, मोह विटंबन जालिम जगमां जे ल्हु रे जो ॥ जुओ दीठा विण पण एवडो जागे मोह जो, नजरे वाध्या प्रेमनु कारण शु कहुं रे जो ॥ १० ॥ प्रभु गर्भथकी हवे अभिग्रह लीधो एह जो, मात पिता जीवता संयम लेशु नहीं रे जो ॥ एम करुणा आणी तुरत हलाव्यु अंग जो, माताने मन उपनो हर्ष घणो मही रे जो ॥ ११ ॥ अहोभाग्य अमारु जाग्यु माहियर आज जो, गर्भ अमारो हाल्यो सहु चिंता गई रे जो ॥ एम सुखभर रहेतां पूर्ण हुआ नव मास जो, ते उपर वली साडी सात रयणी थई रे जो ॥ १२ ॥ तव चैत्र तणी शुद्धि तेरस दिवस जो, जन्म्या श्री जिन वीर हुई रयामणी रे जो ॥ सहु धरणी विकसी

जगमां थयो प्रकाश जो, सुर नरपति घर वृष्टि करे सोवन तणी रे जो ॥ १३ ॥

⊰ ढाळ त्रीजी ⊱

(माहरी सही रे समाणी (अथवा) धन धन जिनवाणी–ए देशी)

॥ जनम समय श्री वीरनो जाणी, आवी छपन्न कुमारी रे॥ जग जीवन जिनजी ॥ जनम महोत्सव करी गीतज गाये, प्रभुजीनी जाउं बलिहारी रे ॥ जग० ॥ १ ॥ ततक्षण इंद्र सिंहासण हाल्युं, घोष घंटा वजडावी रे ॥ जग० ॥ मलिया कोडी सुरासूर देवा, मेरु पर्वत आवी रे ॥ जग० ॥ २ ॥ इंदो पंच रूपें प्रभुजीनें, सुरगिरी ऊपर लावे रे ॥ जग० ॥ यत्न करी हियडामां राखे, प्रभूने शीश नमावे रे ॥ जग० ॥ ३ ॥ एक कोडी शाठ लाख कलशला, निरमल नीरें भरिया रे ॥ जग० ॥

नाहानो नाल्क ए किम सहेशे, इंद्रे मशय धरिया रे ॥ जग० ॥ ४ ॥ अतुलि वल जिन अनवें जोई, मेरु अगुठें चंप्यो रे ॥ जग० ॥ पृथिवी हाल कल्लोल थई तन, धरणीधर तिहा कप्यो रे ॥ जग० ॥ ५ ॥ जिननु नल देखीनें मुरपति, भक्ति करीने खमावे रे ॥ जग० ॥ चार वृषभना रूप धरीने, जिनवरनें न्हवरावे रे ॥ जग० ॥ ६ ॥ अमृत अगुठे थापीनें, माता पासें मेले रे ॥ जग० ॥ देव सहु नदीस्वर जाए, आसता पातक ठेले रे ॥ जग० ॥ ७ ॥ हवें प्रभातें सिद्धारथ राजा, अति घणा उत्सव मंडावे रे ॥ जग० ॥ चकले चकले नाच करावे, जगतना दाण छटावे रे ॥ जग० ॥ ८ ॥ बारमे दिवसें सज्जन संतोषी, नाम दीधु वर्द्धमान रे ॥ जग० ॥ अनुक्रमें वधता आठ वरसना, हुआ श्री भगवान रे ॥

जग० ॥ ९ ॥ एक दिने प्रभुजी रमवा चाल्या, तेंव तेवडा संघाती रे ॥ जग० ॥ इंद्र मुखें परशंसा निसुणी, आव्यो सुर मिथ्याती रे ॥ जग० ॥ १० ॥ पन्नगरूपें झाडें वलगो, प्रभुजीये नाख्यो झाली रे ॥ जग० ॥ ताड समान वली रूप कीधु, मुठीए नाख्यो उछा लीरे ॥ जग ०॥ ११ ॥ चरणे नमीने खमावे ते सुर, नाम धरे महावीर रे ॥ जग० ॥ जेहवा तुमने इंद्रे वखाण्या, तेहवा छो प्रभु धीर रे ॥ जग० ॥ १२ ॥ माता पिता निशाले भणवा, मूके बालक जाणी रे ॥ जग० ॥ इंद्र आवी तिहा प्रश्नज पुछे, प्रभु कहे अर्थ वखाणी रे ॥ जग० ॥ १३ ॥ जोवन वय जाणी प्रभु परण्या, नारी जशोदा नामें रे ॥ जग० ॥ अट्ठावीशे वरषे प्रभुना, माता पिता स्वर्ग पामे रे ॥ जग० ॥ १४ ॥ भाइजीनो आग्रह जाणी,

दोय वरस घर नासी रे ॥ जग० ॥ ते हवे लोकांतिक सुर बोले, प्रभू कहो धर्म प्रकाशी रे ॥ जग जीवन जीनजी ॥ १५ ॥

❈ ढाळ चोथी ❈

(तारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो छोगलो मारूजी-एदेशी)

॥ प्रभु आपी वरसीदान, भलु रवि ऊगते ॥ जिनवरजी ॥ एक कोडीने आठ लाख सोनइया दिनप्रते ॥ जिन० ॥ मागशिर वदि दशमी उत्तरा योगे मन धरी ॥ जिन० ॥ भाईनी अनुमति मागी नें दीक्षा वरी ॥जिन०॥ ॥ १ ॥ तेह दिवसथकी चउनाणी प्रभुजी थया ॥ जिन० ॥ साधिक एक वरस ते चीवर धारी प्रभु रह्या ॥ जिन० ॥ पछे दीधु ब्रंभणने बे वार खंडो खंडें करी ॥ जिन० ॥ प्रभु विहार करे एकाकी अभिग्रह चित्त धरी ॥ जिन० ॥ २ ॥ साडा

वार वर्षमां घोर परीसह जे सह्या ॥ जिन० ॥ शूलपाणीने संगम देव गोशालाना कह्या ॥ जिन० ॥ चंडकोशीने गोवालें खीर रांधी, पग ऊपरे ॥ जिन० ॥ काने खीला खोस्याते दुष्ट सहु प्रभु उद्धरे ॥ जिन० ॥ ३ ॥ लेइ अडदना बाकला चंदनबाला तारियां ॥ जिन० ॥ प्रभु पर उपगारी सुख दुःख सम धारिया ॥ जिन० ॥ छ मासी बेने नव चोमासी कहीएं रे ॥ जिन० ॥ अढी मास त्रि मास दोढ मास बे वे लहीएंरे ॥ जिन० ॥ ४ ॥ षट कीधा बे वे मास प्रभु सोहामणा ॥ जिन० ॥ बार मासनें पख बहोत्तर ते रलीयामणा ॥ जिन० ॥ छठ बसें ओगणत्रीश बार अठम वखाणीयें जिन० ॥ भद्रादिक प्रतिमा दिन बे चौदश जाणीयें ॥ जिन० ॥ ५ ॥ साडा बार वरषें तप कीधां :विण पाणीयें ॥ जिन० ॥ पारणा त्रणसें ओगण पंचास ते

जाणीयें ॥ जिन० ॥ तन कर्म खपावी ध्यान शुक्ल मन ध्यानता ॥ जिन० ॥ वैशाख शुदि दशमी उत्तरा जोगें सोहानता ॥ जिन० ॥ ६ ॥ शालि वृक्ष तलें प्रभु पाम्या केवल नाण रे ॥ जिन० ॥ लोकालोक तणा परकाशी थया प्रभु जाण रे ॥ जिन० ॥ इन्द्रभूति प्रमुख प्रतिबोधी गणधर कीध रे ॥ जिन०॥ सघ थापना करीनें धर्मनी देशना दीध रे ॥ जिन० ॥ ७ ॥ चौद सहस भला अणगार प्रभुनें शोभता ॥ जिन० ॥ वली साधवी सहस छत्रीश कही निर्लोभता ॥ जिन०॥ ओगणशाठ सहस एक लाख ते श्रावक संपदा ॥ जिन० ॥ तीन लाखनें सहस अढार ते श्राविका सपदा ॥ जिन० ॥ ८ ॥ चौद पूर्वधारी त्रणशें मल्या जाणीयें ॥ जिन० ॥ तेरशें ओहिनाणी सातशें केवली वखाणीयें ॥ जिन० ॥ लब्धि धारी सातशें विपुलमति

वली पांचशें ॥ जिन० ॥ वली चारशें वादी ते प्रभुजी पासें वसे ॥ जिन० ॥ ९ ॥ शिष्य सातशें नें वली चौदशें साधवी सिद्ध थया ॥ जिन० ॥ ए प्रभुजीनो परिवार कहेतां मन गहगह्यां ॥ जिन० ॥ प्रभुजीयें त्रीश वरस घरवासें भोगव्यां ॥ जिन० ॥ छद्मस्थ-पणामां वार वरस ते जोगव्यां ॥जिन० ॥१०॥ त्रीश वरस केवल बेंहेंतालीश वरस संजम पणुं ॥ जिन० ॥ संपूरण बहोंत्तेर वरस आयु श्री वीर तणुं ॥ जिन० ॥ दीवाळी दिवसें स्वाती नक्षत्र सोहंकरु ॥ जिन० ॥ मध्यरातें मुक्ति पहोता प्रभुजी मनोहरु ॥ जिन० ॥ ११ ॥ ए पांच कल्याणक चोवीशमा जिनवर तणां ॥ जिन० ॥ ते भणतां गुणतां हरख होये मनमां घणा ॥ जिन० ॥ जिनशासन नायक त्रिशला सुत चित्त रंजणो ॥ जिन० ॥ भवियणनें शिव

सुखकारी भव भय भंजणो ॥ जिनवरजी ॥ १२ ॥

(कळश) जय वीर जिनवर सघ सुखकर, सुण्यो अति उत्सुक धरी ॥ संवत सत्तर एक्याशीये, सूरत चोमासु करी ॥ श्री सहजसुंदर तणो सेवक, भक्तिशु एणी परें कहे ॥ प्रभुजशु पूरण प्रेम पाम्यो, नित्यलाभ वंछित लहे ॥ १ ॥

(इति संपूर्ण)

॥ श्री महावीरस्वामीना सत्तावीश भवनुं पांच ढाळनु स्तवन ॥

(दोहा) श्री शुभविजय सुगुरु नमी, नमी पद्मावती माय ॥ भव सत्तावीश वर्णवु, सुणता समकित थाय ॥ १ ॥ समकित पामे जीवने, भव गणतीए गणाय ॥ जो वळी संसारे भमे, तो पण मुगते जाय ॥ २ ॥ वीर जिनेश्वर साहेबो, भमियो काळ अनंत ॥ पण समकित

पाम्या पछी, अंते थया अरिहंत ॥ २ ॥

ढाळ पहेली

(कपूर होय अति उजलोरे—ए देशी)

॥ पहेले भवे एक गामनो रे, राय नामे नय-सार ॥ काष्ट लेवा अटवी गयो रे, भोजन वेळा थाय रे ॥ प्राणी धरिये समकित रंग ॥ जिम पामिये सुख अभंग रे ॥ प्राणी धरिये० ॥ १ ॥ (ए आंकणी) मन चिंते महिमा नीलो रे, आवे तपसी कोय ॥ दान देइ भोजन करुं रे, तो वंछित फळ होय रे ॥ प्राणी० ॥ २ ॥ मारग देखी मुनिवरा रे, वंदे देइ उपयोग ॥ पुछे केम भटको इहां रे, मुनि कहे साथ वियो-ग रे ॥ प्राणी० ॥ ३ ॥ हरष भरे तेडी गयो रे, पडिलाभ्या मुनिराज ॥ भोजन करी कहे चालीए रे, साथ भेळा करूं आज रे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥ पगवटीये भेळा करया रे, कहे मुनि

द्रव्य ए मार्ग ॥ ससारे भूला भमो रे, भान मारग अपनर्ग रे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥ देवगुरु ओळखाविया रे, दीधो विधि ननकार ॥ पश्चिम महाविदेहमा रे, पाम्यो समकित सार रे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥ शुभ ध्याने मरी सुर हुओ रे, पहेला सर्ग मझार ॥ पल्योपम आयु चवी रे, भरत घेरे अवतार रे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥ नामे मरीची योवने रे, प्रथम लीये प्रभु पास ॥ दुष्कर चरण लही थयो रे, त्रिदंडीक शुभ वास रे ॥ प्राणी० ॥ ८ ॥

ढाळ बीजी

(विनादल्लानी (अथवा) प्रभु पासनु मुखडु जोवा, भव भवना पातिक खोवा-ए देशी)

॥ नवो वेप रचे तणी वेळा, विचरे आदिश्वर भेळा ॥ जळ थोडे स्नान विशेषे, पग पावडी

भगवे वेष ॥ १ ॥ धरे त्रिदंड लाकडी म्होटी, शीर मुंडणने धरे चोटी ॥ वळी छत्र विलेपन अंगें, मुलथी व्रत धरतो रंगे ॥ २ ॥ सोनानी जनोइ राखे, सहुने मुनि मारग भांखे ॥ समोसरणे पूछे नरेश, कोइ आगे होशे जिनेश ॥ ३ ॥ जिन जंपे भरतने ताम, तुज पुत्र मरीची नाम ॥ वीर नामे थशे जिन छेला, आ भरते वासुदेव पहेला ॥ ४ ॥ चक्रवर्ति विदेहे थाशे, सुणी आव्या भरत उल्लासे ॥ मरीचीने प्रदक्षिणा देता, नमी वंदीने एम कहेता ॥ ५ ॥ तमे पुन्याइवंत गवाशो, हरि चक्री चरम जिन थाशो ॥ नवि वंदु त्रिदंडिक वेष, नमुं भक्तिये वीर जिनेश ॥ ६ ॥ एम स्तवना करी घर जावे, मरीची मन हर्ष न मावे ॥ म्हारे त्रण पदवीनी छाप, दादा जिन चक्री बाप ॥ ७ ॥ अमे वासुदेव धूर थइशुं, कुल उत्तम म्हारुं

कहीशुं ॥ नीचे कुल मदशुं भराणो, नीच गोत्र तिहां बंधाणो ॥ ८ ॥ एक दिन तनु रोगे व्यापे, कोइ साधु पाणी न आपे ॥ त्यारे वंछे चेलो एक, तव मळियो कपिल अविवेक ॥९॥ देशना सुणी दीक्षा वासे, कहे मरीची लीयो प्रभु पासे ॥ राजपुत्र कहे तुम पासे, रुशु अमे दीक्षा उल्लासे ॥ १० ॥ तुम दरशने धरमनो व्हेम, सुणी चिंते मरिची एम ॥ मुज योग्य मळ्यो ए चेलो, मूळ कडवे कडवो वेलो ॥ ॥ ११ ॥ मरिची कहे धर्म उभयमां, लीये दीक्षा जोवन वयमां ॥ एणे वचने वध्यो संसार, ए त्रीजो कह्यो अवतार ॥ १२ ॥ लाख चोराशी पूरव आय, पाळी पंचमे सर्ग सधाय ॥ दश सागर जीवित त्यांही, शुभवीर सदा सुख मांही ॥ १३ ॥

~o~



ढाळ त्रीजी



(चोपाईनी देशी)

॥ पांचमे भव कोल्लाग सन्निवेश, कोसिक नामे ब्राह्मण वेष ॥ एंशी लाख पूरव अनुसरी, त्रिदंडीयाने वेषे मरी ॥ १ ॥ काल बहु भमीयो संसार ॥ थुणापुरी छठो अवतार ॥ बहोत्तर लाख पूरवने आय, विप्र त्रिदंडी वेप धराय ॥ २ ॥ सौधर्मे मध्य स्थितिये थयो, आठमे चैत्य सन्निवेषे गयो ॥ अग्निद्योत द्विज त्रिदं-डियो, पूर्व आयुलख साठे मुओ ॥ ३ ॥ मध्य स्थितिये सुर सर्ग इशान, दशमे मंदिर पुर द्विज ठाण ॥ लाख छप्पन्न पूरवा पुरी, अग्निभूति त्रिदंडीक मरी ॥ ४ ॥ त्रीजे सरग मध्यायु धरी, बारमे भव श्वेतांबी पुरी ॥ पुरव लाख चुम्मालीश आय, भारद्वाज त्रिदंडीक थाय ॥ ५ ॥ तेरमे चोथे सर्गे रमी, काळ घणो संसारे भमी ॥

चउदमें भव राजगृही जाय, चोत्रीश लाख पुरवने आय ॥ ६ ॥ थावर विप्र त्रिदंडी थयो, पांचमे सर्ग मरीने गयो ॥ सोळमें भव कोड वरस समाय, राजकुमर विश्वभूति थाय ॥ ७ ॥ सभूति मुनि पासे अणगार, दुक्कर तप करी वरस हजार ॥ मासखमण पारण धरी दया, मथुरामा गोचरीए गया ॥ ८ ॥ गाये हण्या मुनि पडिया वशा, विशाखनंदी पितरिया हशा ॥ गौशृंगे मुनि गर्व करी, गयण उछाळी धरती धरी ॥ ९ ॥ तप बळथी होज्यो बळ घणी, करी नियाणु मुनि अणसणी ॥ सत्तरमे महाशुक्रे सुरा, श्री शुभवीर सत्तर सागरा ॥ १० ॥

ढाळ चोथी

(नदी यमुनाके तीर, उडे दोय पंखीया-ए देशी)

॥ अढारमे भवे सात, सुपन सूचित सती ॥ पोतन पुरीये प्रजापति, राणी मृगावती ॥ तस

सुत नामे त्रिपृष्ट, वासुदेव निपना ॥ पाप घणूं करी सातमी, नरके उपना ॥ १ ॥ वीशमे भव थइ सिंह, चोथी नरके गया ॥ तिहांथी चवी संसारे, भव बहुला थया ॥ बावीशमे नरभव लही, पुण्यदशा वरचा ॥ त्रेवीशमे राजधानी मूकामे संचर्या ॥ २ ॥ राय धनंजय धारणी, राणीये जनमिया ॥ लाख चोराशी पुरव, आयु जीविया ॥ प्रियमित्रनामे चक्रवर्ति दीक्षा लही ॥ कोडी वरस चारित्र दशा पाली सही ॥ ३ ॥ महा शुक्रे थइ देव, इणे भरते चवी ॥ छत्रिका नगरीये, जित शत्रु राजवी ॥ भद्रामाय लख पचवीस, वरस स्थिति धरी ॥ नंदन नामे पुत्रे, दीक्षा आचरी ॥ ४ ॥ अगीयार लाखने एंशी, हजार छस्सें वळी ॥ उपर पीस्तालीश, अधिक पण दिन रूळी ॥ वीशस्थानक मास खमणे, जावज्जीव साधता ॥ तिर्थंकर नामकर्म, तिहां

निकाचता ॥ ५ ॥ लाख वरसे दीक्षा, पर्याय ते पालता ॥ छव्वीसमें भव, प्राणत कल्पे देवता ॥ सागर वीशनुं जीवित, सुखभर भोगवे ॥ श्री शुभवीर जिनेश्वर, भव सुणजो हवे ॥ ६ ॥

ढाळ पांचमी

(गजरा मारुजी चाल्या चाकरी रे-ए देशी)

॥ नयर माहणकुंडमा वसे रे, महाऋद्धि ऋषभदत्त नाम ॥ देवानंदा द्विज श्राविका रे, पेट लीधो प्रभु विसराम रे ॥ पेट लीधो प्रभु विसराम ॥ १ ॥ ब्याशी दिवसने अंतरे रे, सुर हरणी गर्भपी आय ॥ सिद्धारथ राजा घरे रे, त्रिशला कूखे छटकाय रे ॥ त्रिशला० ॥ ॥ २ ॥ नव मासांतरे जनमीया रे, देव देवीये ओच्छव कीध ॥ परणी यशोदा यौवने रे, नामे महावीर प्रसिद्ध रे ॥ नामे० ॥ ३ ॥ संसार लीला भोगवी रे, त्रीश वर्षे दीक्षा लीध

॥ वार वरसे हुआ केवळी रे, शिववहुनुं तिलक शिर दीध रे ॥ शिव० ॥ ४ ॥ संघ चतुर्विध थापीयो रे, देवानंदा ऋषभदत्त प्यार ॥ संयम देई शिव मोकल्या रे, भगवती सूत्रे अधिकार रे ॥ भग० ॥ ५ ॥ चोत्रीश अतिशय शोभता रे, साथे चउद सहस अणगार ॥ छत्रीस सहस ते साधवी रे, बीजो देव देवी परीवार रे ॥ बीजो० ॥ ६ ॥ त्रीश वरस प्रभु केवली रे, गाम नगर ते पावन कीध ॥ बहोंत्तेर वरसनुं आउखुं रे, दीवाळीये शिवपद लीध रे ॥ दीवाळी० ॥ ७ ॥ अगुरु लघु अवगाहने रे, कीयो सादी अनंत निवास ॥ मोहराय मल्ल मूळशुं रे, तन मन सुखनो होय नाश रे ॥ तन० ॥ ८ ॥ तुम सुख एक प्रदेशनुं रे, नवी मावे लोकाकाश ॥ तो अमने सुखीया करो रे, अमे धरीए तुमारी आश रे ॥ अमे० ॥ ९ ॥ अखय खजानो नाथ-

नो रे, में दिठो गुरु उपदेश ॥ लालच लागी
साहेना रे, ननि भजीये कुमतिनो लेश रे ॥
॥ ननि० ॥१०॥ महोटानो जे आशरो रे, तेथी
पामीये लील निलास ॥ द्रव्यभान शत्रु हणी रे,
शुभनीर सदा सुख वास रे ॥ शुभनीर० ॥११॥
(कळश) ओगणीस एके, वरस छे के,
पूर्णिमा श्रावण वरो ॥ में थुण्यो लायक, विश्व-
नायक, नर्द्धमान जिनेश्वरो ॥ मनेग रग, तरग
झीले, जसनिजय समता धरो ॥ शुभविजय
पंडित, चरण सेनक, वीर निजयो जय करो
॥ १ ॥ (इति)

श्री नेमनाथजीनो सलोको

॥ सरस्वती माता हु तुम पाय लागी, देव
गुरु तणी आज्ञा मागी ॥ जिव्हा अग्रे तु नेसजे
आई, वाणी तणी तु करजे माहाई ॥ १ ॥

आघो पाछो कोइ अक्षर थावे, माफ करजो जे दोष कांइ नावे ॥ तगण सगण ने जगणना ठाठ, ते आदे दइ गण छे आठ ॥ २ ॥ कीया साराने कीया निषेध, तेनो न जाणुं उंडार्थ भेद ॥ कविजन आगळ मारी शी मति, दोष टाळजो माता सरसती ॥ ३ ॥ नेमजी केरो कहेशु सलोको, एक चित्तेथी सांभळजो लोको ॥ राणी शिवादेवी समुद्र राजा, तस कुळ आव्या करवा दीवाजा ॥ ४ ॥ गर्भे कार्तिक वदि बारसे रह्या, नव मास वाडा आठ दीन थया ॥ प्रभुजी जनम्यानी तारीख जाणु, श्रावण शुदि पांचम चित्रा वखाणुं ॥ ५ ॥ जनम्या तणी तो नोबत वागी, माता पिताने कीधां वडभागी ॥ तरिया तोरण बांध्या छे बार, भरी मुक्ताफळ वधावे नार ॥ ६ ॥ अनुक्रमे प्रभुजी महोटा रे थाय, क्रीडा करवाने

नेमनी जाय ॥ सरखे सरखा छे मगाते छोरा, टके बहु मुला कलगी तोरा ॥ ७ ॥ ग्मत करना जाय छे तिहां, दीठी आयुधशाला छे तिहां ॥ नेम पूछे छे मामको भ्रात, आते शु छे ? कहो नेम वात ॥ ८ ॥ त्यांरे सरखा सहु बोल्या त्या वाण, सामको नेमजी चतुर सुजाण ॥ तमारे भाइ कृष्णजी कहीये, तेने वापरवा आयुध जोइए ॥ ९ ॥ शंख चक्र ने गदा ए नाम, बीजो नायक धारे नहीं हाम ॥ एहना बीना कोड बत्रीश जो थाय, आना न पद्द तेणे थाय ॥ १० ॥ नेम कहे छे वाल्हु ए काम, एमा मोरे शु महोटु छे काम ॥ एम कहीने अंगुठा मीथो, पीते नगारी नादन कीधो ॥ ११ ॥ ते टाणे थयो महोटो उमटोट, मावरना नाद थया कडोडाट ॥ पवननी उठी सरवाले मारी, हाथी घोडा तो जाय छे भागी

॥ १२ ॥ झबकी नरीओ नव लाभी वार, तुटचा नवसरा मोतीना हार ॥ धरा धुजे ते मेघ गडगडीयो, महोटी इमारतो तूटीने पडीयो ॥ १३ ॥ सहुना काळजा फरवाने लाग्यां, स्त्री अने पुरुष जाय छे भाग्यां ॥ कृष्ण बलभद्र करे छे वात, भाइ शो थयो आ ते उत्पात ॥ १४ ॥ शंख नाद तो वीजे नव थाय, एहवो बळियो ते कोण कहेवाय ॥ काढो खबर आ ते शुं थयुं, भाग्युं नगर के कोइ उगरीयुं ॥१५॥ ते टाणे कृष्ण पाम्या वधाइ, ए तो तमारो नेमजी भाइ ॥ कृष्ण पुछे छे नेमने वात, भाइ शो कीधो आ तें उत्पात ॥ १६ ॥ नेमजी कहे सांभळो हरि, में तो अमस्ती रमत करी ॥ अतुली बळ दीठुं नानुडे वेषे, कृष्णजी जाणे ए राजने लेशे ॥ १७ ॥ त्यारे विचार्युं देव मोरारि, एने परणावुं सुंदर नारी ॥ त्यारे बळ

पनु ओछु जो थाय, तो तो आपणे अही रहे-
वाय ॥१८॥ एवो विचार मनमा आणी,
तेड्या लक्ष्मीजी आदे पटराणी ॥ जळक्रीडा करवा
तमे सहु जाओ, नेमने तमे विवाह मनावो
॥ १९ ॥ चाली पटराणी सरवे साजे, चालो
देवरीया न्हावाने काजे ॥ जळक्रीडा करता
बोल्या रुकमणी, देवरीया परणो छबीली राणी
॥ २० ॥ वाडा नथि रहीये देवर नगीना,
लावो देराणी रगना भीना ॥ नारी विना तो
दुःख छे घाट, कोण रासशे बार उघाड ॥२१॥
परण्या विना तो केमज चाले, करी लटको
घरमां कोण माल्हे ॥ चूलो फुकशो पाणीने
गळशो, वेला मोडा तो भोजन करशो ॥२२॥
नागणे जाशो अटकावी ताळु, आवी असुरा
करशो चाळु ॥ दीवाबत्तीने कोणज करशे,
दीप्या विना तो ढेकडा घळशे ॥ २३ ॥ वासण

उपर तो नही आवे तेज, कोण पाथरशे तमारी सेज ॥ प्रभाते लुखो खाखरो खाशो, देवता लेवा सांजरे जाशो ॥ २४ ॥ मननी वातो तो कोणने कहेवाशे, ते दिन नारीनो ओरतो थाशे ॥ परोणा आवीने पाछा जाशे, देश विदेशे वातो बहु थाशे ॥ २५ ॥ मोहोटाना छोरु नानेथी वरीया, मारुं कह्युं तो मानो देव-रिया ॥ त्यारे सतभामा बोल्या त्यां वाण, सांभळो देवरीया चतुर सुजाण ॥ २६ ॥ भा-मीनो भरोसो नाशीने जाशे, परण्या विना कोण पोतानी थाशे ॥ पहेरी ओढीने आंगणे फरशे, झाझां वानां तो तमने करशे ॥ २७ ॥ उंचा मन भाभी केरां केम सहेशो, सुख दुःखनी वात कोण आगळ कहेशो ॥ माटे परणोने पात-लीया राणी, हुं तो नहि आपुं न्हावाने पाणी ॥ २८ ॥ वांढा देवरने विश्वासे रहीये, सगा

वेहालामा हरकाज थइये ॥ परण्या विना तो सुख केम थाशे, मगाने घेर गावा कोण जाशे ॥ २९ ॥ गणेश नधाना कोने मोकलशो, तमे नाशो तो शी रीते खलशो ॥ देराणी केरो पाड जाणीशु, ठेरु थाशे तो निना माणीशुं ॥३०॥ माटे दयरिया देराणी लानो, अम उपर नथी तमारो दानो ॥ त्यारे राधिका आवेरा आनी, वाल्या वचन तो मोढु मलकावी ॥ ३१ ॥ शी शी वातो रे करो छो सखी, नारी परणवी रमन नथी ॥ कायर पुरुषनु नथी ए काम, वावरना जोडए झाझेरा दाम ॥ ३२ ॥ झाझर नेपुर ने घणि जरमाळा, अणवट वीठीआ घाट रुपाळा ॥ पग पाने झाझी घुघरीओ जोईए, मरोंट मारके घुघरा जोईए ॥ ३३ ॥ सोना चुडलो गुजरीना घाट, छल्ला अगुठी आरिसा ठाट ॥ घुघरी पोंचीने घाट सोनरी, चदन

चुंदडीनी शोभा भलेरी ॥ ३४ ॥ कड्लां सांकळां उपर सिंह मोरा, मरकत बहुमुला नंग भलेरा ॥ तुलशी पाटीया जडाव जोइए, काळी कंठा थी मनडुं मोहिए ॥ ३५ ॥ कांठली सोहीए घुघरीयाळी, मनडुं लोभाये जमणुं भाळी ॥ नवसरो हार मोतीनी माळा, काने टंटोडा सोनेरी गाळा ॥ ३६ ॥ मचकाणिया जोइए मुल झाझानां, झीणा मोती पण पाणी ताजानां ॥ नीलवट टीलडी शोभे बहु सारी, उपर दामणी मुलनी भारी ॥ ३७ ॥ चीर चुंदडी घरचोळां साडी, पीळी पटोळी मूलनी भारी ॥ बांट चीरडीओ कसबी सोहिए, दशरा दीवाळी पहेरवा जोइए ॥ ३८ ॥ मोंघा मुलना कमखां केहवाय, एवडुं नेमथी पुरुं केम थाय ॥ माटे परण्यानी पाडे छे नाय, नारीनुं पुरुं शी रीते थाय ॥ ३९ ॥ त्यारे लक्ष्मीजी बोल्यां पट-

राणी, दीयरना मननी वातो मे जाणी ॥ तमारु वचण माथे धरीशु, वेउनु पुरु अमो करीशु ॥ ४० ॥ माटे परणोने अनोपम नारी, तमारा भाइ छे देव मोरारी ॥ बत्रीशे हजार नारी छे जेहने, एकनो पाड चडशे तेहने ॥ ४१ ॥ माटे हृदयथी फीकर टाळो, काकाजी केरु घर अजवाळो ॥ एवु सांभळी नेम हसिया, भामीना तोरु हृदयमा वसिया ॥ ४२ ॥ त्या तो कृष्णने दिधी वधाइ, निश्चये परणशे तमारो भाइ ॥ उग्रसेन राजा घेर छे बेटी, नामे राजुल गुणनी पेटी ॥ ४३ ॥ नेमजी केरो विवाह त्या कीधो, शुभ लगनो दिवस लीधो ॥ मंडप मंडाव्या कृष्णजी राय, नेमने नित्य फुलेका थाय ॥४४॥ पीठी चोळीने मानती गाय, धवळ मंगळ जनि वराय ॥ नगीना तोरण बाध्या छे पहार, मळी गाय छे सोहागण नार ॥ ४५ ॥

जान सजाइ करे त्यां सारी, हलबल करे त्यां देव मोरारी ॥ वहु वारु वातो करे छे छाने, नही रहीये घेर ने जाइशुं जाने ॥ ४६ ॥ छप्पन क्रोड जादवनो साथ, भेळां कृष्ण बळभद्र भ्रात ॥ चढीया घोडले म्याना असवार, सुखपाल केरो लाघे नहि पार ॥ ४७ ॥ गाडी बेल्याने वगीओ वहु जोडी, म्याना गाडीए जोतर्या धोरी ॥ वेठा जादव ते वेढ वांकडीया, सोवन मुगट हीरले जडिया ॥ ४८ ॥ कडां पोंचीये वाजुवंध कशीया, शालो दुशालो ओढे छे रसीया ॥ छप्पन कोटी तो वरोवरीया जाणुं, बीजा जानैया केटला वखाणुं ॥ ४९ ॥ जानडीओ शोभे चालुडे वेषे, विवेके मोती परोवे केशे ॥ सोळ शणगार धरे छे अंगे, लटके अलवेली चाले उमंगे ॥ ५० ॥ लीलावट टीली दामणी चळ्के, जेम विजळी वादळे सळ्के ॥

चद्रानदनी मृगा जो नेणी, सिहलकी जेहनी नागसी त्रेणी ॥ ५१ ॥ रथमा वेसी नाळक धनराने, वीजी पोतानु चीर समरावे ॥ एम अनुक्रम नारी छे झाझी, गाय गीतने थाय छे राजी ॥ ५२ ॥ कोई कहे धन्य राजुल अवतार, नेम सरखो पामी भरतार ॥ कोई कहे पुण्य नेमनुं भारी, ते थकी मळीया राजल नारी ॥ ५३ ॥ एम अन्योन्य वाद वदे छे, महोढा मल्कानी वातो करे छे ॥ कोइ कहे अमे जइशुं नेहली, वळाने घी पाडशु पेहली ॥ ५४ ॥ कोइ कहे अमारा नव्द छे भारी, पहोंची न शके देव मोरारी ॥ एवी वातोना गपोडा चाले, पान पोताना मगनमां महाले ॥ ५५ ॥ पहोंतेर पळाने वृद्धि विशाळ, नेमजी नाहीने थोर शणगार ॥ पहेर्या पीतांबर जरकशी जामा, पासे उभा छे नेमना मामा ॥ ५६ ॥ माथे

मुगट ते हीरले जडियो, बहु मुलो छे कस-
बीनो घडीयो ॥ भारे कुंडल बहुमुलां मोती,
शहेरनी नारी नेमने जोती ॥ ५७ ॥ कंठे नव-
सरो मोतीनो हार, बांध्या बाजुबंध नव लागी
वार ॥ दशे आंगळीये वेढने वीटी, झीणी दिसे
छे सोनेरी लींटी ॥ ५८ ॥ हीरा बहु जडीया
पाणीना ताजा, कडां सांकळा पेहेरे वरराजा ॥
मोतीनो तोरो मुगटमां ढळके, बहु मझथी
कलंकी चळके ॥ ५९ ॥ राधाए आवी आंखडी
आंजी, बहु डायो छे नव जाय भांजी ॥ कुंम-
कुंमनुं टीलु कीधुं छे भाले, टपकुं कस्तुरी केरु
छे गाले ॥६०॥पान सोपारी श्रीफळ जोडे, भरी
पोसने चडीआ वरघोडे ॥ चडी वरघोडो चउटामां
आवे, नगरनी नारी मोतीए वधावे ॥६१॥ वाजा
वागे ने नाटारंभ थाय, नेम विवेकी तोरण
जाय ॥ घुंसळ मुसळने रवइओ लाव्या, पोंखवा

कारण सासुजी आव्या ॥ ६२ ॥ देव निमाने
जुने छे चडी, नेम नहि परणे जाशे आ घडी॥
एनामा कीधो पशुए पोकार, सामळो अरजी
नेम दयाळ ॥ ६३ ॥ तमो परणशो चतुर सुजाण,
परभाते जाशे पशुओना प्राण ॥ माटे दयाळु
दया मनमा दाखो, आज अमोने जीवता राखो
॥ ६४ ॥ आवो पशुओनो सुणी पोकार,
छोडाव्या पशुओ नेम दयाळ ॥ पाछा तो फरीया
परण्याज नही, कुवारी कन्या राजुल रही॥६५॥
राजुल कहे छे न सीध्या काज, दुश्मन थया प-
शुडा आज ॥ सामळो सर्वे राजुल कहे छे,
हरणीने तिहा ओळमो दे छे ॥ ६६ ॥ चद्रमाने
ते लछन लगाडयु, सीतानु हरण तेज करायु
॥ महारी वेळा तो क्या थकी जागी, नजर
आगळथी जाने तु भागी ॥ ६७ ॥ करे विलाप
राजुल राणी, कर्मनी गति में तो न जाणी ॥

आठ भवनी प्रीतीने ठेली, नवमें भव कुंवारी मेली ॥ ६८ ॥ एवुं नव करीए नेम नगीना, जाणुं छुं मन रंगना भीना ॥ तमारा भाइए रणमां रझळावी, ते तो नारी ए ठेकाणे नावी ॥ ६९ ॥ तमो कुळतणो राखो छो धारो, आ फेरे आव्यो तमारो वारो ॥ वरघोडे चढी मोटो जस लीधो, पाछा वळीने फजेतो कीधो ॥ ७० ॥ आंख्यो अंजावी पीठी चोळावी, वरघोडे चढतां शरम केम ना आवी ॥ महोटे उपाडे जान बनावी, भाभीओ पासे गाणा गवरावी ॥७१॥ एवा ठाठथी सर्वेने लाव्या, स्त्री पुरुषोने भला भमाव्या ॥ चानक लागे तो पाछेरा फरजो, शुभ कारज अमारुं करजो ॥ ७२ ॥ पाछा ना वळीया एकज ध्यान, देवा मांडयुं तीहा वरसीज दान ॥ दान देइने विचार कीधो, श्रावण शुदी छट्टनो मुहूरत लीधो ॥ ७३ ॥ दीक्षा

लीधी त्या नन लागी वार, साथे मुनिवर एक हजार ॥ गिरनारे जइने कारज कीधु, पचानन दहाडे केवळ लीधु ॥ ७४ ॥ पाम्या वधाइ राजुल राणी, पीवा न रह्या चागळु पाणी ॥ नेमने जइ चरणे लागी, पीउजी पासे मोक्ष त्या मागी ॥ ७५ ॥ आपो केवळ तमारी कहाचु, हुतो शोकने जोवा ने जाचु ॥ दीक्षा लेइने कारज सीध्यु, झटपट पोते केवळ लीधु ॥ ७६ ॥ मन्यु अखड एना तण राज, गया शिवसुदरी ओवाने काज ॥ शुदनी आठम आषाढ धारी, नेमजी वरीया शिवरधु नारी ॥ ७७ ॥ नेम राजुल्नी अकट गति, वरणन केम थाय मारीज मति ॥ यथाग्य कह्यु बुद्धि प्रमाणे, वेहना गुण तो केवळी जाणे ॥ ७८ ॥ गाये भणशे ने जे कोइ सामळशे, तेना मनोरथ पुरा ए फळशे ॥ सिद्धनु ध्यान हृदे जे धरशे, ते तो शिवरधु

निश्चय वरशे ॥७९॥ संवत ओगणीश श्रावण मास, वदनी पांचमनो दिवस खास ॥ वार शुक्रनुं चोघडीयुं सारुं, प्रसन्न थयुं मनडुं मारुं ॥ ८० ॥ ग्राम गागडना राजा रामसिंघ, कीधो शलोको मनने उछरंग ॥ महाजनना भाव थकी में कीधो, वांची सलोको सारो जश लीधो ॥ ८१ ॥ शहेर गुजरात रहेवाशी जाणो, वीशा श्रीमाळी नात प्रमाणो ॥ प्रभु कृपाथी नवनिधि थाय, बेहु करजोडी सुरशशि गाय ॥ ८२ ॥ नामे देवचंद पण सूरशशि कहिए, बेहूनो अर्थ एकज लहीए ॥ देव सूर्यने चंद्र छे शशि, विशेष वाणी हृदयमां वशी ॥ ८३ ॥ (इति)

॥ श्रीसिद्धाचळनुं स्तवन ॥

(एक ज्योत जले मारा नैननमें–ए चाल)

॥ शोभा सोरठ देशनी शीरे कहुं, जीहां

पालीतणा तीर्थ पंकाय ॥ जाऊ वारीरे, आदीनाथ भेटाना वधामणा ॥ (ए आकणी) हुंतो थाळ भरूं सग मोतीडे, हुतो जिनजी वधावाने जईश ॥ जाऊ वारीरे, आदी० ॥शोभा० ॥ १ ॥ हुंतो कनक कळश लेई हाथमा, हुतो प्रभु अंगे नवण करीश ॥ जाऊ० आदी० ॥ शोभा० ॥ २ ॥ हुतो कनक कचोळी लेई हाथमा, हुतो नव अंगे पूजा करीश ॥ जाऊ० आदी० ॥ शोभा० ॥ ३ ॥ हुतो रजत रकेबी लेई हाथमा, स्टा पुप्पोनी आंगीजो रचीश ॥ जाऊं० आदी० ॥ शोभा० ॥ ४ ॥ हुतो रत्न जडीत धूपधाणु लेई, नित्य आदीनाथ सन्मुख रहीश ॥ जाऊं० आदी० ॥ शोभा० ॥ ५ ॥ हुं तो प्रभु सुख द्रव्य दीपक धरी, पछे नदाश्रनतो मार्याजो पुरीश ॥ जाऊं० आदी० ॥ शोभा० ६ ॥ हुतो श्रीफळ पधराउं जीनमंदीरे, नित्य नैवेधनी

पूजा करीश ॥ जाऊं० आदी० ॥ शोभा० ॥७॥ कर जोडी सेवकनी विनंती, हुं तो आदीनाथ शरणुं लहीश ॥ जाऊं० आदी० ॥ शोभा० ॥ ॥ ८ ॥ (इति)

॥ श्रीसिद्धाचळ (रायणनुं) नुं स्तवन

(जिनजी त्रेवीशमो जिन पास के, आस मूज पुरवे रे लोल–ए देशी)

॥ जिनजी आदीश्वर अरिहंत के, पगलां इहां धर्या रे लोल ॥ मारा नाथजी रे लोल ॥ जिनजी पुरव नवाणुं वार के, आप समोसर्या रे लोल ॥मारा० ॥ जिनजी सुरतरु सम सुखकार के, रायण रुयडी रे लोल ॥ मारा० ॥ जिनजी निरखी हरखे चित्तके, भांगे भुखडी रे लोल ॥ मारा०॥ १ ॥ जिनजी निर्मल शीतल छांह के, सुगंधी विस्तरे रे लोल ॥मारा० ॥ जिनजी पान फूल फळ वंध के, पुण्य निधि भरे रे लोल॥मारा०॥

जिनजी साधिष्टायक देव के, सदा हित माधता रे
लोल ॥ मारा०॥ जिनजी हलु करमी हरखाय के,
अमर फल याचता रे लोल ॥ मारा० ॥ २ ॥
जिनजी मधुरी मोहन वेल के, कलियुगमा
वडी रे लोल ॥ मारा० ॥ जिनजी सेने मत
महंत के, त्रिभुवनमा वडी रे लोल ॥मारा०॥
जिनजी पूण्यवत जे माणस के, ते आनी चडे रे
लोल ॥ मारा० ॥ जिनजी शुभ गति बाधे
आयुष्य के, नरके नवि पडे रे लोल ॥ मारा० ॥
॥ ३ ॥ जिनजी प्रभु पगला सुपसाय के, सुपू-
जित सर्वदा रे लोल ॥ मारा० ॥ जिनजी
म्होटाना अनुयोग के, आपे सपदा रे लोल
॥ मारा० ॥ जिनजी सूर्यकांत मणि जेम के,
सूर्य प्रभा भरे रे लोल ॥ मारा० ॥ जिनजी
पारसी स्वामी सग के, रग प्रभा धरे रे लोल ॥
॥ मारा०॥४॥ जिनजी गरढ सदा फलदाय के,

मोक्षफल आपजो रे लोल ॥ मारा० ॥ जिनजी सफल क्रिया विधि छाप के, निर्मल छापजो रे लोल ॥ मारा० ॥ जिनजी धर्मरत्न फल योग्य के, अमर थाउं सदा रे लोल ॥ मारा० ॥ जिनजी आशीर्वाद आलाद के, देजो सर्वदा रे लोल मारा० ॥ ५ ॥ इति)

॥ श्रीसिद्धाळजीनुं स्तवन ॥

(काली कमलीवाले तुमपे लाखो सलाम-एचाल)

॥ सिद्धाचलना वासी जिनने ॥ क्रोडो प्रणाम ॥ (अंचली) आदि जिनवर सुखकर स्वामी, तुम दर्शनथी शिवपद पामी ॥ थया छे असंख्य ॥ जिनने क्रोडो प्रणाम ॥ सिद्धा० ॥ १ ॥ विमल गिरिना दर्शन करतां, भवोभवना तम-तिमिर हरतां ॥ आनंद अपार ॥ जिन० सिद्धा० ॥२॥ हुं पापी छुं नीच गति गामी ॥ कंचन गिरिनुं शरणुं पामी ॥ तरसुं-जरुर ॥ जिन० सिद्धा० ॥३॥

अणधार्यो आ समयमा दर्शन, करता हृदय थयु अति परसन ॥ जीवन उज्ज्वल ॥ जिनने० सिद्धा० ॥ ४ ॥ गोडी पार्श्व जिनेश्वर केरी, करण प्रतिष्ठा विनति घणेरी ॥ दर्शन पाम्यो मानी ॥ जिनने० सिद्धा० ॥५॥ संवत ओगणीश नेवु वर्षे, शुद पचमी कर्यां दर्शन हर्षे ॥ मळ्यो जेट शुभ मास ॥ जिनने० सिद्धा० ॥ ६ ॥ आतमकमलमा सिद्धगिरि ध्याने, जीवन मळशे केवळज्ञाने ॥ लब्धिसूरि शिवधाम । जिनने० सिद्धा० ॥ ७ ॥ (इति)

॥ श्री ऋषभदेवजीनु स्तवन ॥

(कोयलो पर्वत धुधलो रे लोल (अथवा) आवु अचळ राळियामणोरे लाल—ए देशी)

॥ परम पुरुष पुण्य नोगसे रे लोल, मळीयो माहरो चित्त रे वाल्हेश्वर ! ॥ टळीयो भवदुःख पाशथी रे लोल, ग्ळीयो समकित वित्त रे वाले

श्वर ! ॥ जय जय प्रथम जिनेश्वरु रे लोल ॥ १ ॥ (ए आंकणी) फळीयो देवतरु हवे रे लोल, गळीयो न करूं मुज मन रे वाले०॥ चळीयो न जाउं मोहरायथी रे लाल, हळीयो चेतन तुम चर्ण रे वाले० ॥ जय० ॥ २ ॥ चळीयो मनमथ इशने रे लोल, दळीयो ते क्षणमांही रे वाले० ॥ वळीयो एह संसारमां रे लोल, चळीयो तुं नही क्यांय रे वा० ॥ ३ ॥ कळीयो सदागम वाणीए रे लोल, भळीयो शुभ रुचि ध्यान रे वा० ॥ वळीयो मुज दिन आजथी रे लोल, टळीयो दुष्कृत घट तान रे वा० ॥ जय० ॥ ४ ॥ जग चिंतामणि सारीखो रे लोल, जगत वल्लभ जगनाथ रे ॥ वा० ॥ करुणानिधि जगमां वडो रे लोल, चलवे शिवपुर साथ रे वा० ॥ जय० ॥ ५ ॥ केवळज्ञान दिवाकरु रे लोल, केवळ

कमळाकत रे वा० ॥ क्षायिक चारित्र अनुभवे रे लोल, कीधो भवोदधि अत रे वा० ॥ जय० ॥ ॥ ६ ॥ चउराशी गणधर भला रे लोल, गिरि अष्टापद सिद्ध रे वा० ॥ उत्तमविजय कविराजनो रे लोल, रत्न लहे नवनिध रे वा० ॥ जय० ॥ ७ ॥ (इति)

॥ श्री ऋषभदेव जिन स्तवन ॥

॥ वालुडो निःस्नेही थइ गयो रे, छोडयु विनतानु राज ॥ छोडयु० ॥ संयम रमणी आराधवा, लेवा मुक्तिनु राज ॥ लेवा० ॥ मेरे दिल धर्मी गयो वाल्मो ॥ १ ॥ (ए आकणी) मातान भ वा मकला रे, जाय दिन नवि रात ॥ जाय० ॥ रत्न सिंहासन बेसता, चाले अडवाणे पाय ॥ चाले० ॥ मेरे० ॥ २ ॥ वहाल्हानु नाम नवि वीसरे रे, मने आसुडानी धार ॥ मेरे० ॥ आरडर्स्त्री छाना नही, गया

वरस हजार ॥ गया० ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ केवळ रत्न आपी करी रे, पूरी मातानी आश ॥ पूरी० ॥ समवसरण लीला जोइने, साध्यां आतम काज ॥ साध्यां० ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ भक्तिवत्सल भगवंतने रे, नामे निर्मळ काय ॥ नामे० ॥ आणि जिणंद आराधतां, महिमां शिवसुख थाय ॥ महिमा०॥ मेरे० ॥ ५ ॥(इति)

॥ श्री ऋषभदेव जिन स्तवन ॥

(कवाली–नजर टुंक महेरकी करके–ए चाल)

॥ देख्या श्री नाभिके नंदा, वदन जेसा शरदका चंदा ॥ मुगट मणि माणेके जडीया, अमुलख कनकसे घडीया ॥ देख्या० ॥ १ ॥ अधर जेसा लाल परवाळा, उरनपे मोतीकी माला ॥ तिलक वर भालशुं राजे, बीजोरा हस्तमें छाजे ॥ देख्या० ॥ २ ॥ केसर गोशीर्ष कस्तुरी, नंदनवन चंदना चूरी ॥ करो नव

तिलक जिन अगे, लहो जिम अचल सुख रंगे ॥ देख्या० ॥ ३ ॥ कमल मचकुइ ने वेली, मोगर सिरि जाइ चंनेली ॥ कुसुम शिर शेखरो सोहे, जगत गुरु देखी मन मोहे ॥ देख्या० ॥ ॥ ४ ॥ मूर्त्ति महा पुण्यमें पाया, देखत जिन मनही लोभाया ॥ माणेक मुनि दास है तेरा, दादा दुःख टालीए मेरा ॥ देख्या० ॥५॥(इति.)

॥ श्रीऋषभदेव जिन स्तवन ॥

(पनजी मुडे बोल-ए चाल)

॥ म्हाम्र मुडे बोल, बोल बोल आदेश्वर वाल्हा, काइ थारी मरजी रे म्हाम्र० (अचली) माता मरुदेवी वाट जोवता, इतने वधाई आई रे ॥ आज ऋषभजी उतर्या वागमें, सुण हरखाई रे ॥ म्हाम्र० ॥ १ ॥ नाय धोवने गज असवारी, करी मरुदेवी माता रे ॥ जाय वागमें नंदन निरखी, पाई साता रे ॥ म्हाम्र० ॥ २ ॥ राज

छोडने निकल्यो ऋषवा, आ लीला अद्भुत्ती रे ॥ चमर छत्रने और सिंहासण, मोहनी मूर्त्ति रे ॥ म्हास्॰ ॥ ३ ॥ दिनभर बैठी वाट जोवती, कद मारो ऋषवो आवे रे ॥ केहती भरतने आदि-नाथकी, खबरां लावो रे ॥ म्हांस्॰ ॥ ४ ॥ किसा देशमें गयो वालेसर, तुज विन वनिता सुनी रे ॥ वात कहो दिल खोल लालजी, क्युं वण्या मुनि रे ॥ म्हांस्॰ ॥ ५ ॥ रया मजामें है सुखसाता, खुब किया दिल चायारे ॥ अब तो बोल आदेश्वर म्हांस्, कल्पे काया रे ॥ म्हांस्॰ ॥ ६ ॥ खैर हुई सो हो गई वाला, वात भली नहीं कीनी रे ॥ गया पीछे कागद नही दीनो, म्हारी खवर न लीनी रे ॥ म्हांस्॰ ॥ ७ ॥ ओलंभामें देवुं कठा लग, पाछो क्यों नही बोलरे ॥ दुःख जननीको देख आदेश्वर, हियडे तोले रे ॥ म्हांस्॰ ॥ ८ ॥ अनित्य

भवना भाई माता, निज अतमने तारी रे॥ केवळ पामी मोक्ष सिधाया, ज्याने वदणा हमारी रे ॥ म्हाह्र० ॥ ९ ॥ मुक्तिका दरवाजा खोल्या, मरु देवी माता रे ॥ काल असंख्य रह्या उघाडा, जनू जड गया जाता रे ॥ म्हाह्र० ॥ १० ॥ साल नहोत्तर तीर्थ ओसिया. गयवर प्रभु गुण गाया रे ॥ मूरति मोहन प्रथम जिणदकी, प्रणमु पाया रे ॥ म्हाह्र० ॥ ११ ॥ (इति)

॥ श्री शांतिनाथजीनुं स्तवन ॥

(जीरे मारे जाग्यो रे कुमर ताम-पदेशी)

॥ जीरे मारे शाति जिनेश्वर देव, अरज सुणो एक माहरी जीरे जी ॥ जीरे मारे भवमा भमतो रे सार, सेवा पाम्यो ताहरी जीरे जी ॥ १ ॥ जीरे मारे मानु सारु देव, हरिहर दीठ लोयणा जीरे जी ॥ जीरे मारे दीठे लाग्यो रग, तुम उपर एक मना जीरे जी ॥ २ ॥ जीरे मारे जेम

पंथी मन धाम, सीताने मन रामजी जीरे जी ॥ जीरे मारे विषयीने मन काम, लोभी चिंते दामशुं जीरे जी ॥ ३ ॥ जीरे मारे जीव मदो दंभ नाग, नित्य ए ज्ञान दिशा थकी जीरे जी ॥ जीरे मारे एवो प्रभुशुं रंग, ते तो तुम कृपा थकी जीरे जी ॥४॥ जीरे मारे शांतिकरण शांतिनाथ, शांति तणा अर्थे सदा जीरे जी॥जीरे मारे ऋद्धि वृद्धि तुम पास, अमृत पद आपो सदा जीरे जी ॥ ५ ॥

॥श्री पार्श्वनाथनुं (पुजानुं) स्तवन ॥

(साहीब शिव बसीया-एदेशी)

॥ गोठीडा तुं बार उघाड, पण छे पूजानुं ॥ पण छे पूजानुं दील छे देरानुं ॥ गोठीडा० (ए आंकणी) जगवल्लभ प्रभु नाम छे जेहनुं, मुने दर्शन तेनुं देखाड ॥ पण छे पूजानुं॥ १॥ जे मागे ते आपुं तुजने, मेल तुं मननी गांठ ॥पण० ॥ क्षण एक जाये ते मुज न खमाये,

एहनुं हेज लागु छे महारे हाट ॥ पण० ॥ २ ॥ आयो छु जोवा पारन होवा, मरुडी मोहनी वाट ॥ पण० ॥ फुल सुगा अने नहु गगा, मेंतो लीधा छे माने पाट ॥ पण० ॥ ३ ॥ पास जिनेश्वर प्रभु परमेसर, एहने केशरनी करू आट ॥ पण० ॥ तुन मुज माहेन एक छे माटे, महारा मननी हांस पोहोचाड ॥ पण० ॥ ४ ॥ नमा पोत्रमा बेठो नमाटे, दुर्जन मोहनी धाड ॥ पण० ॥ उदयरतन कहे हु दास छु तेहनो, महारा कर्मनी फामस काढ ॥ पण छे पूजानु ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

(मारे नीगारी र थर आज,प्रभुमुख जोवाने प चार)

॥ नारे प्रभु नही मानु ॥ नही मानु रे अवरनी आण ॥ नार० ॥ महारे ताहारु वचन प्रमाण ॥ नार० (ए आकणी) हरिहरादिक देव

अनेरा, ते दीठा जग मांहे रे ॥ भामिनी भरम भृकुटीयें भूल्या, ते मुझने न सुहाय ॥ नारे० ॥१॥ केइक रागीने केइक द्वेषी, केइक लोभी देव रे ॥ केइक मद मायामां भरिया, केम करीए तसु सेव ॥ नारे० ॥ २ ॥ मुद्रा पण तेमां नवि दीसे प्रभु, तुज मांहेली तिल मात्ररे ॥ ते देखी दिलडुं नवि रीझे, शी करवी तेहनी वात ॥ नारे० ॥ ३ ॥ तुं गति तुं मति तुं मुझ प्रीतम, जीव जीवन आधार रे ॥ रात दिवस स्वपनांतर तुंही, तुं माहारे निरधार ॥ नारे० ॥ ४ ॥ अव-गुण सहु उवेखीने प्रभु, सेवक करीने निहाळ रे॥ जग बंधव ए विनती मोरी, माहारा सवि दुःख दूरे टाल ॥ नारे० ॥ ५ ॥ चोवीशमां प्रभु त्रिभुवन स्वामी, सिद्धारथना नंद रे ॥ त्रिशला-जीना न्हानडीया प्रभु, तुम दीठे अति आणंद॥ नारे० ॥ ६ ॥ सुमतिविजय कविरायनो रे,

गमनिजय कर जोड रे ॥ उपगारी अरिहतजी माहारा, भव भवना बंध छोड ॥ नारे प्रभु नही मानु ॥ ७ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनु स्तवन ॥

॥ मारा प्रभुजी मुजने तारो रे वीर जिणंदा ॥ भव भवना दु ख निवारो रे ज्ञानी मुणींदा (ए आंकणी) वहाल्या रे मारा पाप तणी मति लीधी, में पर निंदा बहु किधी रे वीर जिणंदा ॥ मारा प्रभुजी० ॥ १ ॥ वहाला० नरक निगोदमा भमीयो, मे एळे काळ गमीयो रे वीर० ॥ मारा० ॥ २ ॥ वहाला० परदारामा घणुं राच्यो, जेम फरतो माड माच्यो रे वीर० ॥३॥ वहाला० धन रमणीमा घणु राच्यो,म जाती काळ न जाण्यो रे वीर० ॥ मारा० ॥ ४ ॥ वहाला० परधन लेवाने रमीयो, हु लइने हठे हमीयो रे वीर० मारा० ॥ ५ ॥ वहाला० मेरा न

कीधी तमारी, शी गति थाशे अमारी रे वीर०॥ ॥ मारा० ॥ ६ ॥ वहाला० क्रोध कषायमां मुंझ्यो, हुं तेथी भवमां डुडचो रे वीर० ॥ मारा० ॥ ७ ॥ वहाला० सेवक धारीने स्थापो, माणकने मुक्ति आपो रे वीर जिणंदा ॥ मारा प्रभुजी मुजने तारो रे वीर जिणंदा ॥ ८ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

(मजा देते है क्या यार, तेरे बाल घुंगरवाले-ए चाल)

॥ मुक्तिको गये श्री महावीर, सत्यका मार्ग बताने वाले (अंचली) जिनकी वाणी ललित अनूप, सुनते सुरनर किन्नर भूप ॥ उत्तम शांत मूर्ति छबि रूप, ज्ञानका द्योत बढाने वाले ॥ मुक्तिको० ॥ १ ॥ श्री सिद्धारथ सूत निर्वाण, पूजत होय परम कल्याण ॥ प्रभुजी ! मोहि अपनो कर जान, अहिंसा धर्म चलानेवाले ॥ मुक्तिको० ॥ २ ॥ रहे शुभ धर्ममें ध्यान हजूर, मुझ आशा

है भरपूर ॥ करके कर्मको चकनाचूर, अपनी मेवामें जुलवाले ॥ मुक्तिको० ॥ ३ ॥ आयु वरप नहोत्तर पाल, काटकर भव झझटके जाल॥ हुए परम सुखी चिरकाल, नाम महावीर धराने वाले ॥ मुक्तिको० ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर जिनना चउद स्वप्ननां वर्णननुं स्तवन ॥

(वीरजी सुणो एक वीनती मोरी-ए देशी)

॥ राय रे सिध्दारथ घेर पटराणी, नामे त्रिशला सुलक्षणी ए ॥ गज भुवन माहे पल्ग पोढता, चउद सुपन राणी ए लह्या ए ॥ १ ॥ पहेले रे सुपने गयवर दीठो, बीजे वृषभ सोहामणो ए ॥ त्रीजे सिंह सुलक्षणो दीठो, चोथे लक्ष्मी देवता ए ॥ २ ॥ पाचमे पच-वरणी फुलनी माळा, छठे चद्र अमिय झर्यो ए ॥ सातमे सूरज आठमे ध्वजा, नवमे कलश

अमिये भर्यो ए ॥ ३ ॥ पद्म सरोवर दशमें दीठो, खीर समुद्र दीठो अगीयारमें ए ॥ देव विमान ते बारमें दीठुं, रण झण घंटा वाजता ए ॥ ४ ॥ रत्ननो राशि ते तेरमो दीठो, अग्नी शिखा दीठी चउदमें ए ॥ चउद सुपन लही राणीजी जाग्यां, राय समोवड पोहोतलां ए ॥ ५ ॥ सुणोरे स्वामी में तो सुहलणां लाध्यां, पाछली रात रळीयामणी ए ॥ राय रे सिद्धा-रथ पंडित तेड्या, कहो रे पंडित फळ एहनां ए ॥ ६ ॥ अम कुळ मंडण तुम कुळ दीवो, धन रे महावीरस्वामी अवतर्या ए ॥ जे नर गावे ते सुख पावे, आनंद रंग वधामणां ए ॥७॥ (इति)

॥ श्री वासुपूज्य जिन स्तवन॥

(सांभळ रे सखीया हमारी, मुजे नेम पियाने विसारी (अथवा) वंजारानी-चाल)

॥ वासुपूज्य प्रभु ओ हमारी, आ अरज सुणो

हितकारी (ए आकणी) भवसागरमा हुं भमुं छु, काम क्रोधनी साथे रमु छु रे ॥ मनमा बहु प्रेम वधारी ॥ आ अरज० ॥ १ ॥ पण सेवकने तमें तारो, आ भवथकी पार उतारो रे ॥ कहु नेकर जोडी हु नारी ॥ आ अरज० ॥ २ ॥ मने एक आधार तमारो, तेथी आवी प्रभु भव तारो रे ॥ कहु कहु शु नारनारी ॥ आ अरज० ॥ ३ ॥ एम अरज करी में आजे, मुज हसने आनद काजे रे ॥ गुरु चारित्रविजय दिल-धारी ॥ आ अरज० ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री नेमनाथजीनुं स्तवन ॥

(पाले शराब मजेदार मेरे यार,—ए चाल)

॥ धीमा चालो मोरा नेम गिरनार, धीमा चालो मोरा नेम (ए आकणी) कामणगारा कथजी तमे, अधवच आपी छेह देदार ॥धीमा० ॥ द्वार आवी प्रभु पाछा गयाने, पशुपर वारी

नेह दिलदार ॥ धीमा० ॥ १ ॥ राजेमती सखी शाम सलुणा, आश रही मन जोवानी हार ॥ धीमा० ॥ शियलवंत वनमां गया ते, जीती काम विकार तुम यार ॥ धीमा० ॥२॥राजेमती पती प्रित न छोडुं, तोडुं माया त्रिभुवननी हार ॥धीमा०॥ महावीर मंडळी अर्ज करे छे, स्तवन करे तुम चरण मोझार ॥ धीमा० ॥ ३ ॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(क्या सोहाए रंगे जो मोरा रंग—ए चाल)

॥ केवो शोभे छे अजब आंगीनो रंग, आहा एतो मन करे छे मारु दंग ॥ केवो० ॥ १ ॥ मुगुटमांही मोती पुर्या छे, रंगी बेरंगी चळके छे गोरा नंग॥ केवो० ॥ २ ॥ काने कुंडल हाथोमें श्रीफळ, जोइ जिगरमां झामे उमंग रंग॥केवो० ॥ ३ ॥ चिंता चूरो आशा पुरो मुज, चिंतामणी दर्शनथी थयुं प्रसन्न मन ॥ केवो० ॥४॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(जरके कलदर रन वन फीरके नदर लेकर आते है (अथवा) मह्री जिणदा छो सुखकदा, कष्ट अमारा कापोने-ए चाल)

॥पार्श्व प्रभुजी, अर्ज करू जी, हरनिश सेवा आपोने ॥ भक्तवत्सल भगवत जिनेश्वर, भव-जल पार उतारोने ॥ प्रभु तमे न तारो तो, हने कोनो छे आधार (२), कृपादृष्टी करोने कृपालु आनार (२) स्वामीजी हने तो करो येनकनी मार (२) प्रभु तमे० ॥ पार्श्व० ॥ १ ॥ जिन जाया छो वामाना तमे अश्वसेन सुत (२) शाने माटे स्वामीजी करो छो हवे घुत (२) सर्वेनी मनो कामना करो फळी भूत ॥ जिन०॥ पार्श्व० ॥ २ ॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(इस तन धनकी कौन बडाई—ए चाल)

॥ कोयल टहुक रही मधुवनमें, पार्श्व प्र-

भुजी वसो मेरे दिलमें ॥ (अंचली) बालपणे प्रभु अद्भुत ज्ञानी, सुरपति नाग कियो एक छिनमें ॥ कोयल० ॥ १ ॥ दीक्षा लइ प्रभु विचरण लागे, भींज गये संजमके रंग में ॥ कोयल० ॥ २ ॥ समेतशिखर प्रभु मुक्ति पधारे, प्रभुजीकी महिमा तीन भुवनमें ॥कोयल० ॥३॥ सेवककी प्रभु यही अरज है, दिल अटक्यो तेरे चरण कमलमें ॥ कोयल० ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री सामान्य जिन स्तवन ॥

(तमे वधा वहादुर अही आवो, लढवाने सहु सज्ज थावो—ए चाल)

॥ करी खलक दीवानी खागी, प्रभु पाम्या पंचम नारी (ए आंकणी) नही जन्म मरणनो फेरो, नही रोग सोग अनेरो ॥ नही भय पण त्यां कोइ केरो, नही सुख, जरा नही दुःख ॥

साधना सुख, भोगवे भारी ॥प्रभु पाम्या० ॥१॥ नही भोग निजोग गभराए, त्या वैर विरोध न थाय ॥ नही सगो सनधी कोए, नही रोष, जरा नही दोष ॥ नही अफसोस, सदा सुखकारी ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ नही कर्म भर्म के काया, नही लोभ ललुता माया ॥ नही तडको के नही छाया, नही आहार, नही निहार ॥ उजन छे वहार, हवा हितकारी ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ नही उजड के नही वस्ती, नही वस्तु किमत सस्ती॥ नही मौनपणु नही मस्ती ॥ नही घात, नही एकात ॥ नही दिनरात, अचवो भारी ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ नही गध, रूप, रस, शब्द, नही निस्नेही, नही लुब्ध ॥ नही नार तिथी के अब्ध, करी मार, पाम्या भवपार ॥ नमे नरनार, मुनि धन्य धारी ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री सिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥

(मनमंदिर आवो रे, के कहु एक वातडली (अथवा) पाणी भरवा हुं गइर्थारे-ए देशी)

॥ सिद्धचक्रने भजीए रे, के भवियण भाव धरी ॥ मद माननें तजीए रे, के कुमती दूर करी (ए आंकणी) पेहेले पदे राजे रे, के अरिहंत श्वेत तणुं ॥ बीजे पद छाजे रे, के सिद्ध प्रगट जाणु ॥ सिद्ध० ॥१॥ त्रीजे पदे पीळां रे, के आचारज कहीए ॥ चौथे पदे पाठक रे, के नील वरण लहीए ॥ सिद्ध० ॥ २ ॥ पांचमे पदे साधु रे, के तप संजम सूरा ॥ शाम वरणे सोहे रे, के दर्शन गुण पुरा ॥ सिद्ध० ॥ ३ ॥ दर्शन नाण चारित्र रे, के तप संजम शुद्ध वरो ॥ भविचित्त आणी रे, के हृदयमां ध्यान धरो ॥ सिद्ध० ॥ ४ ॥ सिद्धचक्रने ध्याने रे, के संकट भय न आवे ॥ कहे गौतम वाणी रे, के अमृत पद पावे ॥ सिद्ध० ॥ ५ ॥ (इति)

॥प्रभुदर्शन वखते बोलवानु काव्य॥

(चाल नाटक—तेरी छलबल है न्यारी०)

॥ करो दर्शन जिनद, होवे आतम आनद । कटे जगतके फद, मानो चतुर सुजान ॥ धरो मन प्यार, प्रभु लगन लगावो । दर्शनमे शिव-सुख, पावो मेरी जान ॥ प्रभु दर्शन महान, वल्लभ आतम सुजान । करे अपने समान, होवे वाह वाह वाह ॥ १ ॥ (इति)

॥ श्री शान्तिनाथ विनति रूप छंद ॥

॥ शारद माय नमुं शिर नामी, हु गाऊ त्रिभुवनको स्वामी ॥ शाति शाति जप मन कोइ, ता घर शाति सदा सुख होई ॥ १ ॥ शाति जपी जे कीजे काम सोइ काम होवे अभिराम ॥ शाति जपी परदेश सिधारे, ते रणे कुशल्ला सेइ आवे ॥ २ ॥ गर्भ थकी प्रभु मारी निवारी, शान्तिजी नाम

दियो हितकारी ॥ जे नर शांति तणा गुण गावे, ऋद्धि अचिंती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु शांति सहाइ, ता नरकूं क्या आरति भाइ ॥ जो कछु वंछे सोइ पूरे, दारिद्र दुःख मिथ्यामति चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योत प्रकाशी, घट घट अंतरके प्रभु वासी ॥ स्वामी स्वरुप कह्युं नवि जाय, कहेतां मो मन अचरिज थाय ॥ ५ ॥ डार दीए सवहीं हथियारा, जीत्यां मोह तणा दल सारां ॥ नारी तजी शिवशुं रंग राचे, राज तज्युं पण साहेब साचे ॥ ६ ॥ महा वलवंत कहिजे देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ॥ ऋद्धि सयल प्रभु पास लहीजें, भिक्षा आहारी नाम कहीजें ॥ ७ ॥ निंदक पूजककुं सम भायक, पण सेवकहीकुं सुख दायक ॥ तजा परिग्रह भये जग नायक, नाम अतिथि सवि सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र सम चित्त गणीजें, नामदेव

अरिहंत भणीजें, सयल जीव हितवंत कहीजें, सेवक जाणी महा पद दीजें ॥ ९ ॥ सायर जेमा होत गभीरा, दूषण एक न माहे शरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी, पण न रहे प्रभु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे जिनजी सब देखे, पण सुपनांतर कबहु न पेखे ॥ रीस वीना बाबीस परीसा, सेना जीती ते जगदीशा ॥११॥ मान विना जग आण मनाई, माया विना शिवशुन्य ल्याई ॥ लोभ विना गुणराशि ग्रहीजे, भिख्खु भये त्रिगडो सोहीजे ॥ १२ ॥ निग्रंथपणे शिर छत्र धरावे, नाम यति पण चमर ढरावे ॥ अभयदान दाता सुख कारण, आगल चक्र चले अरिदारण ॥ १३ ॥ श्री जिनराज दयाल भणीजे, करम सबे सो भूर हणीजे ॥ चउविह संघ तीरथ थापे, लच्छी घरी छोगनही आपे ॥१४॥ विनयवंत भगवंत कहावे, ना किसकु शीस

नमावे ॥ अकिंचनको विरुद धरावे, पण सोवन-पद पंकज ठावे ॥ १५ ॥ राग नहीं पण सेवक तारे, द्वेष नहीं निगुणा संग वारे ॥ तजी आरंभ निज आतम ध्यावे, शिव रमणीको साथ चलावे ॥ १६ ॥ तेरो महिमा अद्भुत कहियें, तोरा गुणको पार न लहीयें ॥ तु प्रभु समरथ साहेब मेरा, हुं मनमोहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥ तूं रे त्रिलोक तणो प्रतिपाल, हूं रे अनाथी तु रे दयाल ॥ तु शरणागत राखण धीर, तु प्रभू तारक छो वडवीर ॥ १८ ॥ तुंहि समोवड भाग्गज पायो, तो मेरो काज चड्यो रे सवायो ॥ कर जोडी प्रभु विनवूं तोसुं, कृपा करो जिनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥ जनम मरणना दोष निवारो, भव सागरथी पार उतारो ॥ श्री हथ्थिणाउर मंडण सोहे, तिहां श्री शांति सदा मन मोहे ॥ २० ॥ पद्मसागर गुरुराज पसाया, श्री गुणसागरके मन

भाया ॥ नरनारी जे चित्तें गावे, ते मनोवंछित निश्च पावे ॥ २१ ॥ (इति)

॥श्री कल्लाणकंदं पाद पूर्ति स्तुति ॥

॥ भाना नयाणेग नरिंद विंद, सव्विद संपुज्ज पयार विंदं ॥ चंदे जसो निज्जिय चारु चंद, कल्लाण कंद पढम जिणंद ॥ १ ॥ चिंतेगहार रिउदप्प दार, दुखग्गिजार सममुल्लखकार ॥ तिथ्थेसरा दिंतुसया नीनार, अपार संसार समुद्रपार ॥ २ ॥ अन्नाणम तुखलणे सुनप्प, मज्जुतिमही लियकोहदप्प ॥ मसेमिसिद्धत महो अणप्प, निव्वाण मग्गे नरजाण कप्प ॥ ३ ॥ हमाधिरुढा वरदाण धन्ना, वाईसरी नाण गुणो ववन्ना॥ निश्च पिअल्लहन्न उपमन्ना, कुंदिंदु गोख्खीर तुमार वन्ना॥४॥ (इति)

॥ श्री सीमंधरस्वामीनी स्तुति ॥

॥ श्री सीमंधर, मुजने वाल्हा, आज सफल सुविहाणजी ॥ त्रिगडे तेजे, तपता जिनवर,

मुझ तुठा हुं जाणुंजी ॥ केवल कमला, केलि करंतो, कुल मंडण कुल दीवोजी ॥ लाख चोरासी, पूरव आयुं, रुखमिणी वर घणुं जीवोजी ॥१॥ संपतिकाले, वीश तीर्थंकर, उदया अभिनव चंदाजी ॥ केइ केवली केइ, बालक परण्या, केइ महीपती सुखकंदाजी ॥ श्री सीमंधर, आदि अनोपम, महाविदेह खेत्रें जिणंदाजी ॥ सुरनर कोडा कोडी मली, जोवे मुख अरविंदाजी ॥ २ ॥ सीमंधर मुख, त्रिगडु जोवा, हुं अलजायो वाणीजी ॥ आडा डुंगर, आवी न शकुं, वाट विषम अरु पाणी जी ॥ रंग भरि राग, धरी पाय लागुं, सूत्र अर्थ मन सारोजी ॥ अमृत रसथी, अधिक वखाणी, जीवदया चित्त धारोजी ॥ ३ ॥ पंचांगुलीमें, प्रत्यक्ष दीठी, हुं जाणुं जग माताजी ॥ पेहरण चरणा, चोली पटोली, अधर विराजे राताजी ॥ स्वर्ग भुवन, सिंहासण बेठी, तुंहीज देवी

निख्याताजी ॥ सीमधर, शासन रखवाली, शा-
तिकुशल सुख दाताजी ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री सिद्धाचळजीनी स्तुति ॥

॥ श्री शत्रुजय मडण, ऋषभ जिणद दयाळ ॥ मरुदेवा नदन, वदन करु त्रण्य काळ ॥ ए तीरथ जाणी, पूरव नवाणु वार ॥ आदिश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार ॥ १ ॥ त्रेवीश तीर्थंकर, चढिया एणे गिरि भावे, ए तीरथना गुण, सुर असुरादिक गावे ॥ ए पावन तीरथ, त्रिभुवन नही तस तोले ॥ ए तीरथना गुण, सीमधर मुख बोले ॥ २ ॥ पुडरिगिरि महिमा, आगममा परसिद्ध ॥ विमलाचल भेटी, लहीये अविचल रिद्ध ॥ पचम गति पोहोता, मुनिवर कोडा कोड ॥ एणें तीरथें आवी, कर्म विपाक विछोड ॥ ३ ॥ श्री शत्रुजय गिरि, अहोनिश

रक्षाकारी ॥ श्री आदि जिनेश्वर, आण ऱ्हदयमां धारी ॥ श्री संघ विघ्नहर, कविड यक्ष भरपूर॥ श्री संघनां संकट, रविबुध सागर चूर ॥४॥(इति)

॥ श्री सिद्धचक्रजीनी स्तुति ॥

॥ जिनशासन वंछित, पूरण देव रसाल ॥ भावे भवि भणीए, सिद्धचक्र गुणमाल ॥ त्रिहुं काले एहनी, पूजाकरे उजमाल ॥ ते अमर अमर पद, सुख पामे सुविशाल ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध वंदो, आचारज उवज्झाय ॥ मुनि दरसण नाण, चरण तप ए समुदाय ॥ ए नव पद समुदित, सिद्धचक्र सुखदाय ॥ ए ध्यानें भविनां भव-कोटि दुःख जाय ॥ २ ॥ आसो चइतरमां, शुद सातमथी सार ॥ पुनम लग कीजें, नव आंबील निरधार ॥ दोय सहस गणेवुं, पद सम साढाचार ॥ एकासी आंबील, तप आगम अनुसार ॥ ३ ॥ श्री सिद्धचक्र सेवक, श्री विमलेसर देव ॥ श्रीपाल

नणी परें, सुख पूरे स्वयमेव ॥ दु ग्म दोहग नावे, जेह करे एहनी सेव ॥ श्री सुमति सुगुरुनो राम कहे नित्य मेव ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री ऋषभदेव जिन स्तुति ॥

॥ प्रह उठी वंदुं, ऋषभदेव गुणवंत ॥ प्रभु बेठा सोहिये, समवसरण भगवंत ॥ त्रण छत्र बिराजे, चामर ढाले इन्द्र ॥ जिनना गुण गावे सुरनर नारीना वृंद ॥ १ ॥ बार पर्षदा बेसे, इन्द्र इंद्राणी राय ॥ नव कमल रचे सुर, तिहां ठविया प्रभु पाय ॥ देव दुंदुभी वाजे, कुसुम वृष्टि बहु हुंत ॥ एवा जिन चोवीस, पूजो भवि एक चित्त ॥ २ ॥ जिनजोजन भूमी, वाणीनो विस्तार ॥ प्रभु अर्थ प्रकाशे, रचना गणधर सार ॥ सो आगम सुणता, छेदीजे गती चार ॥ जिन वचन वखाणी, लहीये भवनो पार ॥ ३ ॥ यक्ष गोमुख गीरुओ, जिननी भगती करेय ॥

तिहां देवो चक्केसरी, विघन कोड हरेव ॥ श्री तपगच्छ नायक, विजयसेन सुरिराय ॥ तस केरो श्रावक, ऋपमदास गुण गाय ॥४॥ (इति)

॥ श्री शांतिनाथ जिन स्तुति ॥

॥ श्री शांति जिणेसर समरिये, जेहनी अचिरा माय ॥ विश्वसेन कुल उपना, मृग लंछन पाय ॥ गजपुर नयरीनो धणी, सोवन वर्णी काय ॥ धनुष चालीश जस देहडी, वरप लाखनुं आय ॥ १ ॥ शांति जिनेसर सोलमा, चक्री पंचम जाणुं ॥ कुंथुनाथ चक्री छठा, अरनाथ वखाणुं ॥ ए त्रणे चक्री सही, देखी आणंदु ॥ संयम लेइ मुगतें गया, नित्य उठी वंदुं ॥ २ ॥ शांति जिनेसर केवली, बेठा धर्म प्रकाशे ॥ दान शीयल तप भावना, नर सोहे अभ्यासे ॥ एह वचन जिनजी तणां, जिणे हियडे धरिया ॥ सुणतां समकित निर्मळ, दीसे केवक वरिया॥३॥ समेत

शिखर गिरि उपरे, लहने अणमण कीधुं॥ काउसग्ग मुद्राये रह्या, तिणे मुगतिज लीधु ॥ गरुड यक्ष समरु सदा देवी निर्वाणी ॥ भविक जीव तुमे सांभलो, रिखमदासनी वाणी ॥४॥ (इति)

॥ श्री नेमनाथ जिन स्तुति ॥

॥ गिरनार विभूषण, निर्दूषण सुखकार ॥ श्री नेमि जिनेसर, अलवेसर आधार ॥ प्रभु भक्ति पूरे, दुःख चूरे निरधार ॥ नहुं भाव धरो, राजिमती भरतार ॥ १ ॥ वैमानीक प्रभु दश, भुवनाधीश वर वीश॥ ज्योतिषी पति दोय, व्यंतर पति बत्रीश ॥ इय चउसठि इंद्र, पूज्या जिन चोवीश ॥ ते जिननी आणा, शिरवहु निशदीश॥ २ ॥ त्रिभुवन जिनरंजन, भानडन जिन वाणी॥ सिंहासन बेसी, उपदेशी त्रिन आणी नेह माहे पत्रानी, जीवदया गुणे खाणी ॥ ते पाली आगमी, वरीये शिव पटराणी ॥ ३ ॥ संघ

सान्निध्य कारी, जयकारी वरदाई ।। शासन रख-वाली, विघन हरे अंबाई ॥ बावीशमा जिननी, सेवा करो चित्त लाई ।। बुध प्रीतिविजय कहे, सुख संपद में पाई ॥ ४ ॥ (इति)

।। श्री पार्श्वनाथजीनी स्तुति ।।

।। प्रणमुं नित्य पास चिंतामणि, सोहे तस सप्त फणामणि ॥ तस महिमा मही मांहेज घणी, सुप्रसन्न सदा मुझ जगत धणी ॥ १ ॥ वंदुं हु अतीत अनागता, वीश विहरमान चारे शाश्वता ॥ संपई जिनवर सवि वंदीयं, मनमोहन देखी आणंदीये ॥ २ ॥ भरपूरें गाजे मेहलो, सांभळतां अधिक स्नेहलो॥ एहवो आगम जिनवर भांखियो, सहु गणधर मलि परकाशियो ॥ ३ ॥ श्री पास चरण सेवो सदा, जहथी लहियें सुख संपदा ॥ दया कुशल कहे सो भगवई, संघ विघन हरो पउमावइ ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनी स्तुति ॥

॥ गधारे महावीर जिणंदा, जेने सेवे सुर नर इंदा, दीठे परमानदा । चैत्र शुद तेरश दिन जाया, छपन दिक कुमरी गुण गाया, हरख धरी हुल्राया ॥ त्रीश वरस पाळी घरवास, मागशर वद दशमी व्रत जास, निचरे मन उछास । ए जिन सेवो हितकर जाणी, एहथी ल्हीए शिव पटराणी, पुण्य तणी ए खाणी ॥ १ ॥ ऋषभ जिनेश्वर तेर भव सार, चद्र प्रभु भव आठ उदार, शांति कुमर भव बार। मुनिसुव्रत ने नेम कुमार, ते जिनना नव नव भव सार, दश भव पार्श्वकुमार ॥ सत्तावीश भव वीरना कहीए, सत्तर जिनना त्रण त्रण ल्हीए, जिन वचने सद्दहीए। चोवीश जिननो एह विचार, एहथी ल्हीए भवनो पार, नमता जय जयकार ॥ २ ॥ वैशाख

शुद् दशमी लही नाण, सिंहासन बेठा वर्धमान, उपदेश दे प्रधान। अग्नि खुणे हवे पर्षदा सुणीए, साध्वी वैमानिक स्त्री गणीए, मुनिवर त्याहीज भणीए॥ व्यंतर ज्योतिषी भुवनपति सार, एहने नैऋत खुणे अधिकार, वायव्य खुणे एहनी नार॥ इशाने शोभे नर नार, वैमानिक सुर पर्षदा वार, सुणे जिन वाणी उदार॥३॥ चक्रेश्वरी अजिता दुरितारि, काली महाकाली मनोहरी, अच्युता संता सारी। ज्वाला सुतारका अशोका, श्रीवत्सा वरचंडा माया, विजयांकुशी सुखदाया॥ पन्नत्ति निर्वाणी अच्युता धरणी, वैरोट्या दत्ता गंधारी अघहरणी, अंबा पउमा सुखकरणी। सिद्धायिका शासन रखवाळी, कनकविजय बुध आनंदकारी, जसविजय जयकारी॥ ४॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथजीनी लावणी ॥

॥ तुं अकलंकी अरुप स्वरुपी, परमानंद पद

तुं पाई ॥ तुं शंकर ब्रह्मा जगदीश्वर, नितराग तु नीर माई ॥ १ ॥ अनोपम रुप देखी तुझ रीझे, सुरनर नारी के वृंदा ॥ नमो निरंजन फणीपत सेवीत, पास गोडीचा सुखकंदा ॥ २ ॥ काने कुंडल शिर छत्र नीराजे, चक्षु टीका नीरधारी ॥ अष्ट बीजोरु हाथ सोहीए, तुम वंदे सहु नरनारी ॥ ३ ॥ जळ आवी प्रभु नाके अटीआ, आसन कप्या नीरधारी ॥ नाग *नागणी छत्र थेर शीर, जळ नरमाव्या नीर धारी ॥ ४ ॥ रूपविजय कहे सुणो सेवी ल्गनणी, एसी शोभा बहु सारी ॥ मातपिता बाधव सहु साथे, संजम ल्यावा नीरधारी ॥ ५ ॥ (इति)

---

*आमां ' करिये धरियता सेन्जया सार एकला नागने स्थानके दिगंबरना मत्त प्रमाणे नाग अने नागणी बाम बे लख्या जणाय छे पण वास्तविक जोता एक नागज छ '

श्री रत्नाकर पच्चीशीना

गुजराती अनुवादना काव्यो.

(हरिगीत छंदनी चाल उपर)

मंदिर छो मुक्तितणी मांगल्य क्रिडाना प्रभु ।
ने इन्द्र नर ने देवना सेवा करे तारी विभु ॥
सर्वज्ञ छो स्वामी वळी शिरदार अतिशय सर्वना ।
घणुं जीव तुं घणु जीव तुं भंडार ज्ञान कळा तणा ॥ १ ॥



त्रण जगतना आधार ने अवतार हे करुणा तणा ।
वळी वैद्य हे दुर्वार आ संसारनां दुःखो तणा ॥
वीतराग वल्लभ विश्वना तुज पास अरजी उच्चरुं ॥
जाणो छतां पण कही अने आ हृदय हुं खाली करुं ॥ २



शुं बाळको मावाप पासे बाळक्रिडा नव करे ।
ने मुखमांथी जेम आवे तेम शुं नव उच्चरे ॥
तेमज तमारी पास तारक आज भोळा भावथी ।
जेवुं बन्युं तेवुं कहुं तेमां कशुं खोटुं नथी ॥ ३ ॥

में दान तो दीधु नहि ने शियळ पण पाळ्यु नहि ।
तपथी दमी काया नहि शुभ भाव पण भाव्यो नहि ॥
ए चार भेदे धर्ममांथी काइ पण प्रभु नव कर्यु ।
म्हारु भ्रमण भवसागरे निष्फळ गयु! निष्फळ गयु ॥४



हु क्रोध अग्निथी बळ्यो वळी लोभ सर्प डस्यो मने
गळ्यो मान रुपी अजगरे हु केम करी ध्यावु तने ? ॥
मन मारु माया जाळमा मोहन ! महा मुंझाय छे, ।
चडी चार चोरो हाथमा चेतन घणो चगदाय छे ॥५



में परभवे के आ भवे पण हित काइ कर्यु नहि ।
तेथी करी संसारनां सुख अल्प पण पाम्यो नहि ॥
जन्मो अमारा जिनजी ! भव पूर्ण करवाने थया ।
आवेल बाजी हाथमां अज्ञानथी हारी गया ॥ ६ ॥



अमृत झरे तुज मुखरुपी चन्द्रथी तो पण प्रभु !
भीजाय नहि मुज मन अरेरे ! शु करु हु तो विभु ॥
पत्थरथकी पण कठण मारु मन खरे ! क्यांथी द्रवे ।
मर्कट समा आ मन थकी हु तो प्रभु ! हार्यो हवे ॥७॥

भमता महा भवसागरे पाम्यो पसाए आपना ।
जे ज्ञान दर्शन चरणरुपी रत्न त्रय दुष्कर घणां ॥
ते पण गया परमादना वशथी प्रभु ! कहुं छुं खरुं ।
कोनी कने किरतार ! आ पोकार हुं जइने करुं ? ॥८॥



ठगवा विभु आ विश्वने वैराग्यनां रंगो धर्यां ।
ने धर्मना उपदेश रंजन लोकने करवा कर्या ॥
विद्या भण्यो हु वाद माटे केटली कथनी कहुं ?
साधु थइने ब्हारथी दांभिक अंदरथी रहुं ॥ ९ ॥



मे मुखने मेलु कर्युं दोषो पराया गाइने ।
ने नेत्रने निंदित कर्या परनारीमा लपटाइने ॥
वळी चित्तने दोषित कर्युं चिंती नठारुं परतणुं ।
हे नाथ ! मारुं शुं थशे ? चालाक थइ चुक्यो घणुं॥१०



करे काळजाने कतल पीडा कामनी बीहामणी ।
ए विषयमां बनी अंध हुं विडंबना पाम्यो घणी ॥
ते पण प्रकाश्युं आज लावी लाज आप तणी कने ।
जाणो सहु तेथी कहुं कर माफ मारा वांकने ॥११॥

नवकार मंत्र विनाश कीधो अन्य मंत्रो जाणीने ।
कुशास्त्रना वाक्यो वडे हणी आगमोनी वाणीने ॥
कुदेवनी संगतथकी कर्मो नकामा आचर्यां ।
मति भ्रमथकी रत्नो गुमावी काच कटका में ग्रह्या ॥१२॥



आवेल दृष्टि मार्गमां मूकी महावीर आपने ।
में मूढधिये हृदयमां ध्याया मदनना चापने ॥
नेत्रबाणो ने पयोधर नाभी ने सुंदर कटी ।
शणगार सुंदरीओ तणा छटकेल थइ जोया अति ॥१३



मृगनयणी सम नारीतणां मुखचंद्र नीरखवा वती ।
मुज मन विषे जे रंग लाग्यो अल्प पण गूढो अति ॥
ते श्रुतरूप समुद्रमां धोया छतां जातो नथी ।
तेनुं कहो कारण तमे बचुं केम हुं आ पापथी ॥१४॥



सुंदर नथी आ शरीर के समुदाय गुणतणो नथी ।
उत्तम विलास कलातणो देदीप्यमान प्रभा नथी ॥
प्रभुता नथी तो पण प्रभु अभिमानथी अक्कड फरुं ।
चोपट चार गतितणी संसारमां खेल्या करुं ॥१५॥

आयुष्य घटतुं जाय तोपण पापबुद्धि नव घटे।
आशा जीवननी जाय पण विषयाभिलाषा नव मटे॥
औषध विषे करुं यत्न पण हुं धर्मने तो नव गणुं।
बनी मोहमां मस्तान हुं पाया विनानां घर चणुं॥ १६



आत्मा नथी परभव नथी वळी पुण्य पाप कशुं नथी।
मिथ्यात्विनी कटुवाणी में धरी कान पीधी स्वादथी॥
रवी सम हता ज्ञाने करी प्रभु आपश्री तो पण अरे!
दीवो लइ कुवे पडयो धिक्कार छे मुजने खरे॥१७॥



में चित्तथी नहि देवनी के पात्रनी पूजा चही।
ने श्रावको के साधुओनो धर्म पण पाळ्यो नहि॥
पाम्यो प्रभु नरभव छतां रणमां रड्या जेवु थयुं।
धोबी तणा कुत्ता समुं मम जीवन सहु एळे गयुं॥१८



हुं कामधेनु कल्पतरु चिंतामणिना प्यारमां।
खोटां छतां झंख्यो घणुं बनी लुब्ध आ संसारमां॥
जे प्रगट सुख देनार त्हारो धर्म ते सेव्यो नहि।
मुज मूर्ख भावोने निहाळी नाथ कर करुणा कंइ॥१९

मैं भोग सारा चिंतव्या ते रोग सम चिंत्या नहि ।
आगमन इच्छ्युं धनतणुं पण मृत्युने प्रीछ्युं नहि ॥
नहि चिंतव्युं मैं नर्क कारागृह मर्मा छे नारीओ ।
मधुबिंदुनी आशामहीं भय मात्र हुं भूली गयो ॥२०॥



हुं शुद्ध आचारोवडे साधु हृदयमां नव रह्या ।
कर्या काम पर उपकारना यश पण उपार्जन नव कर्यो ॥
वळी तीर्थना उद्धार आदि कोइ कार्यो नव कर्या ।
फोगट अरे ! आ लक्ष चोराशी तणा फेरा फर्या ॥२१॥



गुरुवाणीमां वैराग्य केरो रंग लाग्यो नहि अने ।
दुर्जनतणां वाक्यो महीं शांति मळे क्यांथी मने ? ॥
तरुं केम हुं संसार आ अध्यात्म तो छे नहि जरी ।
तूटेल तळीयानो घडो जळथी भराये केम करी ? ॥२२



में परभवे नथी पुण्य कर्युं ने नथी करतो हजी ॥
तो आवता भवमां कहो क्यांथी थशे ? हे नाथजी ! ॥
भूत भावी ने सांप्रत त्रणे भव नाथ ! हुं हारी गयो ॥
स्वामी त्रिशंकु जेम हुं आकाशमां लटकी रह्यो ॥२३

अथवा नकामुं आप पासे नाथ शुं बकवुं घणुं ? ।
हे देवताना पूज्य ! आ चारित्र मुज पोता तणुं ॥
जाणो स्वरुप त्रण लोकनु तो म्हारु शुं मात्र आ ? ।
ज्यां क्रोडनो हिसाब नहि त्यां पाइनी तो वात क्यां ? २४



त्हाराथी न समर्थ अन्य दीननो उद्धारनारो प्रभु ।
म्हाराथी नहि अन्यपात्र जगमां जोता जडे हे विभु !॥
मुक्ति मंगळस्थान ! तोय मुजने इच्छा न लक्ष्मी तणी ।
आपो सम्यगरत्न श्याम जीवने तो तृप्ति थाये घणी ॥२५



श्री रत्नाकर पंचविंशतिका

(हिन्दी भाषानुवाद) (हरीगीत छंदकी चाल.)

शुभ केलिके आनंदके धनके मनोहर धाम हो,
नरनाथसे सुरनाथसे पूजित चरण गत काम हो ॥
सर्वज्ञ हो, सर्वोच्च हो, सबसे सदा संसार में,
प्रज्ञा कलाके सिंधु हो, आदर्श हो आचार में ॥१॥

संसार-दुःखके वैद्य हो, त्रैलोक्यके आधार हो,
जय श्रीश ! रत्नाकर प्रभो, अनुपम कृपा अवतार हो
गतराग ! है विज्ञप्ति मेरी मुग्धकी सुन लीजिए,
क्योंकि प्रभो ! तुम विज्ञ हो, मुझको अभय वर दीजिए



माता पिता के सामने बोली सुना कर तोतली,
करता नहीं क्या अज्ञ बालक बाल्य-वश लीलावली ?
अपने हृदय के हाल को त्यों ही यथोचित रीति से-
मैं कह रहा हूँ, आपके आगे विनयसे प्रीति से ॥ २ ॥



मैंने नहीं जग में कभी कुछ दान दीनों को दिया,
मैं सच्चरित भी हूँ नहीं, मैंने नहीं तप भी किया॥
शुभ भावना भी हुई अब तक न इस संसार में,
मैं घूमता हूँ व्यर्थ ही भ्रम से भवोदधि-धार में॥३॥



क्रोधाग्नि से मैं रातदिन हा ! जल रहा हूँ हे प्रभो,
मैं लोभ नामक साँप से काटा गया हूँ हे प्रभो ॥
अभिमान के खल ग्राह से अज्ञानवश मैं ग्रस्त हूँ,
किस भाँति हों स्मृत आप, माया जाल में मैं व्यस्त हूँ

लोकेश ! पर-हित भी नहीं मैंने किया इसलोक में,
सुख-लेश भी फिर क्यों मुझे हो, झींखता हूँ शोक में।
जग में हमारे से नरों का जन्म हो बस व्यर्थ है,
मानो जिनेश्वर ! वह भवों की पूर्णता के अर्थ है ॥६॥



प्रभु ! आपने निज मुख सुधा का दान यद्यपि दे दिया,
यह ठीक है, पर चित्त ने उसका न कुछ भी फल लिया।
आनन्द-रस में डूब कर सद्वृत्त वह होता नहीं,
है वज्र सा मेरा हृदय, कारण बड़ा बस है यही ॥७॥



रत्नत्रयी दुष्प्राप्य है प्रभु से उसे मैंने लिया,
बहुकाल तक बहु बार जब जग का भ्रमण मैंने किया।
हा खो गया वह भी विवश मैं नींद आलस के रहा,
अब बोलिए उसके लिए रोऊँ प्रभो! किसके यहाँ?।८।



संसार ठगने के लिए वैराग्य को धारण किया,
जग को रिझाने के लिए उपदेश धर्मों का दिया ॥
झगड़ा मचाने के लिए मम जीभ पर विद्या बसी,
निर्लज्ज हो कितनी उड़ाऊँ हे प्रभो ! अपनी हँसी ॥९॥

पर दोष को कह कर सदा मेरा वदन दूषित हुआ,
लख कर पराई नारियों को हा नयन दूषित हुआ।
मन भी मलिन है सोच कर पर की बुराई हे प्रभो,
किस भाँति होगी लोक में मेरी भलाई हे प्रभो॥१०॥



मैंने बढ़ाई निज विवशता हो अवस्था के वशी,
भक्षक रतीश्वर से हुई उत्पन्न जो दुख-राक्षसी॥
हा! आपके सम्मुख उसे अति लाज से प्रकटित किया,
सर्वज्ञ हो सब जानते स्वयमेव संसृति की क्रिया ?११



विधि के वचन को अन्य वचनों से हटा मैंने दिया,
सत्शास्त्र वाक्यों को कुशास्त्रों से दबा मैंने दिया।
दुःसंग से दुष्कर्म-कर्ता जान लेना तू मुझे,
लेकिन हा! इस कारण मतिभ्रम मान लेना तू मुझे॥१२॥



हा नष्ट किया मैंने प्रभो! प्रत्यक्ष पाकर आपको,
अज्ञान वश मैंने किया फिर देखिए किस पाप को।
वामाङ्गियों के कुच कटाक्षों पर सदा मरता रहा,
उनके विलासों के हृदय में ध्यान को धरता रहा॥१३

लख कर युवतियों के मनोहर नेत्र मुख जो रस मिला।
इस हेतु उनके प्रेम में मम दौड़ कर मानस मिला।
सच्छास्त्र के सिद्धान्त-निधि सुन भी डरा है वह नहीं
संसार-तारक! जान पड़ता कुछ मुझे कारण नहीं १४



मुझ में न अपने अंग के सौन्दर्य्य का आभास है।
मुझ में न गुण-गण है विमल, न कलाकलाप-विलास है॥
प्रभुता न मुझ में स्वप्न की भी चमकती है देखिए,
तो भी भरा हूं गर्व से मैं मूढ़ हो किस के लिए॥१५॥



हा नित्य घटती आयु है पर पाप मति घटती नहीं,
आई बुढ़ौती पर विषय से कामना हटती नहीं॥
मैं यत्न करता हूं दवा में, धर्म में करता नहीं,
दुर्मोह महिमा से ग्रसित हूं नाथ! बच सकता नहीं १६



अघ, पुण्य को, जग, आत्म को मैंने कभी माना नही
हा आप आगे हैं खड़े दिननाथ से यद्यपि यही॥
तो भी खलों के वाक्य को मैंने सुना कानो वृथा,
धिक्कार मुझको है, गया मम जन्म ही मानो वृथा॥१७॥

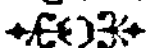
सत्पात्र-पूजन देव-पूजन कुछ नहीं मैंने किया,
मुनिधर्म श्रावकधर्म का भी सविधि पालन नहि किया
नर-जन्म पाकर भी वृथा ही म उसे खोता रहा,
मानो अकेला घोरवन म व्यर्थ ही रोता रहा ॥१८॥



प्रत्यक्ष फलवत् जैन मत म प्रीति मेरी थी नहीं
जिननाथ ! मेरी देखिये है मूढता भारी यही ॥
हा ! काम धुक कल्पद्रुमादिक के मनो रहते हुए,
हमने गँवाया जन्मको धिक्कार दुख सहते हुए ॥१९॥



मैंने न रोका रोग दुख सभोग सुख देखा किया,
मन में न माना मृत्यु भय धन लाभ ही लेखा किया।
हा ! मैं अधम युवतीजनों के ध्यान को करता रहा ॥
पर नरक कारागार से कुछ भी नहीं डरता रहा २०



सद् वृत्ति से मन म न मैंने साधुता हा साधिता,
उपकार करके कीर्ति भी मैंने नहीं कुछ अर्जिता ।
तीर्थ व्रतादिक स्वप्न में भी घर सका मैं कुछ नहीं,
नर-जन्म पारस तुल्य निज मैंने गँवाया व्यर्थ ही २१

शास्त्रोक्त-विधि वैराग्य भी करना मुझे आता नहीं,
खल-वाक्य भी गत क्रोध हो सहना मुझे आता नहीं॥
अध्यात्म-विद्या है न मुझ में है न कोई सत्कला
फिर देव ! कैसे यह भवोदधि पार होवेगा भला २२



सत्कर्म पहले जन्म में मैंने किया कोई नहीं ॥
आशा न, है जन्मान्य में उसको करूंगा मैं कहीं,
इस भांति का यदि हूं जिनेश्वर! क्यों न मुझको कष्ट हों
संसार मे फिर जन्म तीनों क्यों न मेरे नष्ट हों ? २३



हे पूज्य ! अपने चरित को बहुभांति गाऊँ क्या वृथा
कुछ भी नही तुझ से छिपी है पापमय मेरी कथा ।
क्योंकि त्रिजग के रूप हो तुम ईश हो सर्वज्ञ हो
पथ के प्रदर्शक हो तुम्ही मम चित्त के मर्मज्ञ हो २४



दीनोद्धारक धीर आप सा अन्य नही है,
कृपा-पात्र भी नाथ । न मुझसा अपर कहीं है ।
तो भी मांगू नहीं धान्य धन कभी भुल कर,
अर्हन ! केवल बोधिरत्न होवे मंगल कर ॥ २५ ॥
श्री रत्नाकर-गुण-गान यह दुरित दुःख सब के हरे ।
बस एक यही है प्रार्थना मंगल मय जगको करे ॥

[समाप्त]